

ॐ

ॐ श्री गणेशाय नमः

एक देवो महाबुद्धि सर्व अग्नौ गजनाथका

सर्व सिद्ध करो देवा गोप्त्री पुत्र विनायकः

श्री गणेशाय नमः

शुक्ल पत्रे सप्तमी कथनार्थे श्रीगणेशाय नमः प्रीतिपूर्वक

ओम् गणेशाय नमः २०००

मेघ

से मृत्यु हो जाती है। व्यवस्थापन ही शांति, शान्ति, शान्ति
स्वभाव का होता है। व्यवस्थापन ही वास्तविक जीवन
मध्यमाल में इसे वास्तविक जीवन बनाना पड़ता है। व्यवस्थापन
पूर्णतः इसी बात में, इसी बात में ही वास्तविक जीवन बनाना पड़ता है।
काशी बनाना ही होता है, इसमें वास्तविक जीवन बनाना पड़ता है।
जाती है। ऐसा व्यवस्थापन ही वास्तविक जीवन बनाना पड़ता है।
पर कौन व्यवस्थापन ही वास्तविक जीवन बनाना पड़ता है।
वैयक्तिकता ही वास्तविक जीवन बनाना पड़ता है।
का वास्तविक जीवन बनाना पड़ता है।
में यह वास्तविक जीवन बनाना पड़ता है।
धनी एवं उच्च पाठ्य प्राप्त करता है। व्यवस्थापन ही वास्तविक जीवन
योग ही है। वास्तविक जीवन बनाना पड़ता है।
ही है। वास्तविक जीवन बनाना पड़ता है।
सो वास्तविक जीवन बनाना पड़ता है।
में यह वास्तविक जीवन बनाना पड़ता है।
इसके वास्तविक जीवन बनाना पड़ता है।
के प्रत्येक ही वास्तविक जीवन बनाना पड़ता है।
ही वास्तविक जीवन बनाना पड़ता है।
को रानी ही वास्तविक जीवन बनाना पड़ता है।
जीवन का वास्तविक जीवन बनाना पड़ता है।
तथा वास्तविक जीवन बनाना पड़ता है।
परंतु वास्तविक जीवन बनाना पड़ता है।
ही वास्तविक जीवन बनाना पड़ता है।
में वास्तविक जीवन बनाना पड़ता है।
ही वास्तविक जीवन बनाना पड़ता है।
में वास्तविक जीवन बनाना पड़ता है।

दर्शन (प्रश्न 10)

विद्यमान वाद, वास्तविकता का अर्थ, वास्तविकता का अर्थ

५ वृष ५
 दुपट्ट पाती रहती हैं तथा साधना करने की होती है
 बलीकन में विशेष प्रगति नहीं कर पाती। मृत्तों को अपेक्षा
 कन्था रहती है तथा स्त्री है जो स्थलकाय होते हैं,
 लम्बी रोटी की गेठें बनाते हैं। यार्थ को प्रदर्शन में ज्यादा
 विश्वास रखते हैं। तबत से का कुछ और होते हैं जो कथों
 के बताते कुछ और हैं। ऐसे स्थानों को भी वृष्टि को मानते हैं।
 समय की नाकाल को पहचान नहीं पाते, इससे रोहता से
 तब यार्थ ही बड़े रहते हैं। पत्थर चरण को खनो पड़ती
 है। शीघ्र ने पछि लेने की प्रगति इनमें होती ही नहीं। पुनः
 सा भी आवेकार होत जाये तो दुःस्पर्धा करने में नहीं
 नहीं हिंसा करते, पुनः स्वतन्त्र को उठावा नदानी से चक्करा एवं
 स्वार्थी भावित। इसी कारण से किताबों में निरन्तर न कलाओं
 में कभी न बाला है ना इनका। आस्था इसका संगीत का सोच
 नहीं देना, वास्तवस्था में ही इसकी स्त्री को सुखियों का सोच
 सिर एवं उदर पीडा के रोगों में यार्थ करने परेशानों को बीच
 होती है। वृद्धा रोग या कृच्छा रोग भी संगीत है। जलवात
 भी देखने को मिलता है। ऐसा व्यक्त समझे से मृत्यु का
 वरणाकरता है। जन्तु का रजनीत पट होता है, ऐसा प्रत्येक कार्य
 जो लोगों को असमर्थ लगता है। आहार को रोगों को डालता है
 परंतु सिर भी यह अपने आँकना भला नहीं कर सकता। इससे
 के कार्य यह आसानी से सम्पन्न कर सकता है, पर इसके
 स्वार्थ के कार्य आत्म यार्थ। अधुर है यह रहते हैं। आयु भी
 इससे निरंतर चल करता है। शत्रु पक्ष प्रवृत्त होता है
 तथा इसमें प्रत्येक कार्य में रुकावट डालता है। नौकरी में
 यह जातक दीर्घ प्रगति करता है। प्रसन्नो को रोहता है
 लला है, नेत्रों की ममता को भी जीवन को डालता है।
 सफल जीवन सादा परंतु आत्मिक स्वार्थ भी नहीं बिर
 आता है। आय की अपेक्षा धन आँकना, मोती, अमूल्य
 किताबें मिलती हैं।

वृष

निम्न फलदेश वृष लग्न की स्त्रियों के लिए: वृष लग्न में जन्म लेने वाली स्त्री चेतयशीला, सुन्दर, राक्षसोत्पन्ने वाली, आज्ञाकारी, संवत्सरांशु, ये युवत लक्षण पति प्रिया होती हैं। **द्वितीयः मन्त्रः**

जातक दृष्टि, मनमौजी, देशी से काम करने वाला, मनबूत दिल, आश्रम पसंद, छोटी-बूढ़ों पर विचार, हर कार्य में झगडा हो जाता, बीमार हो जाये तो देशी से अच्छा, झगडों में दिक्कतें, माता-पिता का सुख अच्छा, यदि पहली संतान लड़की हो तो मर जाती है, प्रौढावस्था संकल, अश्वि शत्रु, मृत्यु विदेश या पानी में। ५-२८, ३७, ४७ वें वर्ष कष्ट। महत्त्वपूर्ण वर्ष २८, ३६, ४५, ५२, ६०, ७५, ८० आयु वर्ष ८०।

৬২৬৭

सुन्दर, सुमह, सुशील पत्नीपुत्रव्यापी आपेक्षा पुत्र संतान अर्थात्
बाल्यावस्था में जन्मागत, स्वयं वर्ष के बाद मृत्युवर्ष पूर्ण
युग-संख्य ४६, ४७ वर्ष से हो जाता है। मानव शरीर, मनुष्य के लाल
मेरुदण्डिका के साधारण लम्बाई ५ फीट १० इंच, शरीर का वजन १५०
किलोग्राम एवं अक्षर्य को आगे से अनुकूल लम्बी होता है किन्तु एक
वेला सी-होता है। बालक की रक्तनी अर्धकारी एवं गर्मी होती है। इसी
समय की लाल रक्त लम्बी मृत्युवर्ष ५०, ५१, ५२, ५३, ५४, ५५, ५६, ५७, ५८, ५९, ६०, ६१, ६२, ६३, ६४, ६५, ६६, ६७, ६८, ६९, ७०, ७१, ७२, ७३, ७४, ७५, ७६, ७७, ७८, ७९, ८०, ८१, ८२, ८३, ८४, ८५, ८६, ८७, ८८, ८९, ९०, ९१, ९२, ९३, ९४, ९५, ९६, ९७, ९८, ९९, १००, १०१, १०२, १०३, १०४, १०५, १०६, १०७, १०८, १०९, ११०, १११, ११२, ११३, ११४, ११५, ११६, ११७, ११८, ११९, १२०, १२१, १२२, १२३, १२४, १२५, १२६, १२७, १२८, १२९, १३०, १३१, १३२, १३३, १३४, १३५, १३६, १३७, १३८, १३९, १४०, १४१, १४२, १४३, १४४, १४५, १४६, १४७, १४८, १४९, १५०, १५१, १५२, १५३, १५४, १५५, १५६, १५७, १५८, १५९, १६०, १६१, १६२, १६३, १६४, १६५, १६६, १६७, १६८, १६९, १७०, १७१, १७२, १७३, १७४, १७५, १७६, १७७, १७८, १७९, १८०, १८१, १८२, १८३, १८४, १८५, १८६, १८७, १८८, १८९, १९०, १९१, १९२, १९३, १९४, १९५, १९६, १९७, १९८, १९९, २००, २०१, २०२, २०३, २०४, २०५, २०६, २०७, २०८, २०९, २१०, २११, २१२, २१३, २१४, २१५, २१६, २१७, २१८, २१९, २२०, २२१, २२२, २२३, २२४, २२५, २२६, २२७, २२८, २२९, २३०, २३१, २३२, २३३, २३४, २३५, २३६, २३७, २३८, २३९, २४०, २४१, २४२, २४३, २४४, २४५, २४६, २४७, २४८, २४९, २५०, २५१, २५२, २५३, २५४, २५५, २५६, २५७, २५८, २५९, २६०, २६१, २६२, २६३, २६४, २६५, २६६, २६७, २६८, २६९, २७०, २७१, २७२, २७३, २७४, २७५, २७६, २७७, २७८, २७९, २८०, २८१, २८२, २८३, २८४, २८५, २८६, २८७, २८८, २८९, २९०, २९१, २९२, २९३, २९४, २९५, २९६, २९७, २९८, २९९, ३००, ३०१, ३०२, ३०३, ३०४, ३०५, ३०६, ३०७, ३०८, ३०९, ३१०, ३११, ३१२, ३१३, ३१४, ३१५, ३१६, ३१७, ३१८, ३१९, ३२०, ३२१, ३२२, ३२३, ३२४, ३२५, ३२६, ३२७, ३२८, ३२९, ३३०, ३३१, ३३२, ३३३, ३३४, ३३५, ३३६, ३३७, ३३८, ३३९, ३४०, ३४१, ३४२, ३४३, ३४४, ३४५, ३४६, ३४७, ३४८, ३४९, ३५०, ३५१, ३५२, ३५३, ३५४, ३५५, ३५६, ३५७, ३५८, ३५९, ३६०, ३६१, ३६२, ३६३, ३६४, ३६५, ३६६, ३६७, ३६८, ३६९, ३७०, ३७१, ३७२, ३७३, ३७४, ३७५, ३७६, ३७७, ३७८, ३७९, ३८०, ३८१, ३८२, ३८३, ३८४, ३८५, ३८६, ३८७, ३८८, ३८९, ३९०, ३९१, ३९२, ३९३, ३९४, ३९५, ३९६, ३९७, ३९८, ३९९, ४००, ४०१, ४०२, ४०३, ४०४, ४०५, ४०६, ४०७, ४०८, ४०९, ४१०, ४११, ४१२, ४१३, ४१४, ४१५, ४१६, ४१७, ४१८, ४१९, ४२०, ४२१, ४२२, ४२३, ४२४, ४२५, ४२६, ४२७, ४२८, ४२९, ४३०, ४३१, ४३२, ४३३, ४३४, ४३५, ४३६, ४३७, ४३८, ४३९, ४४०, ४४१, ४४२, ४४३, ४४४, ४४५, ४४६, ४४७, ४४८, ४४९, ४५०, ४५१, ४५२, ४५३, ४५४, ४५५, ४५६, ४५७, ४५८, ४५९, ४६०, ४६१, ४६२, ४६३, ४६४, ४६५, ४६६, ४६७, ४६८, ४६९, ४७०, ४७१, ४७२, ४७३, ४७४, ४७५, ४७६, ४७७, ४७८, ४७९, ४८०, ४८१, ४८२, ४८३, ४८४, ४८५, ४८६, ४८७, ४८८, ४८९, ४९०, ४९१, ४९२, ४९३, ४९४, ४९५, ४९६, ४९७, ४९८, ४९९, ५००, ५०१, ५०२, ५०३, ५०४, ५०५, ५०६, ५०७, ५०८, ५०९, ५१०, ५११, ५१२, ५१३, ५१४, ५१५, ५१६, ५१७, ५१८, ५१९, ५२०, ५२१, ५२२, ५२३, ५२४, ५२५, ५२६, ५२७, ५२८, ५२९, ५३०, ५३१, ५३२, ५३३, ५३४, ५३५, ५३६, ५३७, ५३८, ५३९, ५४०, ५४१, ५४२, ५४३, ५४४, ५४५,

मिथुन

आय बढ़ने का हरेसंगमिप्रयासवारीत है तथा आयवा एक
अधिकारस्त्रोत बनाता है इसकी विलयावस्थापर आधारित
होती है तथा पैसा दावाउपनिर्वाहनाइसे नही कावमका
मिलता है जीवनके हर केवर्ष नाला सो उरकी आर्थिक
होका होने लगती है ऐसा हयकसे हाफिओ आयवाकतह
निम्नरे में सेवते है नयेधरदगां है। कइमाइ एकवकी
है तथा लात से जोरंगरे कोइ हरोफलाहा नही हाता निवला
सौम्य, सही जेउधि लेन की हावावा पिब गोवयातु केवर्षत
यहजावका प्रयत्न कर लेगी है। हासिकसाधुवशील व्यवस्था
है। जीवन के उर मरवाकरी वाक इके सुत है। है तथाक
हो ही उके विचारन का वागीला लेकरने कवा सो त को प्रवप
है सिमा जेक प्रेय को है। हासिक को सवमान मेंलागा है ऐसा
हयकसे सपात प्रचारक है सोतसमन आयवा करवका तो
हो। हयकेवर्ष का लात जोववा की आयिक है यत सुवका है
हयकसे दरे दरेना सो कु उकता है, यहापे इके जीवन का ववे
मैत्रीतथा हयलेयो में सांवालेन का अवसर मिलता है, है
गो यहासयवाइ एक सवतत्र होता है यहापर हावप
मैत्रीताखवा है, आय का जोगिन सतो उकता है सोरमे
जीवन में कोई उकराए सो प्रमा जाते है जब आयको स्थ
अवाडला हो जाती है प्रयत्न हावत वमन एवं साहसी है
साहस का कारण है जपरीत परिस्थितियों को भी अपन
होनुकूल बनीलेने में समर्थ होता है। किजुलखयी से
दूर रहता है तथा धार्मिक क्षेत्र में लयीला होते हुए भी
समाजवाक हयो का पालन करता है। **कुपुली विपिने**
है। हासिक हा
है। **मिथुन** लग्न वाला जातक गौरवपनिर्वाहका
था ऊंचा कदा जावका अस्थिर किंतु मौलिक विचारों से प्रभावित
बुद्धि, परिवर्तनशील प्रकृति, मित्रों की हर प्रजाति को इ हा

मिथुन

मन चिंतित, मित्रों की प्रीति करे पर मित्रों से लाभ नहीं, स्त्री-क्लेश रहता
है। दो स्त्रियों से संयोग, औरतों के झगड़े से तंग, गुप्त शत्रु, लिखने पढ़ने
का शौकीन, पैतृक सम्पत्ति प्राप्त होती है। वर्ष कष्ट ३, ५, ८, ११, १८, २०, २८,
४५ वें। महत्त्वपूर्ण वर्ष १५, २१, ३५, ४०, ४५, ५०, ५५, ६०, ७४, ८२। आयु
वर्ष ८६। (कालका का पांचांग)

[illegible]

[illegible]

सिंह राशि स्वामी की सुन्दर एवं आकर्षक मुखाकृति, गोल चेहरा, मध्यम कदम, मजबूत मंगल शुभ हो तो जातक बुद्धिमान, संवेदनशील, न्यायप्रिय, दयालु स्वभाव, परिवर्तनशील

सिंह

सिंह लग्न का फलपेक्ष

सिंह लग्न में जन्म लेने वाला व्यक्ति को भी, जन्म विचार को रखने वाला होता है। कठिनाता से गुस्सा होता है और आने पर एकदम शांत भी नहीं होता। संगीत कलादि में रुचि रखने वाला और भ्रमण का शौकान, शरीर आकर्षक, गोल और चौड़ा मुँह, ऊँचा, रुखा, रुखा ललाटे चंद्रमा नीचे के भाग की अपेक्षा ऊपर का भाग अधिक आकर्षक एक सुन्दर, स्थिति को अनुकूल करता है, हाफसरी का प्राप्ति का तन, अल्प विश्वास की भावना, पक्ष, कम के भी भ्रम को कटरे में लाकर विचार रास्ता अपनाता है। भ्रम को जोर देकर जयन्त्रा रखता है, धन संपत्ति हो जाने के बाद अलग से भी हो जाता है, इसके जवाब में भ्रम हो है तथा जिनसे एकान्तरवत् उद्वेग होता है उसे पूरा करने में प्रयत्न करता है। यो शरायात्मा का एक शक्ति का प्रकृत का होते है। यो किसी की भी बात का वरन्त करवाता करता है, फलस्वरूप जीवन में कहनाइयाँ व खतरों भी उठाने पड़ते हैं। इनका एक ही पुत्र होता है। जन्मक भ्रमण कार्य में तत्पर, कई मित्र बनाने वाला, विनयशील, भाव पितृ का प्रिय, व्यसनशील तथा प्रख्यात होता है। जन्मक अधिक दृष्टि से कम सम्पन्न, परिश्रम से धनार्जन करते हैं। जीवन के प्रारंभिक वर्षों में इन्हें धनभाव देखना पड़ता है। गर्म स्वभाव व तुल्य निर्णय न लेने की अवस्था में कई बार ऐसे कार्य कर बैठते हैं, जिन्हें इन्हें आर्थिक हानि उठानी पड़ती है। व्यापार से लाभ, रेडीमेट कपड़े की दुकान या फैसी स्टोर से विशेष लाभ। जन्मक की संगति निम्न पैदों के लोगों के साथ हो मन अस्थिर होता है तथा वे किसी भी प्रश्न पर तुल्य निर्णय नहीं ले पाता। बहुत अधिक बोलता है तथा बोलते हुए देश का पत्र का भी ध्यान नहीं रहता। अनुचित कार्य करने के बाद पछताना भी इसका स्वभाव, पारिवारिक जीवन में मतभेद

सिंह

१६

१

जातक हर साधारण परिेश्वरानी में रहता है, उसका मन शान्त
नहीं रहता एवं कई केज्जियायों का सामना करता है। शत्रुओं से
जातक को बुरा लगता है, क्योंकि इस पर हवी रहते हैं। इसके
प्रत्येक कार्य में जो कुछ भी करे, सब ठीक ठीक चलता है, एवं फिर कार्य
संपूर्ण की ओर जातक को ले जाते हैं। जातक में जातकानन्दभागी र
होता है, जो जातक को हर काम में सफल करता है, भला भाग्य इस जातक की
ओर ~~जातक को ले जाता है~~ है। जातक को हर काम में सफल करता है, भला भाग्य इस जातक की
सकता है। जातक को हर काम में सफल करता है, भला भाग्य इस जातक की
जातक को हर काम में सफल करता है, भला भाग्य इस जातक की
में सफलता प्राप्त करता है। जातक को हर काम में सफल करता है, भला भाग्य इस जातक की
आत्मिक शक्ति, जो जातक को हर काम में सफल करता है, भला भाग्य इस जातक की
मित्रों से जातक को हर काम में सफल करता है, भला भाग्य इस जातक की
संघर्षशील जातक को हर काम में सफल करता है, भला भाग्य इस जातक की
उत्तरे जातक को हर काम में सफल करता है, भला भाग्य इस जातक की
में रुचि, जो जातक को हर काम में सफल करता है, भला भाग्य इस जातक की
इसका जातक को हर काम में सफल करता है, भला भाग्य इस जातक की
उसे भाग्य से जातक को हर काम में सफल करता है, भला भाग्य इस जातक की
देती है। जातक को हर काम में सफल करता है, भला भाग्य इस जातक की
ज्वर की अधिकता से भी मृत्यु संभव है। एक सखी बीमारियाँ
जीवन में कई बार, जलघात भी संभव है। जातक को हर काम में सफल करता है, भला भाग्य इस जातक की
शरीर छोड़ता है। जातक को हर काम में सफल करता है, भला भाग्य इस जातक की
जो भी कार्य करता है सोच-विचारक करता है। जातक को हर काम में सफल करता है, भला भाग्य इस जातक की
चौपायों को खरीदने या बेचने से, कृषि से, मकान से जातक को
लाभ। जातक को हर काम में सफल करता है, भला भाग्य इस जातक की
नहीं, जातक को हर काम में सफल करता है, भला भाग्य इस जातक की
जातक को हर काम में सफल करता है, भला भाग्य इस जातक की
जातक को हर काम में सफल करता है, भला भाग्य इस जातक की
जातक को हर काम में सफल करता है, भला भाग्य इस जातक की
जातक को हर काम में सफल करता है, भला भाग्य इस जातक की

सिंह
चिंतनीय १४२ वें वर्ष के बाद आय के अन्यास्तोत्र बज जाते

बड़े भाई का सुख साधारण होशियार, समर्थ को प्रस्ताव देने वाला साहस, दूर का प्रेम का बंधन का धनी, क्रोधी, व्यापार में विविक्त स्थितियों में भी प्रसन्नता, विश्वासघात के कारण भारी होने, रोना सामान्य लोगों की कल्पना के कुछ नहीं प्राप्त होता हीन प्रगति, स्वभाव अस्थिर किर्तुत साहस एवं निरंतरता के क्षेत्र में कार्य में (व्यापक की रूप में)

[illegible]

माता का मुख पूर्व किंतु गृह द्वार दक्षिण की ओर
माता ने लाल वस्त्र, स्वर्ण आभूषण पहने हों, प्रसव पूर्व खेड़ा या
कोसला भोजन किया हो। उपसूतिका ऐं इ या पू, नया मैकानल
की पीठ पर चिन्ह, दीर्घ स्वर में रोया हो। आध्या के इ, पू, र, रं
इ, इ, रं के वर्ष कष्ट (प्रसूति लग्न विचार से) प्रादुर्भाव

नीच पादादेश सिंह लग्न की स्त्रियों के लिए सिंह लग्न की
स्त्री दुषित शरीर वाली, कफ प्रवृत्त-कालह, प्रिय, कठोर स्वभाव की

सिंह
कैतु परोपकारिणी होती है। (स्त्री जातक विज्ञान से) २१
जातक पुरुषार्थी, मजबूत हृदय, धर्माल्म, दानी, भरोसेमंद, अहंकारी,
मामूली बातों से नफरत, बड़े-शु कार्य करने में तैयार, सम्पत्ति झटकायम,
झगड़ों से परेशान। पहली संतान मृत, पैदलने और खाने वाली चीजों
के व्यापार से लाभ, संतान सुख कम, दो स्त्रियों से संयोग। आयु के ५, १०, २०, ३०, ४०,
वर्ष कष्ट। महत्त्वपूर्ण वर्ष १६, २४, ३२, ४२, ५५, ७०, ८५। आयु वर्ष ८३
(वर्ष ४२ कि शांति)।

तन्मया

सामान्य, बुरे चित्त वाला, बुरे कार्यों या गन्दी राजनीति में डाल दिया।
सास्य वृत्ति प्राणम ऐसा व्यक्ति चतुर एवं समय को पहचानने वाला,
राज्यों से लाभ निकलवाने में प्रवीण, चरित्र की दृष्टि से शिथिल,
अधिकारियों से शत्रुता तथा परस्परवाद-विवाद होता रहता है। बचपन
में उसे जलघात होती है। तन्मया व्यक्ति वर्ष में जल में डूबने का खतरा
रहता है। ऐसा व्यक्ति नौसेना तथा मछान पर काम करने वाला
हो सकता है। तन्मया व्यक्ति को सही मार्ग की कल्पना होती है, धन पुण्य
में सहज आसपास इसकी स्त्री का वर्ण उज्ज्वल, तोमही कहा जा
सकता, फिर भी वह सदस्य जगली सकरी दाह-मर्मा स्त्री अत्यंत
चंचल होती है, चापल्यता इसका प्रभाव होता है। समय के अनुसार
के अनुसार उत्तर देने में लज्जित नहीं होता। तन्मया में यह सम्पत्ति
हो सकती है अथवा रत्नों का इसे विशेष शौक होता है। तन्मया
पुत्रों को उत्पन्न करने वाली ऐसी स्त्री भाग्यवती कहो जा सकती है।
जातक अधिकतर सामान्य रूप से बुरे रहस्य के कारण उत्पन्न होता है,
नींद में चलने या बकने की बीमारी वाला होता है। कई बार वह
पिछली घटनाओं को फिर से देखने लगता है। आर्थिक दृष्टि से
सम्पन्न ऐसा जातक विदेश में मरता है। जातक के लक्षणों एवं वृद्धि
होता है। समय की गंभीरता को पहचानता है। स्त्रियों के प्रति बहुत बात
कहता है। जीवन के 27वें वर्ष से भाग्योदय तथा पूर्ण भाग्योदय
36वें वर्ष से समझना चाहिए। बाल्यावस्था कष्टों से गुजरने के
लिए जातक को भटकना पड़ता है फिर भी जातक पूर्ण शक्ति प्राप्ति की
दिशा में निरंतर अग्रसर रहता है। जीवन के उत्तरार्ध में इसके पास
खुशियां होती हैं, धन के द्वारा रक्षा अर्जित करता है। इसे सजावट,
भोग-विभोग समय वस्तुओं की ओर विशेष रुचि होती है। फैन्सी स्टोर
के व्यापार से जातक लाभ उठा सकता है। नौकरी में जातक शनैः-
1. बढ़ाते करता है। कृषि या भूमि सम्बन्धी कार्यों में भी लाभ। अपने से
बड़े की सेवा-श्रुति की आज्ञा करता है तथा आदर करता है। नौकरी
में अपने-प्राप्त्यर्थ में अधिक लाभ। समाज, कुल में सम्मान प्राप्त करता

कन्या
है। भावुक होने के कारण परिवार वालों पर खर्च करता रहता है।
एवं मित्रता की कसौटी पर खरा उतरता है। लालची भोजन प्राप्त
सकता है। ऐसा व्यक्ति दुर्क निश्चयी एवं धुन का पानका होता है।
जातक कोमल प्रकृति का, शान्त, शिष्ट, मधुरभाषी, संघर्ष से दूर
एकांतप्रिय। व्यापार की अपेक्षा नौकरी में लाभ। कई व्यसन रहते हैं।
सुचारुपूर्ण ढंग से रहता, अत्यंत धर्मिक, ईश्वर का पालना
इनकी। स्वर्ग का द्वार सजल गते के कालात्मक जीवन का द्वार।
स्थानों से दूर रहता, अपने से ऊंचा, अपने को छोटी के साथ रहता।
धार्मिक कार्यों में बड़ा चक्कर लगाता, जल शिष्ट, धर्म का कहे
से पालन। जीवन का आनंद स्वर्ग का द्वार।
सिद्धि लक्ष्यों से दूर रहता है। ऐसे व्यक्ति समाजिक क्षेत्र में सफल
(कूपडली दर्पण से)

इसका जीवन शिष्ट, शान्त, शिष्ट, मधुरभाषी, संघर्ष से दूर
है। स्वर्ग का द्वार सजल गते के कालात्मक जीवन का द्वार।
सुन्दर वसा कर्षक आँखें, लंबी नाक, चौड़ी लेज, गौरवारीक, प्रिय
हृदय में सहयोग, नर्म स्वभाव, लज्जाशील, प्रकृति, नीती के
अनुकूल कार्य करने वाले, कल्पनाशील, सूक्ष्मदर्शी, संवेदनशील,
शान्तचित्त, एकांतप्रिय, कठिन परिस्थितियों में स्वयं को ठगने में
समर्थ, एकेही समय में अनेक विषयों में परागत होने की चेष्टा के
संगीतकला साहित्य में रुचि, एक विषय पर चिरकाल तक स्थिर
नहीं हो पाते। बुध-शुक्र का शुभ योग होने से विद्वान्, संगीत, कला
अध्यापन, लेखन, क्रय-विक्रय आदि की ओर झुकाव तथा सफलता
प्राप्त होगी। धन की अपेक्षा बौद्धिक कार्यों में रुचि। बुद्धिमान, तीव्र
स्मरण शक्ति, अच्युतशील प्रकृति। शुभ नम पन्ना। भाव्योन्नति का
वर्ष २५, ३२, ३५, ३६, ४२ वें होंगे। (पाँचों दिवाकर से)

जन्म समय बालक के सुन्दर नेत्र, गौरवर्ण, अल्प बाल,
गोल चेहरा सौम्य पाँव, चंचल बलि, कण्ठ व जंघा मोहक होंगे।

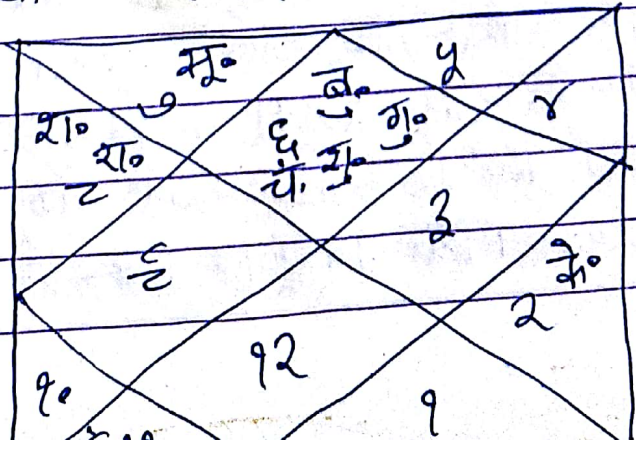
कन्या

का मुख दक्षिण की ओर, उपसूत्रिकाएं ४ या ५, माता के लाल रंग प्राचीन वस्त्र, कसैला सहित भोजन, पिता घर से बाहर, बालक जन्म शब्द में रोया हो। आयु के २, ४, १५, २३, २५, ३५, ४५, ५६ वें वर्ष विशेष कष्ट। (प्रसूति लग्न विचार से)

निम्न पालादेश कन्या लग्न की स्त्रियों के लिए:- कन्या लग्न होती ऐसी स्त्री जितेन्द्रिय, सौभाग्यवती, धर्मचरण करने वाली, समस्त कलाओं में निपुण, सुखी तथा स्वर्ण धन युक्त होती है। (स्त्री जातक विज्ञान से)

जातक ज्ञानी, पश्चिमात्मा, भले-बुरे को पहचानने वाला, परिक्रामी, शांत स्वभाव, शुद्ध चित्त, गुणवान, धैर्यवान, निर्मोह, प्रेम करने लो दिलो जान से, छोटों से सख्ती का व्यवहार, जिस काम को करना चाहे या जिस पर बिगड़ जाए उसे नहीं छोड़ता। इतिहास, नाटक, चित्रकारी, बाग-बगीचे सम्बन्धी काम करने वाला, सभा में चतुर व मिष्टभाषी, परिक्रामी पर धन इकट्ठा नहीं होता, बाल्यावस्था में बीमार, प्रौढावस्था सुखी, व्यापार व बैंक दिक्कतों से लाभ, परदेश में भाग्योदय, संबंधियों व पड़ोसियों से द्वेष, पहली संतान पुत्रावस्था में नष्ट, दो संयोग। आयु के ३, ५, १०, १२, ३२, ४६ वें वर्ष कष्ट।

महत्त्वपूर्ण वर्ष १६, २१, ३५, ४१, ५०, ६२, ७०, ७५। आयु वर्ष ६०। (कालकर वि पांचांग) नोट, प्रस्तुत कुण्डली एक कुलंडनी की है जिसे पूर्व जन्म का पूरा हाल मालूम था, दस वर्ष की अवस्था में ही वह गुरु से गुरु विषय पर चर्चा प्रवचन दे सकती थी, दस वर्ष की आयु में गायत्री मंत्र याद हो गया। पंचम भाव कल्पना तथा स्मरशक्ति का भाव है, इस पर शनि की राशि मकर तथा शनिकी दृष्टि भी है, गुरु की दृष्टि है जो उच्च बुध के साथ बैठा है। शनि शनिका संयोग, शनिकी दृष्टि ने पूर्व जन्म की बातें याद दिलाईं। क्लृप्तान गुरु ने पांडित्य दिया, लग्न में गुरु, चन्द्र के योग ने प्रसिद्धि दिलाई।



तुला लग्न का फलदैश

५

तुला लग्न में जन्म लेने वाला व्यक्ति आदर्श भावना-प्रधान, शीघ्र निर्णय लेने वाला, अपने प्रभुत्व से दूसरों को मित्र बनाने वाला, रचनात्मक कार्यों में तत्पर, खुलता हुआ गौरा रंग, न अधिक ठेठना न अधिक लम्बा कद, कफ प्रधान प्रकृति, चतुर, सदा मुस्कुराते रहने वाले, चौड़ा चेहरा, तीखी और सुन्दर आँखें, चौड़ी छाती, सुन्दर आकृति, योग्य, कार्यदक्ष, सफल, सामने वाले मुँह की थाह पा लेता है तथा अवसरानुसार अपने आप को ढालने में प्रवीण। न्याय, दया, क्षमा, शान्ति, अनशासन की ओर झुकाव। कल्पना शक्ति प्रबल, साधन सही होने पर भी लक्ष्य सदा ऊँचा, राजनीतिक क्षेत्र में सफलता अधिक का भरोसा है। डाँवाडोल नौकरी की अपेक्षा व्यापार में लाभ। प्रकृतिक प्रधान, जीवन में मित्रों, संबंधियों से भी घनिष्ठ व्यवहार की योजनाओं में धन लगाना इनके लिए हानिकारक। लघु उद्योगों में लाभ। जातक शारीरिक दृष्टि से स्वस्थ, सुंदर, बनावत। चेहरा सुंदर, उन्नत ललाट। नौकरी से भाग्योदय, व्यापार हितकर नहीं। जातक पुलिस या मिलिटरी में उच्च पद प्राप्त कर सकता है। बागवानी या बगीचों का स्वामी। नौकरी भी वनस्पति से संबंधित। मित्रों का सहयोग प्राप्त करता है। पत्नी से मतभेद, संतान से जातक को लाभ। जातक स्थिर चित्त वाला होता है, ऊपर से शान्त दिखाई देने पर भी मन में हलचल मची रहती है। गम्भीरता इनका प्रधान गुण है। व्यक्ति व्यर्थ का असत्य भाषण नहीं करेगा। फोपकार करने में प्रसन्नता अनुभव करेगा। प्रसिद्धि भी ऐसे जातकों को शीघ्र मिलती है। कष्ट सहने में माहिर, भयंकर विपत्तियों में भी झिंझकें। संतान एवं विद्या सुख गेष्ट। पुत्रों से सगाडा होता है तथा व्यापारिक में भी व्यय होता है। स्त्री से कम बनती है तथा जातक जीवन में रिक्ता अनुभव करता है। जातक की पत्नी को भी

तुला

होती है। बात-2 पर हठ करना, कठना, धर्म अशान्ति फैलाना
इसका स्वभाव होता है। यद्यपि ऐसी स्त्री गहराई से सोचने का
होसला रखती है फिर भी स्व के स्वार्थ से ऊपर नहीं उठ पाती।
आभूषणों से लगाव अत्यधिक होता है। वैवाहिक जीवन मधुर
होता है। जातक को अंतिम दिनों में कफ की बीमारी हो जाती है।
बलगम के सड़ने या गलने से मृत्यु हो जाती है। अग्नि में दुष्पदों
संघर्ष करते या चतुष्पादों के सीमों से घायल होकर भी मृत्यु
संभव है। व्यक्ति इस सात्विक सरल, धार्मिक कार्यों में रुचि
लेने वाला, धर्म के मामले में कट्टर न होकर सहिष्णु। सदी-
रुद्यों एवं पाखंड का विरोधी। गरीबों के प्रति दया, स्वर्ग वर्ग
के भावपूर्ण, कार्य करता है। इसका स्वभाव तथा जीवन के प्रत्येक
मृग को व्यापार के दृष्टिकोण से देखता है। मध्यकाल में आर्थिक
स्थिति बहुत ऊँची नौकरी पर इसकी आज्ञा चलती है तथा
अपने सम्मान को बनाए रखता है। उच्च विचार, सद्गुणी, शिक्षित
कला-निपुण ऐसा व्यक्ति लक्ष्य प्राप्त कर लेता है। धार्मिक कार्यों
में रुचि। व्यापार लगाना, कुआ खुदवाना आदि कार्य जिनसे गरीबों
का हित हो सके करता है। पाप कार्यों से दूर। अनीतियुक्ति स्वीकार
नहीं करता। माता पिता का आदर करने वाला ऐसा जातक कर्म,
न्याय, धर्म में विश्वास रखता है। वरिष्ठ वृत्ति वाला व्यक्ति।
प्रत्येक कार्य को करने से पहले सोचेगा कि इस कार्य से मुझे
लाभ है या नहीं? नौकरी में उन्नति के अवसर कम, व्यापार में
जातक खूब चमकेगा और धनवान बनेगा। इसका स्वभाव
मृदु होता है तथा सभी प्रकार के लोगों से सभ्यतापूर्ण ढंग
से पेश आता है। रहन सहन सादा होते हुए भी सुचारुपूर्ण। व्यर्थ
का व्यय नहीं करता तथा आनंद प्रमोद को जीवन में महत्व
नहीं देता। जन्म के बल पर उन्नति। जातक फल व्यापारी,
तुरन्त निपट लेने की अक्षमता प्रमत्ता होती है। अथ केन्द्र
स्त्रोत्र छूटता है। फिजूल खर्ची ये करते नहीं। न खुद व्यय

तुला २६
पालते हैं न बच्चों को इस ओर प्रेरित करते हैं। साविकता २५
जीवन का ध्येय, मुकदमेबानी के कारण कई बार कठिनाइयों
का सामना परशु पर विजय प्राप्त करते हैं। जीवन में आकस्मिक
खर्चे आ जाते हैं। जैनसे आर्थिक स्थिति दुगमना जाती है फिर
भी ये अपने आप पर नियन्त्रण रखते हैं। धार्मिक कृतियों का ये
कटु रता से पालन करते हैं। (कुण्डली दर्पण से)

जातक का श्वेत व सुन्दर वर्ण, मध्यम अथवा लम्बा कद,
सौम्य एवं हंसमुख प्रकृति। जातक न्याय प्रिय, हंसमुख व्यवहार-
शील, नीति के अनुसार कार्य करने में कुशल, ईमानदार, मिलनसार,
नर-मित्र बनाने में कुशल, सौंदर्यानुभूति विशेष होगी।
संगीत, कला, नाट्य की ओर झुकाव। रहन सहन का ठगरईस
एवं प्रभावपूर्ण। जातक पर संगीत का प्रभाव जलदी होगा।
चन्द्र शुक्र शुभ हो तो मानसिक, कल्पना शक्ति प्रबल, परंतु
मन की केन्द्रीय शक्ति बहुत देर तक नहीं रहती। जब तक किसी
कार्य में लगा रहे तब तक दिलोजान और मजबूत हृदय से करें,
परन्तु अपने विचार व योजना में परिवर्तन करने में भी शीघ्र तैयार
हो जाएगा। जातक को देश विदेश में अनेक स्थानों पर भ्रमण करने
के मौके प्राप्त होते हैं। बुद्धिमान, तर्कशील, सावधान, सतर्क रहने
वाला मध्यस्तता एवं न्याय करने में कुशल, विपरीत थोले के
प्रति झुकाव। शुभ नग हीरा या मोती। जीवन के २५, २७, ३२, ३३,
३५ वें वर्ष भाग्योत्कारक (पांचांग दिवाकर से)

गौरवर्ण, कुछ लम्बा चेहरा, काले नेत्र, बड़ी नाक, थोड़े बाल,
चंचल, तीव्र बुद्धि, दुबला कृश शरीर, माता का मुख पश्चिम की
ओर, कषाय भोजन किया हो, बालक दीर्घ स्वर में रोया। आयु
के ३, ४, ८, १५, २७, ३१ वें वर्ष विशेष कष्ट (प्रसूतिलग्न विचार से)
निम्न फलदेश तुला लगन की स्त्रियों के लिए - तुला लगन हो तो

^{तुला}
ऐसी स्त्री मतिमन्द, गर्विष्ठ प्रमा रहित, प्रीतिहीन तथा पर, नीति
होती है। (स्त्री जातक विज्ञान से)

जातकर्म स्वभाव, मीठा बोलने वाला, नीति में निपुण, हर
बात में सहायक, संगति का असर बहुत जल्दी, प्रण में क्रोध युक्त व शान्त,
नई बात को जानने और बनाने में तथा जटिल सम्बन्धी कामों में निपुण,
मानसिक शक्ति प्रबल पर बहुत देर तक नहीं। जब तक कार्य करता है
दिलो जान व मनबूत हृदय से, पर विचार बदलने में भी इतना तैयार
अनेक भाई-बहिन। पिता ही इसकी मुसीबत का कारण, संतान-सुखी,
वर्ष ८, १५, १८, २३ कष्ट। महत्त्वपूर्ण वर्ष १८, २४, ४२, ५६, ६९। आयु वर्ष ६८
(कालदर्शक पांचोरा)

वृश्चिक लग्न का फालादेश

१५

इ। वृश्चिक लग्न में जन्म लेने वाले जातक पुरुष तत्व प्रधान होते हैं। तथा दूसरों को पीछे छोड़ने में आनन्द अनुभव करते हैं। अस्थिर प्रकृति, आकर्षक व्यक्तित्व, मँडिला कद, गठीला शरीर, विशाल मस्तिष्क, दीप्त ललाट, धिरे काले बाल, उभरी हुई ठोड़ी, चमकती आँखें होती हैं। इनका व्यक्तित्व सहज ही दूसरों को अपनी ओर आकर्षित कर लेता है। चुम्बकीय और सम्मोहक व्यक्तित्व का धनी ऐसा जातक लोकप्रिय होता है। प्रेम के क्षेत्र में अग्रणी, विपरीत लिंग के प्रति आकर्षण अनुभव करते हैं। अपनी भावनाओं पर नियन्त्रण नहीं रख पाते और बिना परीक्षा लिए दूसरों पर विश्वास कर लेते हैं। स्वार्थ सिद्ध होने तक दुश्मन को कंधे पर बिठाने से कभी नहीं हिचकिचाते, परन्तु कार्य के बाद उसे पैरों तले रौंदने में भी देर नहीं लगाते। राजनीति के क्षेत्र में पूर्णतः सफल स्वभाव उग्र, जरा सी विपरीत बात होने से भड़क उठते हैं। ज्ञान पहचान विस्तृत होती है तथा दुश्मनों तक से काम निकालवाने में चतुर। लेखन कार्य में सफल हो सकते हैं परन्तु शारीरिक झंझटों एवं आलस्य के कारण नित्य लेखन नहीं कर पाते। धन को संचय करने की कला नहीं इन्हें आती, फिर भी इनके पास धन का डभाव नहीं होता। हीन भावना प्रबल होने के कारण ईश्वर आराधना का दिखावा करते हैं। जातक धन के मामले में लापरवाह, साझेदारी या किसी के साथ व्यापार इनके लिए हानिकारक। सहयोगी इसे धोखा देगा। जीवन में कई बार धोखे खाते हैं। इन्हें चाहिए कि ये किसी भी कागज पर हस्ताक्षर करने से पहले सोच लें। यदि जातक नौकरी करता है तो उसे नौकरी में काफी उतार चढ़ाव देखने पड़ेंगे। २४, २७, २८, ३२, ३३, ३४, ३७, ४२, ४८, ५२, ५४, ५५, ५८ वीं वर्ष ग्रेष्ठ जातक का शारीरिक गठन सुन्दर, सुन्दर श्याम केश, उन्नत ललाट, गौर वर्ण, प्रभावपूर्ण चेहरा होता है। संतान की दृष्टि से

वृश्चिक

जातक सौभाग्यशाली, शत्रुओं में ख्याति तथा धार्मिक कार्यों में
अद्भुत रहता है। जातक स्त्री के मामले में सौभाग्यशाली, सुंदर एवं
शिक्षित पत्नी मिलती है। जातक को सुसुराल से धन प्राप्त होता है।
भाग्योदय विवाहोपरंत होता है। पारिवारिक जीवन सफल होता है।
पत्नी सुशील होती है। पत्नी जातक का जीवन बनाने में सहायक
आर्थिक दृष्टि से साधारण, आय की अपेक्षा व्यय अधिक। जातक
कामुक प्रकृति का होता है, ऐश-आराम में विश्वास रखता है। जातक
स्त्रियों में विशेष लोकप्रिय होता है। स्वभाव से जातक भावुक, हर
समय मुस्कुराहट बिखेरने वाला तथा सौम्याकृति का होता है।
संतान-सुख मध्यम रहता है तथा स्त्री के विचारों से मतभेद होने
रहने के कारण पारिवारिक कलह भी संभव होती है। वृद्धावस्था
सफल। जातक का स्वभाव दुष्टतापूर्ण होता है। अद्यपि वह
परिणामी होता है फिर भी चुंगली खाना, अफसरो के कान भरना
उसका स्वभाव होता है। जातक की स्त्री सुन्दर, गुणवान, नाक नोभ
तीखे और रूप पर गुमान करने वाली होती है। वार्तालाप करने में
मधुर एवं पटुभाषी होती है। कलादि में निपुण होती है। सिलाई
कसीदा, चित्रकला, नृत्य में उसकी रुचि होती है। उसे लितनये-श
व्यंजन बनाने का भी शौक होता है। ऐसी स्त्री भावुक, कामकेला
में प्रवीण, पतिवत्तभा होती है। जातक शत्रुओं से संघर्ष
करते हुए मारा जाता है। मृत्यु के समय ऐसे व्यक्ति को गुदरीग
था प्रमेह रोग भी संभव है। जातक भावुक, कल्पनाप्रिय होता
है। यह जातक सफल शिक्षक, प्रकाशक, लेखक, पत्रकार हो सकता
है। व्रतोलसव आदि में जातक गहरी रुचि लेता है। चाहते हुए भी
समाजिक रुढ़ियों को तोड़ नहीं सकता। बचपन में पेट सम्बन्धी
बीमारी संभव है। वायु प्रकोप जीवन भर बना रहता है।
चंचलता, तुरन्त निर्णय न लेने के कारण कई बार हा
लेता है। यह जातक जो भी कार्य करना चाहता है उसे जो
में अधिक समय लगा देता है। जीवन के मध्यकाल में

घटाव सहने पड़ते हैं तथा हानि भी हो जाती है। जातक अपने जीवन को सफल बनाने की भरसक कोशिश करता है। जातक को माता का अल्प सुख प्राप्त होता है, इसके साथ ही आजीविका के लिए उसे कठोर परिश्रम व संघर्ष करना पड़ता है। वाहन-सुख स्वल्प होता है तथा भूमि संबंधी कार्यों में जातक को लाभ नहीं होता। शिकार का यह शौकीन होता है तथा राजनीति पूर्ण जीवन बिताने में रुचि होती है। यह पूर्ण परिश्रमी होता है पर परिवार में इसे नहीं के बराबर सहायता मिलती है। जातक मेहनती होने के साथ दूरदर्शी। वह जो भी कार्य करता है खूब सोच-विचार कर करता है। राजनीतिक कार्यों में लाभ, तुरन्त निष्पत्ति लेने की शक्ति रखता है। ये आय बढ़ाने का भरसक प्रयत्न करते हैं। परिवार तथा भाईयों से जातक को लाभ नहीं होती, अपितु यह अपने परिवार का पूर्ण सहायक होता है। जीवन निर्वाह, जीवन की आवश्यकताएँ पूरी हो जाती हैं। जातक काम पर पूरा विश्वास रखते हैं तथा काम के बल पर प्रगति करते हैं। माता-पिता का बहुत कम सुख उन्हें मिल पाता है। इनका बचपन अत्यंत कष्टों एवं अभावों में बीतता है। ये अपना कार्य आप करते हैं। सभी प्रकार के लोगों से ये छुलकर मिलते हैं, जीवन में मित्रों से लाभ उठाते हैं। एक बार जो इनके सम्पर्क में आ जाए वह इनका हो जाता है। खर्च पर इनका नियन्त्रण नहीं रहता। यद्यपि आय के कई स्रोत इनके पास होते हैं, फिर भी इनकी आर्थिक स्थिति डाँवाडोल रहती है। सजावट, भव्यता, दिखावा आदि में ये विश्वास रखते हैं। उच्च स्तर के कपड़े पहनते हैं। जीवन में मनोरंजन कार्यों पर भी व्यय करते हैं। स्त्रियों के सम्पर्क से ये बदनाम भी हो जाते हैं। आँखें कमजोर होती हैं तथा ऐसे जातक व्यापार की अपेक्षा नौकरी में अधिक सफल होते हैं। धार्मिक कृत्यों में विश्वास रखते हैं। (कुण्डली दर्पण से)

वृश्चिक

जातक का सुन्दर मुख, परिक्लामी, अपने सामर्थ्य पर भरोसा करने वाला, धार्मिक प्रवृत्ति। मंगल शुभ हो तो उत्साही, उत्साही, परिक्लामी, साहसी, ईमानदार, स्पष्टवादी, परोपकारी, व्यवहार कुशल, कर्तव्यनिष्ठ, दृढ़ संकल्प शक्तिवाला, भाई-बंधु से कम सहायता प्राप्त, निजी पुरुषार्थ द्वारा ही आय। तनिक विरुद्ध बात हो जाने से शीघ्र उत्तेजित हो जाएंगे, परन्तु सच्चाई अथवा सुपात्रता की दृष्टि से सुयोग्य जन की सहायता करने में अपने स्वार्थ की भी बलि देने से पीछे नहीं हटेगा। जातक किसी कार्य को करने का निश्चय करता है तो उसे पूर्ण करता है। कैमिस्ट, इंजीनियर, वकील, पुलिस, अध्यापन, ज्योतिष, अनुसंधानकर्ता के क्षेत्र में सफलता। शुभ नग-मूंगा। शुभ रंग लाल, संतरी, हल्का पीला (PIAN) है। आयु के २४, २८, ३२, ३६, ४० वें वर्ष भाग्योन्नतिकारक। (पाँचों दिवाकरों से)

ऊँचा मस्तक, सौम्य प्रकृति, पुष्ट शरीर, ताम्रवर्ण, भूरे नेत्र, तेज स्वभाव, केश लम्बे। उपसूत्रिकाएं २४, ३६, ४८ का द्वार उत्तर की ओर, बालक की पीठ पर चिन्ह, माता ने लाल वस्त्र पहने हों, बालक टेर से रोया हो। आयु के २६, १६, २७, ५८ वें वर्ष विशेष कष्ट। (प्रसूति लग्न विचार से)

निम्न पलादेश वृश्चिक लग्न की स्त्रियों के लिए :- वृश्चिक लग्न हो तो ऐसी स्त्री सुन्दर, रूपवान, गुणवान, पुण्यशीला, पतिव्रता, सत्यवादिनी होती है। (स्त्री जातक विज्ञान से)

जातक अत्यंत ज्ञानी या अत्यंत मूर्ख, ईर्ष्या द्वेष अहंकार युक्त, बड़े-२ कार्य करने में देवता के समान, शूरवीर, लडाई में तत्पर, हेमकाम्य कार्य में अत्यंतता करने से बीमार, आत्मिक शक्ति बलवान वस्थापी। हर काम के रहस्य को जानकर उसकी कमजोरियाँ दूर करता है, अहंकार से समान प्रचंड प्रकृति, गंतारों जैसा व्यवहार, सत्यवक्ता, भयंकर हित, धन सम्बन्धी चिंता, मध्यावस्था में भाग्योदय, दूसरे देश की यात्रा करता है। ससुराल व कामकी कामों से लाभ, अचानक धन मिलने की संभावना, भाई

वृश्चिक

34

बहिन कम, पिता की एक ही संतान रह जाती है। संतान बहुत होने पर भी सुख नहीं, सम्बन्धियों का सहायक, एक से अधिक विवाह, गुप्त रोगी। आयु के २, ५, १०, १२, १८, २०, ३०, ३६ वर्ष कष्टा महत्त्वपूर्ण वर्ष १४, २०, २५, ३५, ३८, ४५, ५६, ६४ आयु वर्ष ८५ (कालयज्ञिक पाँचांग)

धनु लग्न का फालादेश

धनु लग्न में जन्म लेने वाला जातक अधिकांशतः दार्शनिक विचारों से धनी, ईश्वर में इनकी दृढ़ आस्था होती है। दूसरों पर तुल्य विश्वास कर लेते हैं। शारीरिक गठन सुन्दर और सजीला, गोल और आकर्षक चेहरा, श्याम पीत केश, पैनी और खिलती हुई आँखें, सम्मोहक मुस्कुराहट, शरीर साधारणतः स्थूल। निरन्तर परिश्रमरत ऐसे जातक वाणिक वृत्ति प्रधान होते हैं तथा प्रत्येक कार्य में अपना भला-बुरा पहले सोचते हैं। ऐसे जातक सात्विक वृत्ति प्रधान होते हैं। व्यर्थ का फैशन, दिखावा, अपव्यय से दूर रहते हैं। जीवन में सत्य, न्याय, ईमानदारी, दयालुता और स्वतंत्रता को महत्त्व देते हैं। जातक सामर्थ्यशाली होता है। ये लम्बे चौड़े प्लान बनाते हैं और उसमें सफलता भी प्राप्त करते हैं। नौकरी की अपेक्षा व्यापार या स्वतंत्र व्यवसाय इनके लिए हितकारी। जातक को चाहिए कि वे 'योजना आयोग' आदि में नौकरी करें जिसमें कल्पना और वास्तविकता का सुखद मिश्रण हो। खान, फत्तर का कार्य से भी थोड़ा लाभ उठा सकते हैं। जातक गम्भीर स्वभाव का होता है, भाइयों से उसे स्नेह मिलता है पर सहायता नहीं प्राप्त होती। समाज में उसका आदर होता है। नये विचारों का स्वागत करने वाला ऐसा जातक गायन, कलादि में रुचि रखने वाला होता है। जातक नौका-चालक या जहाज का कप्तान होता है। या जल से सम्बन्धित सरकारी नौकरी करता है। धीर-गम्भीर होने के साथ-2 जातक शिक्षित भी होता है तथा अपने सद्गुणों के कारण समाज में सम्मान प्राप्त करता है। जातक धनवान होता है। इसे अपने जीवन में पूर्ण सुखभोग की सामग्री उपलब्ध होती है। जातक धार्मिक होता है। जातक को पूर्ण जीवन सुखी कहा जा सकता है। जातक क्रोधी होने के साथ-2 विवेकहीन होता है। कई बार उतावली में ऐसे कार्य कर डालता है जिसके कारण आगे नुक़ान

जहाँना पडता है घर में पति पत्नी एक मत नहीं हो पाते और
 पुत्रों के विचारों से उसकी असमानता रहती है। ऐसे व्यक्तियों का
 जल अस्थिर रहता है तथा किसी भी प्रश्न पर ये तुरन्त निर्णय नहीं
 दे पाते। जातक की संतान विद्रोही होती है। उसके तथा उसकी पत्नी
 के विचारों में असमानता रहती है तथा वह दुखी हृदय धूमता रहता है।
 जातक की पत्नी सुशील एवं समझदार होती है यद्यपि वह सुन्दर
 नहीं कही जा सकती, फिर भी नाम नक्श उभरे और स्वच्छ होने
 के कारण आकर्षक अवश्य कही जा सकती है। जातक का ससुराल
 मध्यवर्ग का होता है। उच्च विचारों वाली ऐसी स्त्री जातक के लिए
 सौभाग्यशाली सिद्ध होती है। सुन्दर कपड़े पहनती है तथा अपने
 आप को सुंदर दिखाती है। सभी गुणों से युक्त ऐसी स्त्री सफल कही
 जा सकती है पर अतृप्त इच्छा रखते हुए ऐसी स्त्री कामकला में
 कठोर होती है। जातक जल में डूबने से मरता है या स्वमृह में
 शक्ति से मृत्यु लाभ करता है। जातक धर्म का विरोधी होता है।
 धार्मिक कट्टरता का विपक्षी यह जातक मानवधर्म में ही गढ़ा
 रखता है। धर्म के दुर्बल पक्ष पर बहस करना इसका स्वभाव होता
 है। भाग्य इसका साथ देता है, पर इसकी प्रत्येक कार्य-सिद्धि के
 बीच में व्याधान आता है। ऐसा व्यक्ति चाहते हुए भी अपने अधिक
 रियों को संतुष्ट नहीं कर पाता। जातक का समाज में सम्मान
 होता है। यह जातक कठोर परिश्रमी होता है। पूर्वद्वि की अपेक्षा
 उत्तरार्द्ध अधिक सफल, यात्रा इसका प्रिय विषय होता है। जातक
 स्वाभिमान, अपनी आन पर मर मिटने वाला होता है। चापलूसी
 इसे पसंद नहीं और दूसरों की हाँ में हाँ मिलाना यह बुरा समझता
 है। उदासीन वृत्ति से तथा नौकरी को गम्भीरता से न लेने के कारण
 इसकी प्रगति धीरे-धीरे होती है। नौकरी के अपेक्षा व्यापार अधिक
 लाभदायक। स्त्री से अनवना। यद्यपि यह धीरे-धीरे उच्च पद पर
 पहुँच जाता है, फिर भी उससे धन संचय नहीं होता। समाज
 के कार्यों की आलोचना करता है तथा कुल से इसे कोई लाभ नहीं

मिलता। जातक धीर, गम्भीर, अवसर की उचितानुचित को समझने वाला, नानुक मणों में अद्भुत प्रतिभा दिखाने वाला होता है। परिवार एवं स्वजन इसके सहायक होते हैं तथा उन्नति में वे सहयोग भी देते हैं। व्यक्ति धार्मिक कार्यों में विश्वास रखते हैं। व्यापार में की अपेक्षा नौकरी या स्वतंत्र कार्यों में प्रगति करते हैं। लेखन-प्रकाशन आदि में निश्चय ही चमकते हैं। बचपन सुखमय जीवन के १६वें वर्ष के बाद संघर्षशील क्षेत्र में प्रविष्ट होते हैं। यौवनावस्था पूर्णतः संघर्षशील। व्यापार में कई उतार-चढ़ाव देखने पड़ते हैं। नौकरी करने पर जातक की प्रगति शनैः-शनैः होती है। सिंगूलर खर्ची तथा व्यसनों से दूर रहते हैं। संयत जीवन जीना ही इनका ध्येय होता है। बाहरी स्थानों से इनका विशेष सम्बन्ध होता है तथा जीवन में कई बार तीर्थयात्रा करते हैं। (कुण्डली दर्पण से)

जाति का ऊँचा मस्तक, कान बड़े, लग्न भाग में क्रूर ग्रह होने की स्थिति में सिर मध्य अल्पबाल अथवा गंजा। गुरु-बुध की स्थिति शुभ हो तो सौम्य एवं शान्त, सरल स्वभाव, धार्मिक, उदार हृदय, परोपकारी, संवेदनशील, करुणा दयालु, दूसरों की धाह्य पालने वाला, बौद्धिक एवं मानसिक शक्ति प्रबल, उत्साही, ये शीघ्र निणय नहीं ले पाते। इन्हें क्रोध जल्दी नहीं आता एवं क्रोध आ जाए तो उतरता भी नहीं। पुरुषार्थी, साहसी, सुखों को प्राप्त करने वाला होता है। मंगल-गुरु शुभ हो तो उच्च व्यवसायिक सिद्धा का योग। शिक्षक, धर्म-प्रचारक, राजनीति, वैद्य डाक्टर, वकील, पुस्तकालय व्यवसाय में सफल। शुभ लग्न पुखराज। भाग्योदय वर्ष २३, ३३, ४३, ५३, ६३, ७३, ८३, ९३, १०३, ११३, १२३, १३३, १४३, १५३, १६३, १७३, १८३, १९३, २०३, २१३, २२३, २३३, २४३, २५३, २६३, २७३, २८३, २९३, ३०३, ३१३, ३२३, ३३३, ३४३, ३५३, ३६३, ३७३, ३८३, ३९३, ४०३, ४१३, ४२३, ४३३, ४४३, ४५३, ४६३, ४७३, ४८३, ४९३, ५०३, ५१३, ५२३, ५३३, ५४३, ५५३, ५६३, ५७३, ५८३, ५९३, ६०३, ६१३, ६२३, ६३३, ६४३, ६५३, ६६३, ६७३, ६८३, ६९३, ७०३, ७१३, ७२३, ७३३, ७४३, ७५३, ७६३, ७७३, ७८३, ७९३, ८०३, ८१३, ८२३, ८३३, ८४३, ८५३, ८६३, ८७३, ८८३, ८९३, ९०३, ९१३, ९२३, ९३३, ९४३, ९५३, ९६३, ९७३, ९८३, ९९३, १००३, १०१३, १०२३, १०३३, १०४३, १०५३, १०६३, १०७३, १०८३, १०९३, ११०३, १११३, ११२३, ११३३, ११४३, ११५३, ११६३, ११७३, ११८३, ११९३, १२०३, १२१३, १२२३, १२३३, १२४३, १२५३, १२६३, १२७३, १२८३, १२९३, १३०३, १३१३, १३२३, १३३३, १३४३, १३५३, १३६३, १३७३, १३८३, १३९३, १४०३, १४१३, १४२३, १४३३, १४४३, १४५३, १४६३, १४७३, १४८३, १४९३, १५०३, १५१३, १५२३, १५३३, १५४३, १५५३, १५६३, १५७३, १५८३, १५९३, १६०३, १६१३, १६२३, १६३३, १६४३, १६५३, १६६३, १६७३, १६८३, १६९३, १७०३, १७१३, १७२३, १७३३, १७४३, १७५३, १७६३, १७७३, १७८३, १७९३, १८०३, १८१३, १८२३, १८३३, १८४३, १८५३, १८६३, १८७३, १८८३, १८९३, १९०३, १९१३, १९२३, १९३३, १९४३, १९५३, १९६३, १९७३, १९८३, १९९३, २००३, २०१३, २०२३, २०३३, २०४३, २०५३, २०६३, २०७३, २०८३, २०९३, २१०३, २११३, २१२३, २१३३, २१४३, २१५३, २१६३, २१७३, २१८३, २१९३, २२०३, २२१३, २२२३, २२३३, २२४३, २२५३, २२६३, २२७३, २२८३, २२९३, २३०३, २३१३, २३२३, २३३३, २३४३, २३५३, २३६३, २३७३, २३८३, २३९३, २४०३, २४१३, २४२३, २४३३, २४४३, २४५३, २४६३, २४७३, २४८३, २४९३, २५०३, २५१३, २५२३, २५३३, २५४३, २५५३, २५६३, २५७३, २५८३, २५९३, २६०३, २६१३, २६२३, २६३३, २६४३, २६५३, २६६३, २६७३, २६८३, २६९३, २७०३, २७१३, २७२३, २७३३, २७४३, २७५३, २७६३, २७७३, २७८३, २७९३, २८०३, २८१३, २८२३, २८३३, २८४३, २८५३, २८६३, २८७३, २८८३, २८९३, २९०३, २९१३, २९२३, २९३३, २९४३, २९५३, २९६३, २९७३, २९८३, २९९३, ३००३, ३०१३, ३०२३, ३०३३, ३०४३, ३०५३, ३०६३, ३०७३, ३०८३, ३०९३, ३१०३, ३११३, ३१२३, ३१३३, ३१४३, ३१५३, ३१६३, ३१७३, ३१८३, ३१९३, ३२०३, ३२१३, ३२२३, ३२३३, ३२४३, ३२५३, ३२६३, ३२७३, ३२८३, ३२९३, ३३०३, ३३१३, ३३२३, ३३३३, ३३४३, ३३५३, ३३६३, ३३७३, ३३८३, ३३९३, ३४०३, ३४१३, ३४२३, ३४३३, ३४४३, ३४५३, ३४६३, ३४७३, ३४८३, ३४९३, ३५०३, ३५१३, ३५२३, ३५३३, ३५४३, ३५५३, ३५६३, ३५७३, ३५८३, ३५९३, ३६०३, ३६१३, ३६२३, ३६३३, ३६४३, ३६५३, ३६६३, ३६७३, ३६८३, ३६९३, ३७०३, ३७१३, ३७२३, ३७३३, ३७४३, ३७५३, ३७६३, ३७७३, ३७८३, ३७९३, ३८०३, ३८१३, ३८२३, ३८३३, ३८४३, ३८५३, ३८६३, ३८७३, ३८८३, ३८९३, ३९०३, ३९१३, ३९२३, ३९३३, ३९४३, ३९५३, ३९६३, ३९७३, ३९८३, ३९९३, ४००३, ४०१३, ४०२३, ४०३३, ४०४३, ४०५३,

जातक का रंग गौरा, ऊँचा भस्त्रक, बड़े नेत्र, माता का मुख पूर्व की ओर, पीले वस्त्र सहित चित्रित वस्त्र, पका हुआ भोजन किया हो, बालक की छाती पर चिन्ह, माता का मुख उत्तर पूर्व

और होगा। उपसृति का ऐं १ या ५, बालक दीर्घ स्वर से रोया हो। वर्ष के १, ३, १०, १८, २१, ३७, ४२ वें वर्ष कष्टकारी। (प्रसूति लग्न तिथि से)

गिम्न पालादेश धनु लग्न की स्त्रियों के लिए धनु लग्न की स्त्री उत्तम बुद्धि वाली, कठोर कर्म करने वाली, स्नेही, प्रेम से वश में होने वाली होती है। [स्त्री जातक विज्ञानी]

जातक की दो प्रकार की प्रकृति, नियमों का पालन या उल्लंघन करने में तत्पर, गुप्त रहस्यों का जानकार, विश्वासपात्र, दानी, सत्यवक्ता, निष्ठा मार्ग, दिमागी मज्जा। पहली अवस्था में पितृ सुख कम, पिता की विपत्ति के कारण भाग्योदय नहीं होता, कोई प्रकार की विद्या का ज्ञाता, स्वतंत्र रुचि, किसी पर विश्वास न करने वाला, शांत स्वभाव, परिश्रम से धन कमाता है, भाई कम, संबंधियों से प्रेम, संतान कम, दुश्मन अधिक, देवताओं व ब्राह्मणों का सेवक, यात्रा अधिक। आयु के ८, १२, १५, २८, ३८, ४० वें वर्ष कष्ट। महत्त्वपूर्ण वर्ष २०, २५, ३८, ४४, ६६, ७०, ७२। आयु वर्ष ७५ (कालदर्शक पाँचांग)

मकर लम्ब का पालादेश

मकर लम्ब के जातक रहस्यमय होते हैं तथा इसका कोई भी कार्य निश्चित नहीं होता, अपने उद्देश्यों के प्रति यह सचेत रहता है तथा ऊँची-२ योजनाएँ बनाने में सदा तैयार रहता है। लम्बा, ऊँचा, रक्तगौर वर्ण और बड़े केशों वाला यह जातक चपटी नाक, बड़ा सिर, पैनी आँखों का धनी होता है। शरीर से ये पतले और फुर्तिले होते हैं। इनका स्वभाव उग्र होता है, परन्तु जहाँ अपना पक्ष बलजोर पड़ता है वहाँ से नम्र भी हो जाते हैं। कमाते हैं पर पैसा इनके पास टिकता नहीं। दिखावे और शान-शौकत में ये अपव्यय कर डालते हैं। इनका दाम्पत्य जीवन मधुर नहीं होता। पति-पत्नी के विचारों में मतभेद बने रहते हैं। व्यापारिक कार्यों में इनकी रुचि होती है, पर उसमें ये सफल नहीं हो पाते। हीन भावना से ग्रस्त होते हैं, बहुत अधिक बोलते हैं। वाक्शक्ति पर इनका नियन्त्रण नहीं रहता। ये अच्छे अभिनेता होते हैं तथा मञ्च में कप बदलने में पारंगत होते हैं। स्वार्थ की भावना विशेष होती है। जातक अधिक दृष्टि से सम्पन्न, एक से अधिक आय के स्तोत्र। पत्रकारिता, लेखन, प्रकाशन, व्यापार, राजनीति कार्यों में भी ये भाग लेकर द्रव्य संचय कर सकते हैं। इन जातकों को भाइयों तथा सम्बन्धियों से विशेष लाभ नहीं मिलता। विश्वास करना इनके लिए हानिकारक सिद्ध होता है। साझेदारी लाभप्रदा जीवन के पूर्वार्द्ध की अपेक्षा उत्तरार्द्ध आर्थिक दृष्टि से सफल। जातक धनवान होता है। संतान से उसे विशेष स्नेह मिलता है। वृद्धावस्था में उसे पुत्रों से पूर्ण सहायता प्राप्त होती है। धार्मिक कार्यों में रुचि रखने वाला, अतिथियों का आदर करने वाला ऐसा जातक सभी को प्रसन्न रखने वाला होता है। जातक के घर में जानवर बँधे रहते हैं। इस प्रकार के जातक की या तो सगाई होकर छूट जाती है, या जीवन में एक से अधिक स्त्रियाँ

मकर
क साथ सम्बन्ध। जीवन सुखी, शान्तमय तथा विविध भोगों का
आत्मिक भोग करता है। व्यापार, कृषिकार्यों में जातक को लाभ
परिवारिक जीवन सुखी, वृद्धावस्था में पूर्ण संतान सुखी। जातक
की वजह से जो लोग अपने अपने विचारों में जातीयता
के आधार पर विभक्त हो जाते हैं, वे जातक के अनुसार
संलग्न होते हैं।

मनुष्य सहज ही धन प्राप्त कर डालता है। द्रव्योपाजन में
वह विशेष संलग्न रहता है। कहीं बार लाटरी या जुए से भी धन लाभ
हो जाता है। ऐसी व्यक्ति की स्त्री सुंदर, सौभाग्यशाली होती है पर
सारी धिंता इसे भोगनी पड़ती है। संतान या तो देरी से होती है अथवा
संतान से उसे त्रास मिलती है। संतान दुर्बल या मलिन स्वभाव की
होती है। ऐसे व्यक्ति मभावान, धैर्यवान, सहिष्णु, समझदार होते
हैं। जातक का गृहस्थ जीवन कलहपूर्ण होता है। नौकरी की अपेक्षा
व्यापार की ओर झुकाव अधिक होता है। आर्थिक दृष्टि से बार-बार
हाल उठता है। जातक की स्त्री अत्यंत सुंदर होती है। लम्बी, छरही
तीखे नैन नक्श वाली तथा सुन्दर मधुर स्वभाव वाली ऐसी स्त्री
सहज ही सबका मन मोह लेती है। यह स्त्री अत्यंत भावुक होती है।
कठोरता अथवा रुखे मन से इसे वश में नहीं किया जा सकता। इसके
विपरीत भावनाओं के द्वारा इसे नियन्त्रण में लाया जा सकता है।
सरल चित्त की ऐसी स्त्री कल्पना प्रिय होती है तथा हवा में महल
बनाना इसका स्वभाव होता है। जीवन की कठोर वास्तविकताओं
को भी नहीं झेल पाती। आभूषणों से अत्यंत प्रेम करने वाली,
सुन्दर वस्त्रों की इच्छा वाली यह स्त्री सौभाग्यशालिनी होती है।
सर्प के काटने से मृत्यु संभव है। चोरों से संघर्ष करते हुए या
हंसक पशु के शिकार में भी मृत्यु संभव है। जातक विलासी प्रकृति
का पुष्कल होता है। अपने परिवार, पुत्र, पत्नी से प्रेम रखता है।
भावनात्मक रूप से इससे दूर रहता है तथा यह जीवन में

मकर

कई उतार-चढ़ाव देखता है। अन्याय एवं पक्षपात का प्रबल विरोधी होता है। लोगों से वाहवाही लूटना इसका ध्येय होता है।

जरूरत से ज्यादा प्रदर्शन कर अपने आप को उच्च एवं धनी बनाने का प्रयत्न करता है जबकि वास्तविकता इसके विपरीत होती है। वृद्धावस्था में पीते-पाने

का पूर्ण सुख भोगता है। इसका भाग्योदय 23वें वर्ष के बाद होता है। जातक की प्रवृत्ति व्यापार में रहती है और भाग्य भी व्यापार से ही होता है। नौकरी में उन्नति के अवसर कम रहते हैं। यदि जातक नौकरी करता है तो उसे वह सब प्राप्त नहीं होता जिसका यह हकदार है। व्यक्ति बात का धनी, पिता का आज्ञाकारी, यौवनवस्था सफल, एक साथ कई कार्य करने में निपुण, भूमि या भूमि संबंधी कार्यों पर व्यय, कृषि में लाभ, समय पर सही चोट करने में निपुण। ऐसा व्यक्ति ध्यानपूर्वक भाव प्रकट करता है। जातक तुरन्त निर्णय लेने वाला, परिस्थिति को गंभीरता से समझने वाला, समय के अनुसार चलने वाला, वातावरण की पहचान करने वाला, जीवन को ढाल लेता है जैसा समय और स्थिति हो। कई प्रकार के व्यसनों से युक्त, अत्यधिक मित्र, आय की अपेक्षा व्यय अधिक। आर्थिक स्थिति में उतार-चढ़ाव पर नियन्त्रण रख लेते हैं। लोकप्रिय, जीवन में इसकी समस्त आवश्यकताएँ पूरी हो जाती हैं। (कुण्डली दर्पण से)

जातक का मध्यम कद, तीखे नैन-नक्शा, सुन्दर मुखाकृति, काले घने बाल, पतली कमर, जातक गम्भीर, भावुक, संवेदनशील, उच्चमिलापी, सेवाधर्मी, मननशील, धार्मिक। बुद्ध-शुक्र शुभाशुभ के परस्पर व्यवहार कुशल, गहरे विश्लेषण के पश्चात् निर्णय लेने, कलुषाभिमान नहीं करते, बदला लेना नहीं भूलते, जातक की मानसिक, आध्यात्मिक शक्ति प्रबल। गुरु-शनि शुभाशुभ तो जातक विनम्र, विनयशील, व्यवहार

मकर

४३

कुशल, नीतिवान, तर्कशील, भले बुरे को पहचानने में कुशल, विश्वसनीय, मित्र बनाने में सावधान, ईमानदार, तर्कजातक तर्क वितर्क करने में कुशल, खाँसी तथा वायु रोग। शुभ भग नीलम, भाग्योत्तिकारक वर्ष २२, २४, २८, ३२वें होंगे। (पाँचाग दिनाकर)

जन्म समय कृश शरीर, पिंगल वर्ण, बहुत केश, ऊँचा भस्त्रक, ऊँची नाक, वात-विकार, माता का सिर दक्षिण की ओर, पुराना काला-नीला वस्त्र, कसैला भोजन वशीतलजल पिया हो, उपसूतिकाएँ ३ या ४, सूतिका गृह प्राचीन एवं गृह द्वार उत्तर की ओर, जन्म के बाद बालक थोड़ा रोया। शसिका विशेष प्रभाव। वर्ष के १, ३, १०, १८, २१, ३७, ४२वें वर्ष विशेष कष्ट (प्रसूतिलग्न विचार) निम्न फलादेश मकर लग्न की स्त्रियों के लिए :- मकर लग्न हो तो स्त्री गुणवती, सत्यवादिनी, सुन्दर, रूपवती, अच्छे कर्म करने वाली, प्रतिष्ठित, शत्रुहन्ता होती है। [स्त्री जातक विज्ञान]

जातक का सेवा करना धर्म, जिस कार्य में रुचि उसे दृढ़तावशांति से करते हैं, परिक्रामी, कभी मलिन चित्त व ईर्ष्या द्वेष से युक्त हो जाते हैं। किसी समय शूरवीरता से बड़े काम को भी कर लेते हैं। चलना-फिरना कुछ अजीब वचतुर, परंतु कभी-कभी दौलत दूरे बाणी में रुकावट हो जाती है, संशयात्मक बुद्धि, उदासीन, मित्रों में स्वतंत्र व दूसरे पुरुषों में लज्जायुक्त, शत्रु को हानि करना, दूरक काम सोच-समझकर करते हैं। व्यापार से धन प्राप्त, भाई-बहनों व पिता से सुख नहीं, कई विवाह परंतु विवाह के समय अडचने। स्त्री प्रसन्न, संतान थोड़ी होती है, खाँसी व वायु रोग, महत्त्वपूर्ण वर्ष १८, २२, ३२, ४६, पूरा आयु वर्ष ८६। (काल दर्शक पाँचाग)

कुम्भ लग्न का फलदेश

कुम्भ लग्न दार्शनिक विचारधारा का प्रतिनिधित्व करता है। जातक शिष्ट, सम्य, शांत, कुलीन, विचारों का धनी, दूसरों की सहायता करने में सदा तत्पर, सेवा-सहानुभूति इनके जीवन का उद्देश्य, मेधा स्मरणशक्ति, कद लम्बा, हृष्ट पुरुष, प्रभावयुक्त चेहरा होता है। सरल स्वभाव के ये जातक प्रत्येक विचार में नवीन युक्ति प्रस्तुत करते हैं। खरी-दूकद देने में हिचकिचाहट नहीं महसूस करते। इनकी उन्नति और अवनति अप्रत्याशित, जीवन बाधाओं से युक्त, कठिन से कठिन संघर्षों में उलझना इनका स्वभाव, दाम्पत्य जीवन सधारण, वृद्धावस्था में पेट और छाती सम्बन्धी बीमारी। यदि जातक अपने विचारों तथा भावनाओं पर नियन्त्रण रख सकें तो निस्संदेह सफल धनी। इस प्रकार का जातक डॉक्टर, वैद्यक, दवाईयों का विक्रेता बनकर धनी हो सकता है। यदि ये व्यक्ति शोधर खरीदें या लघु उद्योग में रुपया लगाएँ, तो भी लाभ है। अधिक स्तोत्रों से अर्थ लाभ, खर्च पर पूर्ण नियन्त्रण, धन के पीछे भूत की तरह लगे रहते हैं। इनके जीवन में शांति नहीं रहती। तुरन्त निणय लेने में असफल, अतः कई बार हारि उठानी पड़ती है। २२, २४, २८, ३२, ३३, ३४, ३७, ४२, ४८, ५२, ५४, ५५, ६० वाँ साल आर्थिक दृष्टि से महत्त्वपूर्ण। जातक बल विक्रम में धनी, मांसल भुजाएँ, बलिष्ठ कंधे, उत्तम साहस वाला होता है। भुजबल से शत्रु लाभ करता है, दूसरों की भलाई करने वाला, कई प्रकार की कलाएँ जानने वाला एवं धन संचय करने वाला होता है। जातक की समाज में इज्जत, सामाजिक कार्यों में बढ़-चढ़कर भाग लेता है। साहस, धीरता, गम्भीरता में जातक उत्कृष्ट, स्वस्थ सुदृढ़ शरीर, सुन्दर रूप, गुण। धार्मिक, व्रतोत्सव आदि धूम धाम से मनाता है। शिव की पूजा से जातक को विशेष लाभ, पारिवारिक जीवन सुखी, वृद्धावस्था में पूर्ण संतान सुख होता है। जातक को पूर्ण संतान सुख। जातक दृढ़, साहसी,

कुम्भ
मजबूत होता है पर विचारों में अस्थिरता रहती है। वह किसी भी
एक कार्य पर काफी समय तक विचार नहीं कर सकते। इन्हें क्रोध
जल्दी आता है, पर क्रोध शीघ्र ही शान्त हो जाता है। विद्या योग
उन्नत। ऐसे व्यक्तियों के शिक्षा काल में कई प्रकार की बाधाएँ
आ जाती हैं। जातक पुत्रों से अत्याधिक प्रेम करने के कारण
दूसरों से अकारण झगडा मील लेता है। न तो वह स्वयं आराम
करता है न ही अपने अधीनस्थ संबंधियों या कर्मचारियों को
आराम करने देता है। जातक की पत्नी क्रोधी स्वभाव की, तुलना
मिजान। जरा सा कार्य यदि उसकी इच्छा के अनुकूल नहीं होता
तो वह रुठ जाती है, कलह करती है तथा घर के वातावरण को
विषासक्त बना देती है। न इसे मृगार करने का चाव होता है
न अपने आपको सजा पाती है। मित्रों की पार्टियों में एकरस-सी
न होकर, अलग-2 सी दिखाई देती है। ऐसी औरत साहसी
होती है तथा विपत्ति के समय भी धैर्य को अग्रण बनाए रखती है।
धन का मोह होता है, आभूषण प्रियता इसका स्वभाव, मानव
मन को परखने में प्रवीण, समय के अनुरूप अपने आपको
ढलने में चतुर होती है। मस्तिष्क से स्वस्थ, बुद्धिमान। यदि
अष्टमेश षष्ठस्थान गत हो तो सुजाक रोग से ग्रस्त होता है
तथा व्याधि पीडा से मरता है। स्त्री की हत्या तथा विषपान की
भी इशारा रहती है। मृत्यु स्वमृदु में होती है। जातक धर्मभिर
होता है तथा प्रत्येक कार्य करने से हिचकिचाता है जो अन्याय हो
जा फिर जिस कार्य को समाज में मान्यता न मिलती हो।
बाल्यावस्था में इसे काफी परेशानियाँ देखनी पड़ती हैं। इसकी
प्रगति धीरे-2 होती है। शिक्षण काल में भी कई बाधाएँ आती
हैं। या तो इसे सभी प्रकार की डिबीजन मिलती है या फिर
रुक-रुक कर पढ़ाई होती है। भोग विलास का इच्छुक,
की अपेक्षा व्यापार में लभ एवं भाग्योदय शीघ्र।
में जातक अग्रणी, यात्राएं इसके भाग्य में होती हैं।

कुम्भ

धूमक्कड जीवन बिताने का इच्छुक होता है। ससुरालसे धन-
प्राप्ति संभव है। २४ वें वर्ष के बाद भाग्योदय, मनुष्य सद्गुणों
अलंकृत गरीबों का सहायक। यद्यपि परिस्थितियाँ इससे
अतिकूल रहती हैं फिर भी यह अपने सौम्य व्यवहार एवं नीति
से वातावरण को अनुकूल बनाने में समर्थ रहता है। धार्मिक
कार्यों में गहरी रुचि, नौकरी में उन्नति करता है तथा जीवन
निर्वह के लिए कठोर श्रम करता रहता है। जातक व्यापार में
प्रगति करता है। नौकरी में उन्नतिके अवसर कम। अफसरो
से जान पहचान होती है जिससे शनैः-२ प्रगति करता रहता है।
हंसमुख, मिलनसार, तीक्ष्ण बुद्धि, वह बात का धनी। आमदनी
के कई स्त्रोत्र होते हैं। जीवन का एक ही ध्येय है आमदनी में
विस्तार किया जाए। आथ की अपेक्षा व्यय अधिक होने पर भी यह
बचत कर लेता है। आवश्यकताएँ सीमित होती हैं तथा वे पूरी
भी हो जाती हैं। (कुण्डली दर्पण से)

शनि शुभ हो तो जातक मध्यम या ऊँचा कद, सुन्दर प्रभावशाली
व्यक्तित्व, बुद्धिमान, साधन सम्पन्न, तीव्र स्मरण शक्ति, गम्भीर, दयालु,
परोपकारी, मित्रों व सम्बन्धियों का सहायक, व्यवहार कुशल, मिलनसार,
स्पष्टवादी, निस्वार्थी, स्वाभिमान, स्वतंत्रता प्रिय, नए-२ मित्र बनाने का
इच्छुक, उद्योगी, उद्यमी, परिश्रमी, प्रबन्धात्मक, देश-विदेश में जाने
के अवसर प्राप्त होंगे, महत्त्वकांक्षी, क्रियात्मक दृष्टिकोण, विधन
होते हुए भी उच्च पद प्राप्त करने में सफल। यदि गुरु शुभ हो तो
जातक उच्चाधिकारी, उच्चपदासीन, क्रय विक्रय, प्रोफैसर, जन वकील,
अथवा उच्च एवं धनी व्यापारी होंगे, आर्थिक मामलों में कहिनाइयाँ।
शुभ नग नीलमास्त्रियों के लिए पुखराज। शुभ वर्ष २५, २६, २७, २८, २९
वें होंगे। (पाँचांग दिवाकर से)

बालक-बालिका का चौड़ा भस्तक, मोटे होठ, वातपित्त
प्रकृति, श्वेत श्याम वर्ण, धूम्रवर्ण वस्त्र, मध्यम केश, माता का मुख
पश्चिम की ओर, उपस्रतिकाएँ ३ या ५, शाकादि का भोजन किया हो,

कुम्भ

माता को शरीरकष्ट, पिता घर में न हो, बालक ने रुदन किया हो।
आयु के २, ४, १३, २८, ३३, ४२, ४८, ५४ वें वर्ष विशेष कष्ट। शनि का
विशेष प्रभाव (प्रसूति लग्न विचार)

निम्न फालादेश कुम्भ लग्न की स्त्रियों के लिए :- कुम्भ लग्न हो तो
स्त्री कृतज्ञता रहित, रक्तदोष एवं अभिमानी, खर्चीली, पर-पुरुष पर
आसक्ति रखने वाली होती है। (स्त्री जातक विज्ञान)

जातक साहित्यकला, कौशल, दर्शनों के गुप्त काशीकीन, लेखक,
वक्ता, प्रेमी, वृद्धावस्था तक पत्नी से प्रेम, एकांत सेवी, लोगों से मेल न लेने
कम, अच्छे मित्र, इच्छा शक्ति प्रबल, दौलत हासिल करने में उद्यम के
बावजूद असफल। कई गुप्त दुश्मन। परिवार से धन सहायता तथा मित्रों
मरतबे की सहायता इसके दुख का कारण। रुपए के खातिर यात्राएं, संबंधी तथा
भाई कारोबार में कष्ट का कारण, अकादमी गुप्त। कौजी में गुप्तचर, भाई बड़े
बहन कम, कई बार भाई के साथ झगडा। पिता का जल्दी देहांत। संतान सुख कम। डोटे
खासकर पहली, शादी खानदमी स्त्री या गवैया स्त्री से, सबन्ध कलाभ, स्त्री शिष्ट
वृश्चिक राशि वालों से दुखी। वर्ष ६, ११, १८, २५, ३८, ४० कष्ट। महत्वपूर्ण वर्ष
१८, २३, ३०, ४८, ५२, ६४, ७२। आयु वर्ष ८५ (कालदर्शक पाँचाम)।

मीन लग्न का फलवैश

मीन लग्न में जन्म लेने वाले जातक शहलु, आस्तिक, मेहनती, समाजिक रुचियों का पालन करने वाले, बातचीत में प्रवीण, समझदार, मध्यम कद, घुँघराले केश, उन्नत नासिका, छोटे-२ दाँत, पैनी आँखें, भव्य आकृति, सहिष्णु। यदि इनका साथ कोई बुराई करता है तो वे प्रत्युत्तर भलाई करते हैं। अधिकतर ये अपने आप में ही केंद्रित रहते हैं। पारिवारिक जीवन पूर्ण सुखी, लेखक, संगीत, नाटक आदि में रुचि, आर्थिक मामले में पिछड़े रहते हैं। धन इनके पास आता है पर टिकता नहीं। दोनों हाथों से खर्च करते हैं। भरपूर आत्म विश्वास तथा जीवन में ये अपने लक्ष्य तक पहुँच जाते हैं। आर्थिक मामलों में बड़े अनिश्चित। जातक किसी समय अच्छे धन प्राप्त कर लेता है पर उड़ते भी देर नहीं लगती। विवाह के बाद भाग्योदया जातक जरूरत से ज्यादा प्रदर्शन करता है। शत्रुओं से असावधान रहने से हानि की संभावना। जातक नौकरी में उच्च पद प्राप्त करता है। परिवार में प्रशंसनीय, दान-पुण्य में अग्रणी, लेखन शैली से भी धन प्राप्त करता है। कवि, चित्रकार, कलाकार बनने के साथ-२ अन्य कलाओं में भी सहज रुचि, कलाओं के माध्यम से लाभ। जातक कामी, सुखी, सुन्दर स्त्रियों की संगति में आनन्दित, यौवन में यह व्यर्थ का द्रव्य लुटाता है। सुगन्धित पदार्थ, तेल, इत्र आदि पर खर्च होता है। आर्थिक दृष्टि से साधारण, द्रव्य संचय के लिए विशेष प्रवृद्ध करता है। जीवन के अंतिम काल में प्रबल धन हानि। जातक की लड़कियाँ अधिक जातक विनयशील, समझदार, नम्र। पुत्र सुख देरी से प्राप्त, व्यक्ति स्वल्पकांक्षी, दूसरों पर विश्वास करने वाला, संतान सुख से पीड़ित एवं दुखी रहता है। जातक कामी, क्रोधी। पर स्त्री के संपर्क से हानि उभरती है। गृह कलह रहती है तथा संतान का उसे स्वल्प सुख ही मिलता है। जातक की पत्नी सुंदर, सुशील, कोमलांगी, लज्जाशील, नपुं आधारी, अर्थमाग्ययुक्त, घर की संपदा बढाने वाली होती है। इस

मीन

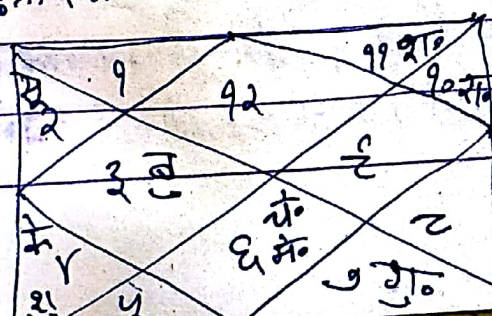
स्त्री के संतान देरी से होती है, फलस्वरूप संतान की चिंता में पीड़ित
है। समुख, सत्यवादी, पति को सत्पथ पर ले जाने वाली, नीती एवं
मर्यादा की बात कहने वाली, गृंगार प्रिय, साधारण गृंगार से उच्च
रूप स्थित इच्छा है। इसे धन की लालसा रहती है तथा यह लालसा
अन्य सदगुणों पर हावी नहीं होती। दृढ़ चित्त वाली ऐसी स्त्री
संकटों एवं बाधाओं में पति का साथ देती है। जातक की मृत्यु
उपवास से होती है। क्रोधातिरेक में लुकसान होने से या युद्ध
भूमि में भी मृत्यु संभव है। जातक पाखंड प्रिय होता है। प्रदर्शन
की प्रवृत्ति इसमें खूब होती है। इसके फलस्वरूप व्यर्थ का व्यय भी
जाता है। फैशन एवं सजावट में रुचि। जीवन के प्रारम्भिक वर्ष
कष्ट तथा उथल पुथल। जातक को आजीविका के लिए कठोर संघ
करना पड़ता है। परिवार एवं जाति की ओर से बिल्कुल सहायता
नहीं। 12 वर्ष तक स्थिति साधारण। इसके बाद भाग्योदय। जीवन
में प्रगतिशील तथा अपने ध्येय तक पहुँच जाता है। जीवन में कई
यात्राएँ करता है तथा समय को पहचानकर लक्ष्य पूर्ण कार्य करता
है। जातक की व्यापार में प्रगति। नौकरी में परेशानियाँ का सामना
करना पड़ता है, परंतु इसमें इच्छाशक्ति अदम्य होती है तथा
निरन्तर संघर्ष करता हुआ अन्ततः विपरीत परिस्थितियों को
अपने अनुकूल बना ही लेता है। भूमि सम्बन्धी अथवा धर्म
संबन्धी कार्यों में जातक को लाभ होता है। एवं पिता की सेवा
करने वाला यह जातक समाज में यश लाभ करता है। जातक
चंचल प्रकृति का युवक होता है तथा उसका दिमाग अत्यंत गतिशील
रहता है। एक ही बिंदु पर घंटों सोचने की इसकी आदत नहीं होती।
परंतु बहुत कम समय में यह बात की तरह तक पहुँच जाता है।
नौकरी में उन्नति के कई अवसर तथा प्रगति भी करता है। विद्या
के ठोस साधन। परिवार तथा समाज में लोकप्रिय तथा सम्मानित।
के साथ स्नेह संबंध। अपने वचनों का पालन। सजावट प्रिय।
सुरुचि एवं सफाई में विशेष मोह होता है।

जातक बुद्धिमान, गम्भीर, सौम्य, परोपकारी, ईमानदार, सत्य, प्रिय, धार्मिक, फिलॉसफर, साहित्य एवं गूढ़ विद्याओं में रुचि, उच्चाभिलषी, उच्चाकांक्षी, स्वाभिमानी, मान मर्यादा का ध्यान रखने वाला, सेवाभाव, तीव्र बुद्धि, परिजमी, दूरदर्शी, व्यवहार कुशल, नैतिक, विश्वसनीय, ईमानदार, मित्रों एवं सम्बन्धियों का सहायक, परिस्थितियों के अनुसार दललेने की क्षमता वाला, न अन्याय करेगा न अन्याय सहन करेगा। जातक कलाकार, चल चित्र, व्यवसाय, खाने पीने की वस्तुओं से सम्बन्धित, समाज सुधारक, अध्यापन सम्बन्धी कार्यों में सफल। शुभ नग पुखवान, वैवाहिक जीवन के लिए पञ्जा। भाग्योन्नतिकारक वर्ष २४, २८, ३३, ३८ वें होंगे। (पाँचाग दिनांक व से)

बालक जन्म समय सुन्दर, सौम्य, पीतवर्ण, वस्त्र फफ प्रकृति, माता के पीले मिलित वस्त्र, भिषान्न सहित अल्प भोजन किया हो, मुख उत्तर की ओर, उपसृष्टि है २ या ३। बालक जन्म से कुछ देर बाद रोया है। आयु के १, ७, १०, १३, २६, २९, ३८, ४१ वें वर्ष विशेष कष्ट। (प्रसूतिलम्भ विचार) निम्न फलदेश मीन लग्न की स्त्रियों के लिए - मीन लग्न हो तो ऐसी स्त्री पतिव्रता, नयशील, विनम्र, गुरु की आज्ञाकारी, बन्धु प्रिय, देवता-भक्त, पुत्रवती होती है। (स्त्री जातक विज्ञान)

जातक देवता के समान, मानी, कला-कौशल, विद्वान्, लेखक, अपना प्रभाव दूसरों पर डालने वाले, जातक नानी, संगीतज्ञ, साहित्यकार, भोगी, संतान अधिक, भाग्यवान् दानी, पुण्यात्मा लोगों से सहानुभूति, अस्वाधी, क्रोध जल्दी नहीं और शांत भी जल्दी नहीं, भाई-बहिन अधिक, सम्बन्धि सहायक, भाई-बहिन की मृत्यु, माता का सुख कम, पिता अकाल मृत्यु, प्रतिभाशाली, व्यापार में लाभ, कर्णपीडा, विदेश में रुखी। १, २५, २०, ३२, ३८, ४० वें वर्ष कष्ट। महान् प्रण वर्ष ४, १८, २४, ३२, ४५, ५२, ६०, ६४।

नोट - आगे एक महिला की कुण्डली है जिसमें ६ पुत्रियाँ हैं पर पुत्र एक भी नहीं है। मीन लग्न उपर्युक्त कारण का हेतु है, राहु की दृष्टि संतान सुख में बाधक, पंचम भाव का शुक्र स्त्री कारक मरुत है जिसके कारण लड़कियाँ अधिक। (कुण्डली दर्पण)



सूर्य

प्रथम भाव में हो तो ईमानदार, तुलकसिंहाज, गुस्सैल, शारीरिक पुष्ट, रंग भी खुलता हुआ। (कुण्डली दर्पण से)

जातक साहसी, कुशाग्र, उदार दृढ़ इच्छाशक्ति, स्वतंत्र विचार, स्वाभिमान, दिलेर, उन्नत नासिकाग्र, चौड़े ललाट युक्त, उच्च पद, भ्रमणशील, विदेश में भाग्योदय सूर्य अशुभ हो तो चंचल, क्रोधी, दुर्बल, अरूपकेशी, बाल्यकाल में चौराहिकाभय,

शिर एवं नेत्र कष्ट, स्त्री व परिवार सम्बन्धी चिन्ता, रक्त पित्त रोग, अस्थिर प्रकृति। (पाँचांग विचार)

स्त्री की कुण्डली में स्त्री क्रूर, दुष्ट, कृतघ्न, परान्नप्रिय, कृश, कांतिहीन, रोगयुक्ता, बाल्यकाल में शोषिणी, नेत्र कष्ट, नीचों की सेविका, धन तथा पुत्र सुख से वंचिता सूर्य उच्च स्थ हो तो सुखी। (स्त्री जातक विज्ञान)

द्वितीय भाव में हो तो जातक द्रव्य के सम्बन्ध में चिंतित, पिता द्वारा अर्जित धन उसे नहीं मिलता। जीवन के पूर्वार्ध की अपेक्षा उत्तरार्ध अधिक सफल। मध्यकाल में रोगों का शिकार होना पड़ता है तथा आपरेशन आदि भी होते हैं। नौकरी की अपेक्षा उद्योग कार्यों में जातक सफल। (कुण्डली दर्पण से)

जातक मुखरेणी, सम्पत्तिवान्, भाग्यवान्, झगड़लू, नेत्र कर्ण दन्त रोगी, राजभीरु, स्त्री के लिए परिवार से झगड़ने वाला होता है। (पाँचांग विचार)

स्त्री की कुण्डली में स्त्री कलहप्रिय, धन-धान्य विहीना, प्रारंभ हीन, द्वेषी, स्नेहहीना, कठोर भाषिणी, पारिवारिक सुख से रहित, नेत्र रोग, मध्यम धन। सूर्य उच्च हो तो सुखी। (स्त्री जातक विज्ञान)

अष्टम भाव

अष्टम भाव में हो तो जातक के होसले बहुत बड़े-चढ़े होते हैं। शत्रुओं से खिलवाड़ करना तथा शत्रुओं से खिलना इसके लिए सहज होता है। दिमागी कार्यों में

सूर्य

अग्रणी। राजनीति में सफल हो सकते हैं। भाइयों से लाभ नहीं। धनवान, सुखी, धैर्यवान, सानन्द जीवन व्यतीत करता है। (कुण्डली दर्पण से)

जातक पराक्रमी, प्रतापशाली, कवि, बन्धुहिन, बलवान, लक्ष्यप्रतिष्ठ (पाँचों दिशाओं में विजय) स्त्री की कुण्डली में स्त्री सुन्दर शरीर व मुख, विशाल स्तन, नम्र, रोग पीडित, सदैव आनन्दित दिखने वाली, बन्धु सुख से रहित, धैर्य, शक्ति सम्पन्न, पति के साथ से नि युक्त तथा दूसरों की रक्षा करने वाली होती है। (स्त्री जातक विज्ञान)

ii) चतुर्थ भाव में हो तो जातक मानसिक रूप से परेशान, दिमाग में अस्थिरता असंतोष एवं घुमडन से बनी रहती है। जातक जीवन में प्रसन्न। मित्र सहायक पर स्वार्थी फलस्वरूप मित्रों का विशेष लाभ नहीं। गम्भीर विषयों और संगीत में रुचि। राजनीति असफल तथा कठिनता से सफलता प्राप्त होती है। (कुण्डली दर्पण से)

जातक चिन्ताग्रस्त, सुन्दर, कठोर, पितृधन नाशक, भाइयों का वैरी, गुप्त विद्या प्रिय, स्ववाहन सुखहीन (पाँचों दिशाओं में विजय)

स्त्री की कुण्डली में स्त्री बड़े दाँत वाली, रोगी, प्रभावहीन, अपमानित, सुखरहित, पति-पुत्रदि सुख से युक्त, धन, शौर्य, शक्ति से सम्पन्न, कोमल हृदय, सुन्दर पति, संगीत की जानकार तथा सदैव सुखी। (स्त्री जातक विज्ञान)

iii) पंचम भाव में हो तो जातक को संतान सुख का अभाव था। स्त्री के गर्भपात या देरी से संतान लाभ। जीवन में प्रसन्नता का अभाव तथा कई उतार-चढ़ाव, बाल्यवस्था कष्टकायक, बचपन में कठोर संघर्ष करना पड़ता है। जीवन के उत्तरार्द्ध में संतान सुख प्राप्त होता है।

सूर्य

था दिल के दोरे से भी मौत संभव। आय की अपेक्षा व्यय अधिक।
जातक रोगी, अल्पसन्तान, सदाचारी, बुद्धिमान, दुखी, शीघ्र क्रोधी, वक्ता (पाँचांग दिवाकर)

स्त्री की कुण्डली में स्त्री अल्प पुत्रवती, व्रताचारिणी, माता पिता की भक्त, प्रिय भाषिणी, देव ब्राह्मणों की पूजक, स्त्रियों में ज्येष्ठ, बाल्यावस्था में रोगिणी, धनहीन। सूर्य मेष, सिंह का हो तो धन पुत्रादि सुख से युक्त (स्त्री जातक विज्ञान)

वृद्ध भाव में हो तो जातक कुशल राजनीतिज्ञ, समय को पहचानने वाला, सोच विचारक कर कार्य करने वाला, प्रसिद्ध। यद्यपि स्वस्थ उत्तम कोटि का नहीं वृद्धावस्था में लम्बी बीमारी, जातक योगाभ्यास में रत, परिवार का कल्याण करने वाला, बंधुओं में पूज्य एवं पूर्ण गृहस्थ सुख प्राप्त करता है। जातक कुशल प्रशामक। इसके शत्रु अनेक पर इससे डरते हैं। जातक पूर्ण परिक्लामी व धनवान। 'सैलफ मेड मैम' होता हुआ भी अर्थ संचय में निपुण, वृद्धावस्था में सीने में दर्द, हार्ट टर्बल, रक्त सम्बन्धी त्रिकार उत्पन्न हो जाते हैं। (कुण्डली दर्पण)

जातक शत्रुनाशक, तेजस्वी, वीर्यवान, मातुलक पृथक्, सम्बन्ध बलवान, जीमान, न्यायवान, निरोगी (पाँचांग दिवाकर)

स्त्री की कुण्डली हो तो स्त्री दया, प्रौढ़, धार्मिक, शान्त स्वभाव, शत्रु जयी सौभाग्यशाली, सुन्दर शरीर, कुटुम्ब की रक्षा, धन पुत्रादि से युक्त, उत्तम स्वभाव, लोक में मान्य (स्त्री जातक विज्ञान)

असाधन स्थान में हो तो जातक की स्त्री सुन्दर, सुशील, सुशील।
असाधन के साथ आनंद भोग की प्रवृत्ति। वैवाहिक सुख ग्रीण। यदि

सूर्य

सत्तम भाव में कोई शुभ ग्रहन हो तथा दृष्टि भी न हो तो जातक को दोषिवाद होते हैं। जातक चंचल, विलासी, सुन्दर स्त्रियों के लिए वर असफल प्रयत्न करता रहता है, क्रोधी, शरीर कुशा। संतान सुख मध्यम तथा एक, दो बार गर्भपात। प्रथम संतान के शरीर विकार या न्यूनता। जातक का संतान सुख मध्यम। जातक शीघ्र निर्णय नहीं ले। क्रोधावेश में काम बिगाड़कर पड़ता है। स्त्री के साथ सम्बन्ध मधुर नहीं। विचारों में मतभेद। स्त्री का स्वभाव भी क्रोधी (कुण्डली)

जातक की स्त्री कलेशकारक, स्वाभिमानी, कठोर, आत्मरत, राज्य से अपमानित व चिन्ता युक्त। (पाँचाग दिवाकर)

स्त्री की कुण्डली हो तो स्त्री कुरुपा, पापिनी, लज्जाहीन, नफयुक्त, पति द्वारा परित्यक्त, चंचल, कसिल वर्षा के नेत्र (स्त्री जातक विज्ञान)

च) अष्टम स्थान में हो तो जातक क्रोधी, चंचल, हृदय में अपने से बड़ों के प्रति ज्ञाह्ता, रोगी, बुरी संगति के कारण स्वस्थ एवं धनी घटता है। भाग्य इसका साथ नहीं देता। ऐसा जातक धोखेबाज, दूरदर्शी तथा आजीविका के लिए घर से दूर रहता है। (कुण्डली दर्पण)

जातक पित्त रोगी, चिन्ता युक्त, क्रोधी, धनी, सुखी, धैर्यहीन, निबुद्धि (पाँचाग दिवाकर) स्त्री की कुण्डली हो तो स्त्री रक्तदोष से पीड़ित, उत्साहहीन, कुधर्मचारी, दुःख, दारिद्र्य से युक्त, चंचल स्वभाव, मलिन चित्त, रोगिणी, दुःशील, पति सुख से रहित (स्त्री जातक विज्ञान)

सूर्य

1

पृ. 9

नवम भाव में हो तो जातक का मध्यम कद, उभरा वक्रस्थल, उन्नत ललाट एवं सुन्दर नेत्र होते हैं। जातक परिवार से स्नेह करने वाला, नवीन विचारों का अन्वेषी होता है। जातक साहसी, रिक्तमी, विपरीत परिस्थितियों में संघर्ष करता हुआ उन्नति की ओर अग्रसर होता है। बाल्यावस्था सुखद नहीं, शिक्षा एवं आजीविका के लिए संघर्ष करना पड़ता है। युवावस्था, वृद्धावस्था तफल, यात्राओं का प्रबल योग, 28 वें वर्ष से भाग्योदय, अपूर्व तृत्व प्रमत्ता (कुण्डली दर्पण)।

जातक योगी, तपस्वी, सदाचारी, नेता, ज्योतिषी, साहसी, बाह्य सुख युक्त, भृत्य सुख रहित (पाँचाग पिताकर)।

स्त्री की कुण्डली हो तो स्त्री क्रोधिनी, साहसकर्म-प्रिय, अनेकशत्रुवाले, भाग्यहीन, ऐश्वर्यहीन, सुन्दर केश, सत्यवादी, धनधान्य से युक्त, बाल्यकाल वृद्धावस्था दुःखी, यौवनसफल (स्त्री जातक विज्ञान)।

10) दशम भाव में हो तो जातक तेजस्वी, सच्चरित्र, विद्वान् होता है। यदि अन्य ग्रहकारक हो तो जातक नौकरी में प्रगति करता है। परंतु राज्य भंग योग भी होता है। नौकरी में उत्तार चढ़ाव, मातृ सुख अत्यल्प, माता के विचारों से विरोध जिसके कारण माता से दूर रहता है। पितृ सुख कम था। पिता का धन नहीं प्राप्त होता। कई बार व्यय होने के कारण आर्थिक स्थिति चिंतनीय, उत्तम जीवन बिताने का प्रयत्न। समाज में व्यक्ति जल्दी की दृष्टि से देखा जाता है। (कुण्डली दर्पण)।
जातक प्रतापी, व्यवसायी, राजमान्य, लब्ध प्रतिष्ठ, राजमंत्री, उदार, ऐश्वर्यसम्पन्न, लोकमान्य (पाँचाग पिताकर)।

स्त्री की कुण्डली हो तो स्त्री कुकर्म, निस्तेज, पीड़िता, स्वकृत्यों के प्रति दुर्लक्ष, समस्त गुणों से युक्त, अभिमान, दानी, धन-पुत्र सुख से सम्पन्न, नृत्यगण में रुचि (स्त्री जातक विज्ञान)।

सूर्य

११) एकादश भाव में हो तो जातक अडियल प्रकृति का, एक बार जो सोच लेता है उसे पूरा करने में कृतसंकल्प और अंततः विचारों भूत रूप दे ही देता है। प्रार्थिक दृष्टि से सम्पन्न। बचपन सुख तथा यौवन में अर्थ संचय भी कर लेता है। आवश्यकताएं पूरी कर लेता है, प्रगति तथा लाभ प्राप्त करता है। परिवार से विचारों में भिन्नता फिर भी सोच समझकर बोलता है। जातक सफल वकील या राजनीतिज्ञ। जीवन में अभाव नहीं रहता तथा स्वतंत्र चिंतन के कारण प्रख्यात होता है। (कुण्डली दर्पण)

जातक धनी, बलवान, सुखी, स्वभिमानि, सितभाषी, तपस्वी, सदाचारी, अल्पसन्तति, उदर रोगी (पाँचांग दिवाकर)

स्त्री की कुण्डली हो तो स्त्री समस्त कलाओं में निपुण, पुत्र-पौत्र युक्त, बन्धु वर्ग को मान्य, लाभायुक्त, सितेन्द्रिय, सुखी, सुन्दर, सुशील, दूसरे के गुणों की अद्वय। (स्त्री जातक)

१२) द्वादश भाव में हो तो जातक उदासीन, वाम नेत्र एवं मस्तक रोगी, आलसी, परदेशवासी, मित्र-द्वेषी, कृश शरीर (पाँचांग दिवाकर)

स्त्री की कुण्डली हो तो स्त्री कुकर्म, शुचिता रहित, किजल खची, दुष्ट, नेत्र-रोगी, सब जगह जाने वाली, दुर्बल, कामी, पर-पुरुष, परधन प्राप्त करने वाली। (स्त्री जातक)

चन्द्र

प्रथम भाव में हो तो जातक कोमल, कल्पना शक्ति की प्रबलता, भावुक, सहृदय, दयार्द्र, मानसिक चिंता से ग्रस्त या उदर रोगी होता है। (कुण्डली दर्पण)

जातक बलवान, ऐश्वर्यशाली, सुखी, व्यवसायी, मान-वाद्य प्रिय, स्थूल शरीर (पाँचांग दिवाकर)

स्त्री की कुण्डली हो तो चन्द्र शुक्ल पत्र का तो गौरवर्ण, सुन्दर, धन-धान्य युक्त कृष्ण पत्र हो तो कृशांगी, कुवस्त, विवाद्य प्रिय, रुग्ण, अल्प सुखा (स्त्री जातक विज्ञान)

द्वितीय भाव में हो तो जातक सुखी-सम्पन्न, बृहद परिवार का बन्धी होता है। स्त्रियों के मामले में सौभाग्यशाली, स्त्रियों के सम्पर्क से वैद्व्योपार्जन में सफलता प्राप्त करता है। चन्द्र व्यक्तित्व को सफल पत्रकार, लेखक भी बना देता है और पुस्तक व्यवसाय, प्रकाशन संस्थान अथवा लेखन से भी भाग्योदय हो सकता है। (कुण्डली दर्पण)

जातक मधुरभाषी, सुन्दर, भोगी, परदेशवासी, सहनशील, शान्ति प्रिय, भाग्यवान (पाँचांग दिवाकर)

स्त्री की कुण्डली हो तो नम्र स्वभाव, धर्मशील, नीती युक्त, धनवती, पति का कार्य करने में दक्ष, सुन्दर, कीर्तिमती, सुखी, सुशील, धार्मिक होती है। (स्त्री जातक विज्ञान)

तृतीय भाव में हो तो जातक शीघ्र सोचने वाला, तुरन्त निर्णय

लेना वाला, कठिन संघर्षों में भी आगे बढ़ते रहना

चन्द्र

एवं बाधाओं पर विजय पालने की प्रमत्ता वाला, जातक अल्पमात्र
कम से कम बोलकर अधिक से अधिक कार्य कर देना इसका स्वभाव
जीवन के मध्यकाल में अपने रास्ते बदल देता है। जातक यात्रा
का शौकीन, शत्रुओं का मान-मर्दन करने वाला, परम साहसी। पाल
जीवन अल्प होता है, परिवार में मन मुटाव चलता रहता है। (कुण्डली
जातक प्रसन्नचित्त, तपस्वी, आस्तिक, मधुरभाषी, कफरोगी, प्रेमी
स्त्री की कुण्डली हो तो स्त्री कफ-वात-पित्त युक्त, दुष्ट, कुसंगति स्त्री,
कठोर भाषिणी, नीती रहिता, कुपण, कतल, धनपुत्रादि से युक्त, थोड़े भाई,
चन्द्र बली हो तो बन्धु सुख (स्त्री जातक विज्ञान)

४) यदि चतुर्थ भाव में हो तो जातक भावुक, दयालु, परोपकारी,
सम्बन्धियों से विचारों में गहरी असमानता, हसमुख। आत्मविश्वास
एवं आत्मसंतोष की मात्रा जरूरत से अधिक। बुलवान चन्द्र
जातक को विख्यात, धनी, प्रभावशाली बना देता है। (कुण्डली विज्ञान)

जातक दानी, मानी, सुखी, उदार, निरोगी, रामद्वेष वर्जित, कृष्ण, विवाहके
पश्चात् भाग्योदयी, जलजीवी, बुद्धिमान (पाँचमा विवाकर)
स्त्री की कुण्डली हो तो स्त्री का स्थिर स्वभाव, सुखी, धार्मिक, सुखी मधुर
भाषिणी, मांस में रुचि चन्द्र द्विज हो तो सैमिणी, दुर्बल, दुखी। (स्त्री जातक विज्ञान)

५) पंचम भाव में हो तो पूर्ण संतान सुख। संतान सरल, रौम्य,
गुणवान, प्रतिष्ठा प्राप्त करने वाली होती है। अधिक सुख में
जातक सम्पन्न, जातक की स्त्री गुणवान एवं कुलीन। (स्त्री जातक विज्ञान)

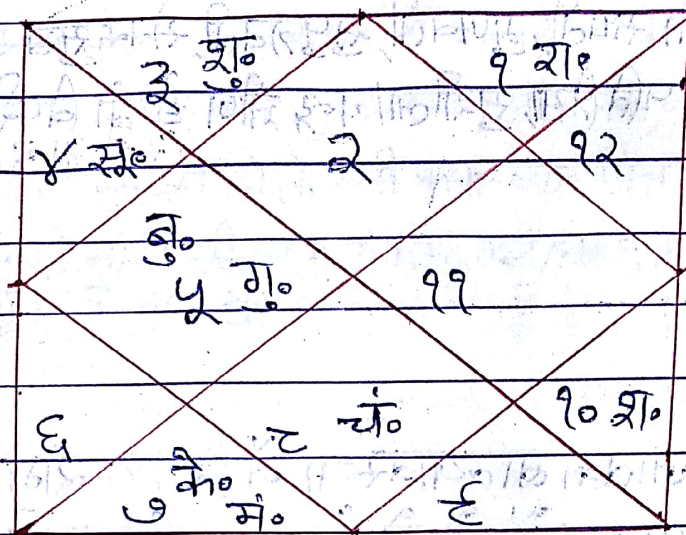
चन्द्र
 जातक ईश्वर से इन्से वाला, ईश्वर अराधक, धार्मिक, सत्यवादी,
 मानदार, चातुर, तीक्ष्ण बुद्धि, कलाओं का ज्ञान होता है। (कुण्डली दर्पण)
 जातक चंचल, कन्यासन्तानवान, सदाचारी, सदैव से धन कमाने वाला,
 प्रभाशील होता है। (पाँचांग दिवावारी)
 स्त्री की कुण्डली हो तो सखती, गुणवती, सुपुत्रवती, सेवक सुख सम्पन्न,
 गौखमयी, पति की आज्ञाकारी, पति प्रिया, सुशीला। चन्द्र मीण हो तो विपरीत फल।
 (स्त्री जातक विज्ञान)

६) षष्ठ भाव में हो तो जातक बाल्यावस्था में विविध रोगों से ग्रस्त,
 मानसिक रूप से परेशान, दुखों को झेलते-२ सहिष्णु हो जाता है।
 मित्रों में सम्मान की दृष्टि से देखा जाता है। यदि चन्द्र बली हो
 तो बहुत से सुख प्रदान करने में समर्थ। (कुण्डली दर्पण)
 जातक कफरोगी, अल्पायु, आसक्त, खरचीला स्वभाव, नेत्ररोगी,
 भ्रूयप्रिय। (पाँचांग दिवावारी)
 स्त्री की कुण्डली हो तो स्त्री चंचल स्वभाव की, विनयहीन, क्रूर शरीर,
 रोगग्रस्त, दीर्घद्वेषी, अल्पधनवती, बचपन में रोगिणी, शत्रु से परास्ता चन्द्र बली
 हो तो अत्यंत सुख (स्त्री जातक विज्ञान)

७) सप्तम भाव में हो तो जातक को स्त्री (स्त्री की कुण्डली हो तो
 पति) का पूर्ण सुख नहीं प्राप्त होता। अद्यपि जातक सुन्दर,
 सुहोमित, सुशील होता है भाव्य भी उसका साथ देता है परंतु
 पति (स्त्री पति) के सम्बन्ध में योग शुभ नहीं। (कुण्डली दर्पण)
 यदि कुण्डली की गई कुण्डली को देखें। दाम्पत्य सुख सप्तम
 भाव में देखा जाता है। इस कुण्डली में चन्द्र सप्तम में नीच

चन्द्र

हुआ पडा है, साथ ही सप्तमेश मंगल ने षष्ठ भाव में केतु के साथ गठबंधन कर रहा है, फलस्वरूप भारक सा हो गया है। चन्द्र भी अकारक है, साथ ही सप्तम भाव पर किसी शुभ ग्रह की दृष्टि नहीं। अतः दाम्पत्य सुख कम है।



एक ऐसी स्त्री की कुण्डली जो विवाह के एक सप्ताह पूर्व विधवा हो गई। (कुण्डली दर्पण)

जातक सम्य, धैर्यवान, नेता, विचारक, प्रवासी, जलयात्री, अभिमानी, व्यापारी, वकील, प्रसिद्ध, शीतल स्वभाव व स्फूर्तिवान (पाँचाम दिवाकर) स्त्री की कुण्डली हो तो स्त्री चतुर, पतिप्रिया, तेजस्विनी, ऐश्वर्यसम्पन्न, मधुर भाषिणी, विवेकयुक्त, सुखी, सुन्दर व गुणवान पति। चन्द्र मीन हो तो पति सुख से वंचित (स्त्री जातक लेख)

च) यदि अष्टम भाव में हो तो जातक की कुण्डली में अगर मीन हो तो शीघ्र मृत्यु परंतु यदि बली चन्द्र स्वयं की राशि शुक्र की राशि, बुध की राशि में हो तो जातक को साँस की बीमारी या दिल के दोरे की वजह से मृत्यु होती है। (कुण्डली दर्पण) जातक विचित्रोग्री विकारग्रस्त, प्रमेहरोगी, कामी, व्यापारसिलमन्त्राल, स्वाभिमान, बंधन से दुखी, ईर्ष्यालु (पाँचाम दिवाकर) स्त्री की कुण्डली हो तो स्त्री कुरूप, विद्रूप अवयवों वाली, लोचनी दाहिनी, निन्दिता चन्द्र अशुभ हो तो बाल्याकाल में मृत्यु। गुरु केन्द्रस्थ व शुभ ग्रह की दृष्टि हो तो दीर्घायु (स्त्री जातक लेख)

६) नवम भाव में चन्द्र की स्थिति अनुकूल होती है। जातक सौख्य में डूब जाता है। भाग्य निरंतर उसका साथ देता है। जातक संदर्भशील नेतृत्व करने की क्षमता वाले, विपरीत से विपरीत स्थितियों में भी दीमागी संतुलन बनाए रखते हैं। जीवन का मध्यकाल उन्नत, शत्रु विजयी, धर्म के क्षेत्र में सहिष्णु, राजनीतिक क्षेत्र में सफल। जातक धनवान, विनम्र, विपन्न का भी हित चाहने वाला होता है। (कुण्डली दर्पण)

जातक सन्तति सम्पत्ति युक्त, धर्मत्मा, कार्यशील, प्रवासप्रिय, न्यायी, चंचल, विद्वान्, विद्याप्रिय, साहसी, अल्पभ्रातृवान्। पाँचांग विवाह।

स्त्री की कुण्डली हो तो स्त्री सुन्दर, पतली कमरवाली, सुन्दर पुत्र, सेवकों से युक्त, सुखी, धर्मत्मा, सौभाग्यावती। चन्द्र त्रीण हो तो धर्म व सत्य से रहता। (स्त्री जातक विज्ञान)

७) दशम भाव में हो तो जातक का बचपन अत्यंत सुंदरता से बीता है। भाग्य साथ देता है, १६ वर्ष के बाद उन्नति। जातक स्वस्थ, सुंदर, कुलीन, गुणवान्, समय की नाजूकता को पहचानने वाला, नौकरी में लाभ, यदि चन्द्र बली हो तो जातक लोकप्रिय होता है, आकर्षक व्यक्तित्व, शत्रुओं में भी प्रशंसनीया। यदि चन्द्र त्रीण हो तो जातक वृद्धावस्था में स्वास्थ्य रोग से पीड़ित, मातृ धन से वंचित रहता है। (कुण्डली दर्पण)

जातक कार्यकुशल, दयालु, निर्बल बुद्धि, व्यापारी, कार्य प्रशयण, सुखी, यशस्वी, विद्वान्, कुल दीपक, संतोषी, लोकहित प्री, मानी, प्रसन्नचित्त, दीर्घायु।

पाँचांग विवाह। स्त्री कुण्डली में

जातक स्त्री पुण्यशील, सत्यवादिनी, संतुष्ट, होष्ट, दानी, पति पुत्र धन से युक्त। चन्द्र त्रीण हो तो दुबली व कास-रेखा। (स्त्री जातक विज्ञान)

११) एकादश भाव में हो तो जातक साहसी, दृढ़ निश्चयी, हठी, नेतृत्व की क्षमता वाला, सूझबूझ, शत्रु विजयी, युवावस्था में प्रसिद्ध हो जाता है। इनका बचपन साधारण स्तर का होता है, जीवन के १६वें वर्ष के बाद भाग्योदय, नौकरी में हो तो उच्च पदाधिकारी, व्यापार में भी लाभ, धन का अभाव नहीं, जीवन की आवश्यकताएं सहज ही पूरी हो जाती हैं। जातक की तिवान, मौलिक होते हैं। (कुण्डली दपण)

जातक चंचल बुद्धि, गुणी, सन्तति, सम्पत्तियुक्त, सुखी, लोकप्रिय, यशस्वी, दीर्घायु, मन्त्रज्ञ, परदेसप्रिय, राज्यकाव्यदक्ष (पांचांग दिवाकर) ~~मौलिक~~ स्त्री की कुण्डली में स्त्री दीन, अन्यायी, दरिद्री, नमाहीन, पापी, बहुत खर्चीली, सौभाग्यवती, धन-पुत्रों से सम्पन्न (स्त्री जातक विज्ञान)

१२) द्वादश भाव में हो तो नेत्ररोगी, चंचल, कफरोगी, क्रोधी, एकाग्रतमिय, चिन्ताशील, मृदुभाषी, व्यथी होता है। (पांचांग दिवाकर) स्त्री की कुण्डली में स्त्री दीन, अन्यायी, दरिद्री, नमाहीन, पापी, बहुत खर्चीली, शीण नेत्रों वाली, दुष्ट रिक्ता, विकट रूप व बाल्यकाल में रोगिणी (स्त्री जातक विज्ञान)

मंगल

१) प्रथम भाव में हो तो रुखापन, चेहरे पर रक्तिमा, साहसी, स्वस्थ, दया आकृति, धीरेबाज, स्वार्थी, अपने सिद्धांतों पर दृढ़। (कुण्डली दर्पण)
 जातक क्रूर, साहसी, चपल, महत्त्वकांक्षी, गुप्तरोगी, लौहधातु एवं चोटासिसे, कष्ट युक्त, व्यवसाय में हानि। (पांचांग दिनाकर)
 स्त्री की कुण्डली में स्त्री रक्त दोष से पीड़ित, भाग्यहीन, पराक्रमहीन, अभिमानी, पति से तिरस्कृत, दुर्बल, बाल्यकाल में रोग, सुखों से रहित, दांत रोग, दृष्टि कृष्ण वर्ण। (स्त्री जातक विज्ञानी)

२) द्वितीय भाव में हो तो जातक आर्थिक दृष्टि से कमजोर, विद्या के क्षेत्र में कमजोर तथा विद्या प्राप्ति में रुकावटें आती रहती हैं। जातक बातचीत में पटु, सेल्स मैन के रूप में सफल। (कुण्डली दर्पण)
 जातक कटुभाषी, धनहीन, निर्बुद्धि, पशुपालक कुटुम्ब क्लेशवाला, चोर से भस्ति, धर्म प्रेमी, नेत्र रुग्ण रोगी, कटु तिवसरस प्रिया। (पांचांग दिनाकर)
 स्त्री की कुण्डली में स्त्री, दरिद्र, कुबुद्धि, रोगिणी, कामी, दुर्बल, गृहकार्य में कुशल, सुख भोगिनी, जमाशील, पति जुझारी, अनेक पुरुषों की आश्रित। (स्त्री जातक विज्ञानी)

३) तृतीय भाव में हो तो जातक सीमित साधन होने पर भी अडिग जीवन में कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है तथा ये अपनी गलत नीतियों को लेंते हैं। व्यक्ति दृढ़ निश्चयी, यात्राओं का शौकीन, जो प्रशंसा में विशेष लाभ नहीं, समाज में आदरणीय, पारिवारिक जीवन सुखी व निहाल सामान्य, खतरों से खेलने का शौकीन,

मंगल

नए विचारों को अपनाना इनका स्वभाव होता है। राजनीति पद्धति
ऐसा जातक जीवन का संबंध ही निर्माता होता है। (कुण्डली दर्पण)
जातक प्रसिद्ध, शूरवीर, धैर्यवान, साहसी, सर्वगुण, बन्धुहीन, बलवान,
प्रदीप्त जठराग्निवाला, आत्मकष्टकारक, कटुभाषी। (पांचांग दिवाकर)
स्त्री की कुण्डली में मंगल स्वराशि या उच्च तो स्त्री सौभाग्यवती लोगों
की प्रिया मंगल मित्र या शत्रु प्रेमी होती धनहीन। भाईयों का सुख कम। स्त्री जात
विभाग

४) यदि चतुर्थ भाव में हो तो जातक की प्रगति शनैः-शनैः होती
है। पिता से विचारों में मतभेद। नौकरी के लिए कठोर संघर्ष
करना पड़ता है। जातक आत्मविश्वासी, संघर्षशील, माता के लिए
आदर और क्रोधा, मंगल की दशा में जातक को वाहन सुख की
प्राप्ति, राजनीति में सफल, परिस्थिति एवं मनुष्य को भांपने
की शक्ति। पारिवारिक जीवन सुखी, संतुष्ट होता है।

जातक वाहनसुखी, सन्तानवान, मातृसुखहीन, प्रवासी, अग्निभय
युक्त, ऊपमृत्यु या उपमृत्यु, कृपक, बन्धुविरोधी, लाभ युक्त होता है। (पांचांग दिवाकर)
स्त्री की कुण्डली में स्त्री सुखहीन, धनहीन, तिरस्कृत, क्रोधी, रोगिणी,
कुबुद्धि, पर-पुरुष पर आसक्त, लोभी, भ्रातृ सुख रहित, गृह सुख रहित। स्त्री जात
विभाग

५) यदि पंचम भाव में हो तो जातक पुत्र रहित होता है। सौभाग्य
निर्बल हो तो पुत्रों द्वारा प्रतिपादित पाप कृत्यों में रत्नादि
जातक कई बाधाओं का सामना करता है। जातक सांईसी, पुण्य
संघर्षशील। पत्नी के साथ मतभेद, फिर भी कोई सौभाग्य

मंगल निकल जाता है डाक्टर या वैद्यक आदि क्षेत्र में जातक सफल (कुण्डली दर्पण)

जातक अग्रबुद्धि, कपटी, व्यसनी, रोगी, उदररोग, कुशशरीर, मुष्ठांग-रोगी, चंचल, बुद्धिमान, सन्ततिकलेशयुक्त (पांचांग दिवाकर)

स्त्री की कुण्डली में स्त्री लज्जाहीन, संतानहीन, कुपुत्रवती, बन्धु सुखहीन, पापी, दुखी। मंगल स्वया उच्च क्षेत्री हो तो एक पुत्र। [स्त्री जातक विज्ञानी]

यदि षष्ठ भाव में हो तो जातक युद्धस्थल में मृत्यु प्राप्त करता है अथवा शत्रु संघर्ष करते हुए विजय लाभ करते हुए मरता है।

राजनीतिक क्षेत्र में सफल, कठोर हृदय, शत्रु विजयी। यदि लग्न सिंह हो तो पूर्ण गृहस्थ जीवन भोगता है। उच्चाधिकारी, शासक या मंत्री।

यदि मंगल शत्रु ग्रहों से दृष्ट हो तो जातक का ऐक्सीडेंट या मंगमंग। यदि मंगल शनि एक साथ शुभ ग्रहों से अदृष्ट हो तो जातक की मृत्यु पशु के कुचलने से होती है अथवा आप्रेशन के समय मरता है।

यदि राहु व मंगल बलवान होकर स्थित हो तो जातक नामहत्या करता है तथा सम्बन्धियों को दुख देता है। यदि जातक का कुल लग्न हो तो जातक पाप कर्मों में रत रहता है। (कुण्डली दर्पण)

जातक प्रबल जठराग्नि, बलवान, धैर्यशाली, कुलवन्त, शत्रुहन्ता, क्रोधि, पुलिस अफसर, दायरोगी, क्रोधी, रक्तविकारयुक्त, फिजूलखर्ची।

पांचांग दिवाकर)

स्त्री की कुण्डली में स्त्री शत्रु रहित, स्वस्थ, धनवती, पति व पुत्र सुखयुक्ता।

मंगल निर्बल हो तो अल्प रोगमय। [स्त्री जातक विज्ञानी]

मंगल

ग) यदि सप्तम भाव में हो तो जातक की स्त्री दुर्बुद्धि एवं कलह प्रिये।
यदि मंगल नीच या शत्रु मैत्री हो तो अथवा अष्टमेश हो तो एक से
अधिक शादियाँ होती हैं। यदि मंगल स्वराशिगत हो तो जातक स्त्री
कारण दुखी रहता है तथा साधारण स्तर का दाम्पत्य जीवन रहता है।
जातक स्त्री-दुखी, वात रोगी, राजभीरु, शत्रु कोपी, कटुभाषी, निर्धन, मूक,
घातकी, धननाशक, ईर्ष्यालु। [पाँचाग दिवाकर]
स्त्री की कुण्डली में स्त्री मंगल शुभ ग्रह से दृष्ट न हो तो स्त्री कुरूप, दुष्ट,
ऐश्वर्यहीन, गुणहीन, बाल-विधवा। मंगल शुभ हो तो दुष्ट, दुखी, चंचल, पर-पुरुष
आकर्षित। [स्त्री जातक विजय]

च) यदि अष्टम भाव में हो तो तथा धनु लग्न हो तो जातक की मृत्यु
जल में डूबने से। मंगल मीन हो तो जातक की जल में से मृत्यु।
यदि मंगल धनु या मीन राशि का हो तो जातक कई बार मरते-
बचता है। उसका जीवन जेखिम से भरा तथा मृत्यु से संघर्ष करने
में आनंदित होता है। [कुण्डली दर्पण]

जातक व्याधि ग्रस्त, व्यसनी, मद्यपायी, कठोर भाषी, उन्मत्त, नेत्र-
रोगी, शस्त्रचोर, अग्निभीरु, संकोची, स्वतंत्र विचार व धन विन्तायुक्त।
स्त्री की कुण्डली में स्त्री केश, कृष्णवर्ण, दुखी, दारिद्र्य, रुग्ण, कालिङ्गी,
हिंसक, दुखी, मौत पानी में डूबकर या पतिका मौत। [स्त्री जातक विजय]

घ) यदि नवम भाव में हो तो जातक वीर, साहसी, कर्मठ, परिश्रमी। यदि
मंगल शत्रु मैत्री हो तो रोगी। प्रारम्भिक वर्षों में दुखी, आजीविका
के लिए कठोर परिश्रमी। मंगल मकर का या स्वराशिगत हो

तो भाग्यवृद्धि में सहायक होता है। विद्या में रुचि, जातक सफल लेखक या पत्रकार, प्रकाशक, संचयित्र, नम्र स्वभाव, सरल जीवन व्यतीत करने का इच्छुक होता है। (कुण्डली दर्पण)

जातक द्वेषी, अभिमानी, क्रोधी, जेता, अधिकारी, ईर्ष्यालु, उत्पलाभ, यशस्वी, उत्तम वाहन से युक्त असंतुष्ट व भ्रातृविरोधी (पाँचाग दिवाकर) स्त्री की कुण्डली हो तो स्त्री सुन्दर, रोगी, तामसी, धर्महीन, भागहीन, जन-हीन, बड़े परिवार वाली, संगीत की रुचि व प्रसिद्धि [स्त्री जातक विज्ञानी]

१०) यदि दशम भाव में हो तो जातक सफल व्यापारी, नौकरी से लाभ नहीं, बाल्यकाल गरीबी में व्यतीत, माता की मृत्यु बचपन में, शिक्षा में कठिनाइयाँ, जातक परिश्रमी, संघर्षशील, सूझ-बूझ से व्यापार में उन्नति करते हैं। धोवनावस्था संघर्षों में परंतु वृद्धावस्था सफला जीवन में ये लक्ष्य प्राप्त कर लेते हैं। (कुण्डली दर्पण)

जातक धनवान, कुलपति, सुखी, यशस्वी, उत्तम वाहन, स्वाभिमान, सन्तति कष्टवाला (पाँचाग दिवाकर)

स्त्री की कुण्डली में हो तो स्त्री अधर्मा, शीलहीन, लज्जाहीन, रतिप्रियस्क, कुल में श्रेष्ठ, परोपकारिणी, संतुष्ट, कार्यकुशल, पति उच्चपदस्थ व आभूषण सम्पन्न [स्त्री जातक विज्ञानी]

११) यदि एकादश भाव में हो तो जातक पिता के धन को नहीं भोग पाता, पैतृक सम्पत्ति नहीं के बराबर मिलती है। शिक्षा काल में व्याधान आते रहते हैं। मंगल स्वमूढ़ हो तो जातक को लाभ कराता है। जातक आजीविका के लिए कठोर परिश्रमी, सठ बरस से भाग्योदय

मंगल

भाइयों से विशेष लाभ नहीं परजातक भाइयों की सहायता करने
का इच्छुक, तुरंत निण्ठी, प्रौढावस्था सफल। (कुण्डली दर्पण)
जातक करु भाषी, दम्भी, झगडालू, क्रोधी, प्रवासी, साहसी, लाभ
करने वाला, न्यायवान, धैर्यवान (पाँचाग दिवाकर)
स्त्री की कुण्डली हो तो स्त्री धर्मसिक्त, पति से प्रेम, श्रेष्ठ, धनी, लाभकारी
पुत्र-पौत्र से युक्त, कार्य-कुशल [स्त्री जातक विज्ञान]

१२) यदि द्वादश भाव में हो तो नेत्ररोगी, स्त्रीकष्ट, उग्र, क्रोधी, झगडालू,
मूर्ख, अथ शील प्रकृति (पाँचाग दिवाकर)
स्त्री की कुण्डली हो तो स्त्री दुर्बल, मध्यपान प्रिय, आतुर, गुणहीन,
घातकी, खर्चीली, धनहीन, क्रोधी, पति-सुखहीन तथा बन्धुओं की विरोधिनी [स्त्री जातक विज्ञान]

बोध

१) यदि प्रथम भाव में हो तो जातक का चेहरा सुन्दर, चेहरे पर रस्मिमा, कुछ पीलापन लिए हुए गौरवर्ण, छिगना कद, पुष्ट शरीर।
जातक दीर्घायु, तर्किक, गणितज्ञ, विनोदी, उदार, वैद्य, विद्वान्, स्त्री प्रिय, मिष्टभाषी, मितव्ययी [पाँचाग दिवावर]

स्त्री की कुण्डली हो तो स्त्री रूपवती, धर्मात्मा, नीतियुक्त, सत्यवादी, सर्वप्रिय, धनधान्यसम्पन्न, पति द्वारा मान्य, पण्डिता, धैर्यवान्, सुशीला, अधिक सज्जन, गृह कार्य में कुशल, प्रियवादिनी, शिल्पज्ञ, दानादि करनेवाली। [स्त्री जातक विज्ञानी]

२) यदि द्वितीय भाव में हो तो जातक धार्मिक मामलों में कहूर, अर्थ संचय में प्रवीण, धन का अभाव, भाषण करने में पटु, लोगों को अपने पक्ष में करने की कला में प्रवीण, उद्योगों में धन लगाने का इच्छुक रहता है। [कुण्डली दर्पण]

जातक वक्ता, सुन्दर, सुखी, गुणी, मिष्ठान्नभोजी, दलाल या कमील, मितव्ययी, संग्रही, सत्कार्य कारक, साहसी। [पाँचाग दिवावर]

स्त्री की कुण्डली में स्त्री रूपवती, सुन्दर, धनवती, शुद्ध आचरण, धार्मिक, कोमल हृदय, कार्य कुशल, संतान सुख से युक्ता। [स्त्री जातक विज्ञानी]

३) यदि तृतीय भाव में हो तो जातक हितकारी, स्मरण शक्ति अद्भुत, परिस्थिति भाँपने की क्षमता वाला। पढ़ने-लिखने का शौकीन, साहसी, पारिवारिक जीवन सुखी। [कुण्डली दर्पण]

[जन्म जातक कार्यदण्ड, परितामी, भीरु, लेखक, समुद्रादिक शास्त्र]

बुध

का जाता, सम्पादक, कवि, सन्ततिवान, विलासी, अल्प भ्रातृवान, चंचल,
व्यवसायी, यात्राशील, धर्मप्रिया, मित्रप्रेमी, सद्गुणी [पाँचाग दिवाकर]
स्त्री की कुण्डली में स्त्री धर्मिणी, पुत्रवती, मानवती, धनवती, योडु
सहोदर, अपने कर्म करने वाली, दुखी, कुटिल हृदय [स्त्री जातक विज्ञानी]

४) यदि चतुर्थ भाव में हो तो जातक सफल कूटनीतिज्ञ। बुध उच्च या
कारक हो तो जातकराजदूत। बुध नीच हो तो जातक सफल राजनीतिज्ञ
शिक्षा की दृष्टि से उत्तम, भाषण एवं लेखन में प्रवीण, जनता को
सम्मोहित करने की शक्ति वाला होता है [कुण्डली दर्पण]

जातक पण्डित, भाग्यवान, वाहन सुखी, दानी, स्थूलदेही, आलसी,
गतिप्रिय, उदार, बन्धुप्रेमी, विद्वान, लेखक, नीतिज्ञ, नीतिवान [पाँचाग दिवाकर]
स्त्री की कुण्डली में स्त्री धर्मरता, प्रख्यात कुल में उत्पन्न, धनी, सज्जन,
से युक्त, अधिक कार्य वाली, रोषिणी, दुर्बल, चंचल, दास्यप्रिया, सहोदर सुख
रहित होती है। [स्त्री जातक विज्ञानी]

५) यदि पंचम भाव में हो तो जातक सौभाग्यशाली, स्त्री के मामले में
परम सौभाग्यशाली, स्त्री गुणवान, समझदार होती है। संतान की तरफ
से भी सौभाग्यशाली, कन्या संतान अधिक, जातक है सुख, प्रसन्न कि
छिनेदी, मधुर जीवन, आस्तिक, पवित्र, गद्दालु, सेक्रेट्री, सचिव या निरिस्त
हो सकता है। तीव्र बुद्धि, संघर्षशील, प्रेम के क्षेत्र में सफल होता है।

जातक प्रसन्न, कुशाम्बुद्धि, गण्यमान्य, सुखी, सदाचारी, वाद्यप्रिय
कवि, विद्वान, उद्यमी [पाँचाग दिवाकर]
स्त्री की कुण्डली में स्त्री दारिद्री, दुष्ट, कलहप्रिय, पुत्रवती, पति सुखमय,
सौंदर्यवती, धनवती, सुखी, गुरुजनों की भक्त [स्त्री जातक विज्ञानी]

४) यदि छठे भाव में हो तो जातक चिड़चिड़ा, क्रोधी, दूसरों की सलाह पर ध्यान नहीं देता, शिक्षा अपूर्ण, परेशानियों से ग्रस्त, हीनभावना का शिकार यदि बुध एवं शनि हों तो नौकरी में विश्वासघात, आलसी, निष्कर्षा, शत्रुओं से भयभीत एवं कायर होता है। [कुण्डली दर्पण]

जातक विवेकी, वादी, कलहप्रिय, आलसी, रोगी, अभिमानी, परिक्रामी, दुर्बल, कामी, स्त्रि प्रिय [पाँचाग दिवाकर]

स्त्री की कुण्डली हो तो स्त्री दयालु, शत्रुहन्ता, अल्पायु। बुध शुभ ग्रह से युक्त हो तो रोगी, शत्रु से भया। बुध पाप ग्रह दृष्ट हो तो निरोगी, शत्रुहन्ता [स्त्री जातक विज्ञान]

७) यदि सप्तम भाव में हो तो जातक स्त्री के पक्ष से सौभाग्यशाली जातक की स्त्री दूरदर्शी, आभूषणप्रिय, धन की इच्छुक, राजनीति में सफल होती है। [कुण्डली दर्पण]

जातक सुन्दर, विद्वान्, कुलीन, व्यवसायकुशल, धनी, लेखक, सम्पादक, उदार, सुखी, धार्मिक, अल्पीय, दीर्घायु [पाँचाग दिवाकर]

स्त्री की कुण्डली हो तो स्त्री चतुर, विनम्र, उत्तम आचरण, शास्त्रप्रिय, सुखी, चंचल, रूपवती, गृहकार्य में कुशल, सुन्दर पति। [स्त्री जातक विज्ञान]

बुध

च) यदि डाष्टम भाव में हो तो जातक जितेन्द्रिय, सत्यावादी, सुन्दर, शत्रुहर्त्र, बाल्यावस्था में सिर में चोट जिससे ज्योति मंद पड़ जाती है। अतिथियों का सत्कार करने वाला, सफल। यदि बुध अकारक हो कामुक, परस्त्री भ्रमन प्रसंग से मृत्यु प्राप्त करता है। [कुण्डली दर्पण]

जातक दीर्घायु, लब्धप्रतिष्ठ, अभिमानी, कृषक, राजमान्य, मानसिक दुःखी, कवि, वक्ता, न्यायधीश, मन्त्री, धनवान, धर्मार्त्ता [पाँचांग दिवाकर]
स्त्री की कुण्डली हो तो स्त्री युद्धी, कृतघ्न, नीतिवान, धर्म-रहित, अभिमानी, सत्यावादिनी, दानी, संतुर्मी, अल्पायु, धनहीन, पाप ग्रह से युक्त हो तो [स्त्री जातक विज्ञान]

द) यदि नवम भाव में हो तो जातक चतुर एवं विनम्र, परितोषी, प्रसिद्ध, निरन्तर घात-परिघातों का सामना करने वाला, संकटों में मुस्कराने वाला होता है। १७वें वर्ष से भाग्योदय, पूर्ण सुखभोगी, उत्तम कोटि के वाहन प्राप्त करता है। पारिवारिक जीवन सुखद एवं सफल। [कुण्डली दर्पण]
जातक सदाचारी, कवि, गवैया, सम्पादक, लेखक, ज्योतिषी, विद्वान, धर्मभरु, व्यवसाय प्रिय, भाग्यवान [पाँचांग दिवाकर]
स्त्री की कुण्डली हो तो स्त्री विनयशील, शांत, मिष्ट भाषिणी, कार्यकुशल, कोमल, भाग्यवान, धार्मिक, पतिव प्रिय, सुख युक्त, धनवती, सुन्दर, सुशील। बुध पाप ग्रह से युक्त हो तो विपरीत फल। [स्त्री जातक विज्ञान]

१०) यदि दशम भाव में हो तो जातक विनीत, कुशल प्रशासक, निम्न स्तर से उन्नति करते हुए उच्च पद पाने में समर्थ, सफल राजनीतिज्ञ, मौलिक, अच्छी राजनीति, बाल्यावस्था साधारण, साधारण कुल में जन्म पर विचारों व कार्यों के फलस्वरूप विख्यात, ईमानदार, छल-कपट से

दूर, व्यस्तित्व उच्च एवं भव्य होता है। (कुण्डली दर्पण)

जातक सत्यावादी, विद्वान्, लोकमान्य, मनस्वी, व्यवहार कुशल, कवि, लेखक, न्यायी, भाग्यवान्, राजमान्य, मातृ पितृ भक्त, जीमींदार (पाँचांग दिवाकर) स्त्री की कुण्डली हो तो स्त्री सत्कामी, नीतिवान्, विवेकी, पति को मान्य, बहुधन्य, आज्ञाकारी, कार्य कुशल, रूपवती, धनवती, मिलभाषी (स्त्री जातक विज्ञानी)

११) यदि एकादश भाव में हो तो जातक चतुर, परिस्थिती के अनुकूल कार्य करने वाला, दीन भावना से पीड़ित परंतु साहसी, दृढ़ निश्चयी, परिणामी। नौकरी में अधिक लाभ नहीं, परिणामी। भाईयों से विशेष लाभ नहीं। जातक 'सेल्फ मेड मेन' होता है। उच्चाधिकारियों से विशेष सम्पर्क, जीवन का मध्यकाल सफल, आमदनी के कई स्तोत्र, लेखन, सम्पादन, प्रकाशन से लाभ। जीवन में सफल होता है। (कुण्डली दर्पण) जातक दीर्घायु, योगी, सदाचारी, धनवान्, प्रसिद्ध, विद्वान्, गायन-श्रिय, ईमानदार, सुन्दर, पुत्रवान्, विचारवान्, शत्रुनाशक (पाँचांग दिवाकर) स्त्री की कुण्डली हो तो पतिव्रता, बन्धुजनमान्य, धन कालेन देन करने वाली, लाभवित, सुन्दर, दितैषी, श्यामवर्ण, कृश, सन्तान सुख युक्ता। (स्त्री जातक विज्ञानी)

१२) यदि द्वादश भाव में हो तो जातक विद्वान्, आलसी, अल्पभाषी, शास्त्रज्ञ, लेखक, वेदान्ती, सुन्दर, वकील, धर्मार्थी (पाँचांग दिवाकर) स्त्री की कुण्डली हो तो लडाकू, व्याकुल, गुणहीन, निरसकृत, शरीरी, कुदिल, धनी, दानी, पर पुरुष पे आसक्त। (स्त्री जातक विज्ञानी)

गुरु

१) यदि प्रथम भाव में हो तो जातक ऊँचा, लम्बा और दृढ़, पीतिमा, विशाल आँखें, उन्नत ललाट, भव्य आकृति होती है [कुण्डली दर्पण]
जातक ज्योतिषी, दीर्घायु, कर्तव्यपरायण, विद्वान्, कार्यकर्ता, तेजस्वी, स्पष्ट वक्ता, स्वाभिमानि, सुन्दर, विनीत, धनी, पुत्रवान्, राज्यमान्य, धर्माली [पञ्चम दितार]
स्त्री की कुण्डली हो तो स्त्री अत्यंत सुन्दर, सत्यवादी, गंभीर, सुखी, ज्ञेय, पति को अत्यधिक प्रिय होती है। [स्त्री जातक विज्ञान]

२) यदि द्वितीय भाव में हो तो जातक धार्मिक नेता, कवि लेखक अथवा सफल धर्मोपदेशक। लेखन से द्रव्योर्जन करता है। जातक सफल वैज्ञानिक, क्षेत्र अधिक, ससुराल से सहायता मिलती है तथा पदी-लिखी पत्नी प्राप्त होती है। [कुण्डली दर्पण]
जातक सुन्दर शरीर, मधुरभाषी, सम्पत्ति व संतानवान्, राज्यमान्य, लोकमान्य, सुकार्यरत, सदाचारी, पुण्यात्मा, भाग्यवान्, शत्रुनाशक दीर्घायु, व्यवसाय स्त्री की कुण्डली में स्त्री सुन्दर, धार्मिक, सौभाग्य, नीतिवान्, धनवती, ज्ञेय पति, उत्तम कुटुम्ब, सर्वत्र आदरणीय [स्त्री जातक विज्ञान]

३) यदि तृतीय भाव में हो तो जातक शुभ लग्नों से सम्पन्न, जीवन में उतार चढ़ाव, संघर्षशील परंतु मनबूत, साहसी, समर्थ की गम्भीरता को भाँप लेने वाला, शत्रु के क्षेत्र में सफल, एक से अधिक कार्यों में निष्णात तथा मन्त्रीनी कार्यों का शौकीन। यद्यपि शत्रुओं से कई बार

गुरु

घात खाने पड़ते हैं फिर भी अटूट हिम्मत, आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न, पारिवारिक जीवन भी सुखद होता है। [कुण्डली दर्पण]

जातक जितेन्द्रिय, मन्दाग्नि, शास्त्रज्ञ, लेखक, प्रवासी, योगी, आस्तिक, ऐश्वर्यामान, कामी, स्त्री प्रिय, व्यक्सायी, विदेश प्रिय, पर्यटनशील, वाहन युक्त स्त्री की कुण्डली हो तो स्त्री कुशल शरीर, मौखरहित, [पाँचाग (दिवाकर)] कृपण, नीचबुद्धि, भाई-सुख युक्त, पति प्रेमरहित, खर्चीली [स्त्री जातक विज्ञानी]

४) यदि चतुर्थ भाव में हो तो जातक दार्शनिक, उन्नति की ओर अग्रसर होता रहता है। समाजिक जीवन में ख्याति प्राप्त करने वाला, शत्रुओं में भी प्रशंसनीय, वाहन धन आदि की दृष्टि से सौभाग्यशाली, राजकीय नौकरी में प्रगति राने-राने होती है। धार्मिक कार्यों में रुचि होती है। [कुण्डली दर्पण]

जातक भोगी, सुन्दर, कार्यरत, उद्योगी, ज्योतिर्विद, सन्तानरायक, राजमान्य, लोकमान्य, मातृपितृ भक्त, यशस्वी, व्यवहारज्ञ [पाँचाग (दिवाकर)]

स्त्री की कुण्डली में स्त्री सुन्दरी, रूपवती, विद्वान, मौखशालिनी, यशस्विनी, धन-धान्य युक्त, प्रसन्नचित्त, कार्य कुशल [स्त्री जातक विज्ञानी]

५) यदि पंचम भाव में हो तो जातक तर्कशास्त्र, व्याकरण, हिस्ती, कानून में रुचि रखने वाला होता है। व्यक्त मंत्र-तंत्र, वेद पाठ आदि में भी सिद्ध होता है। पत्नी के मामले में सौभाग्यशाली, जातक की पत्नी सुन्दर गुणवान, पतिव्रता होती है। पति-पत्नि में गहरा प्रेम, स्मरणशक्ति, कमजोर पर अधिकारियों का प्रिय। जातक सेक्रेटरी, सलाहकार होता है।

गुरु
सजावट की ओर विशेष ध्यान। उत्तम कोटि के मित्र, जात्मगंभीर,
धैर्यपूर्वक विपन्न की बात सुनने वाला, सहिष्णु, प्रभावान, परोपकारी,
चतुर, धनवान होता है। संतान सुख ज्ञेष्ट तथा उच्च वाहन सुख
प्राप्त करता है। [कुण्डली दर्पण]

जातक आस्तिक, ज्योतिषी, विवेकी, प्रसिद्ध, विद्वान्, सुकर्मित, दुर्बल, उदार,
कुलज्ञेष्ट, सदैव से धन प्राप्त, सन्ततिवान्, नीतिविशारद। पाँचांग विवाकर।
स्त्री की कुण्डली में स्त्रीनिष्पाप, सत्यपथी, यशस्विनी, प्रतिष्ठित, नीति
युक्त, व्रतधर्म में दक्ष, सात पुत्र, उत्तम बुद्धि, मधुरभाषी, पुत्रिसुख युक्त, पूरा ज्ञान
जाननेवाला [स्त्री जातक विज्ञान]

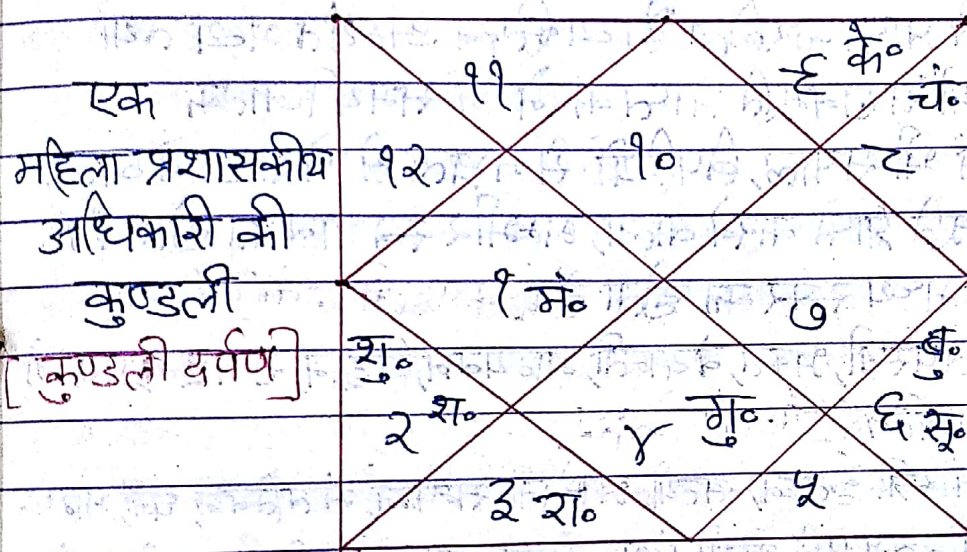
द्य यदि छठे भाव में हो तो जातक समाज एवं जाति में अपमानित,
निरंतर व्यंग्य वाणों का शिकार, आलसी, छिद्रान्वेषी, हाथ की सफाई
दिखाने वाला, शत्रुओं से भयभीत, अभाम्यशाली, स्वस्थ साधारण स्तर
का होता है। [कुण्डली दर्पण]

जातक मधुरभाषी, ज्योतिषी, विवेकी, प्रसिद्ध, विद्वान्, सुकर्मित, दुर्बल, उदार,
लोकमान्य, नीरोगी, प्रतापी। पाँचांग विवाकर।

स्त्री की कुण्डली में स्त्रीनीतियुक्त, ज्ञेष्ट, शारीरिक कष्ट व उपचार पानेवाला
विपत्तियों से ग्रस्त, शत्रुरहित, सत्यावादी, सुकीर्ति, घर के कार्य में आलसी। गुरुनीयका
हो तो रोगिणी [स्त्री जातक विज्ञान]

अ यदि सप्तम भाव में हो तो जातक की पत्नी सफल एवं समझदार,
मानवीय गुणों से विभूषित ऐसी स्त्री बहु सन्तानवाती होती है।
व्यक्ति का स्वस्थ उत्तम रहता है तथा राजा के तुल्य सुख प्राप्त करता
है। व्यक्ति मजिस्ट्रेट, आफिसर, विद्वान्, कर्मकलाप्रिय, गुणज्ञ होता है।

हैं। नीचे एक शासकीय महिला अधिकारी की कुण्डली है जिसका पति भी उच्च पद पर स्थित है। गुरु उच्च राशि का होकर स्थित है फलस्वरूप सुन्दर एवं कुलीन पति मिला, इस स्त्री की अठारह संतान हुई क्योंकि पंचम भाव का स्वामी शुक्र भी अपनी राशि में है तथा चन्द्र की उच्च शुक्र योग प्रधान ग्रह है परंतु शनि भी शुक्र के साथ पड़ा है तथा लग्नेश की सप्तम भाव पर दृष्टि है। इसके अतिरिक्त शनि द्वितीयेश हो कर मारक बना भी जिसके कारण इस स्त्री की प्रांखों के सामने नौ संतान हुई। फिर भी गुरु, शुक्र बलवान हैं जिनके कारण संतानाभाव नहीं रहा।



जातक भाग्यवान्, विद्वान्, कर्मा, प्रधान, नम्र, ज्योतिषी, धैर्यवान्, प्रवासी, सुन्दर, स्त्रीप्रेमी, परस्त्रीरता [पंचांग दिवाकर]

स्त्री की कुण्डली में स्त्री ज्ञानी, गुणवती, शीलवती, कीर्तिमान्, शास्त्रज्ञ, उत्तम पति, पति प्रिया, शिषित, विजय, सुखी। [स्त्री जातक विज्ञानी]

४) यदि अष्टम भाव में हो तो जातक जीवन में कई तीर्थ यात्राएँ करता है। व्यक्ति चंचल तथा समय का पाबन्द, परंतु तुरंत निर्णय लेने में असमर्थ, स्त्री सुख ज्ञेय तथा योगाभ्यास में भी ध्यान देने वाला होता है। जातक दीर्घायु, शीलसम्पन्न, सुखी, शान्त, मयूरभाषी, विवकी, भयंकर, कुलदीपक, ज्योतिषी, लौभी, मुक्तरोगी, मित्रों द्वारा धननाशक [पंचांग दिवाकर]

गुरु

स्त्री की कुण्डली में स्त्री विशाल देह, व्यसनी, रोगी, पति के मन में परित्यक्त,
चंचल, तीर्थ, धन-वस्त्रादि का अभाव, पुत्र-पति के सुख से वंचित (स्त्री जातक विना)

८) यदि नवम भाव में हो तो अत्यंत शुभ जातक साधारण कुल में जन्म लेने पर भी उन्नति प्राप्त कर लेता है। व्यक्ति अत्यंत भव्य तथा सहज ही लोगों की सहानभूति प्राप्त करने में समर्थ। जातक राजनीतिक क्षेत्र में भी सफल, विपत्तियों से नम्रता से पेश आने वाला, लोगों की सहानभूति प्राप्त करने वाला, गम्भीर स्वभाव का होता है। पारिवारिक जीवन मध्य स्तर का होता है। (कुण्डली दर्पण)

जातक तपस्वी, भक्त, वेदन्ती, भाग्यवान्, विद्वान्, राजपूज्य, पराक्रमी, बुद्धिमान्, पुत्रवान्, धर्मन्तर्मा (पाँचाग दिवाकर)

स्त्री की कुण्डली में स्त्री कृतघ्न, सत्यी, भक्तिनी, सम्पन्न, संततिवान्, धनी, भाग्य-शालिनी, सौभाग्यवती, उत्तम पति, सुखी, ऐश-आराम सम्पन्न (स्त्री जातक विना)

९) यदि दशम भाव में हो तो जातक धार्मिक, धर्म जीवन पर हावी रहता है, धार्मिक कार्यों में बढ-चढकर भाग लेता है, विचारों में उज्ज्वलता प्राप्त करता है, व्यापार की अपेक्षा नौकरी में सफल। माता-पिता का आदर करने वाला, प्रसिद्ध, तीर्थयात्राएं खूब तथा सरल जीवन बिताने का इच्छुक रहता है। (कुण्डली दर्पण)

जातक सत्कर्मी, सदाचारी, पुण्यात्मा, ऐश्वर्यवान्, साधु, चतुर, न्यायी, प्रसन्न, ज्योतिषी, सत्यावादी, शत्रुहन्ता, राज्यमान्य, स्वतंत्र विचार, मातृ पितृ भक्त, लाभवान्, धनी, भाग्यवान् (पाँचाग दिवाकर)

स्त्री की कुण्डली हो तो स्त्री गुणवती, गुणज, सत्कर्मी, प्रख्यात, पुण्यशीला, दास-
दासीयों वाली, धनी, आभूषण युक्त, पति-पुत्र सुख से सम्पन्न, गृहकार्य में कुशल (स्त्री जातक विज्ञानी)

११) यदि एकादश भाव में हो तो अत्यंत शुभ जातक शान्त, धीर, मन्त्री, कुशल प्रशासक, बाल्यावस्था सानंद, १६वें वर्ष के बाद से भाग्योदय आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न, आय के कई स्तोत्र, सम्पत्ति की ओर सचेष्ट जीवन का मध्यकाल संघर्षशील, अकारण ही अनेक शत्रु हो जाते हैं परंतु ये विपत्तियों से घबराते नहीं। परितामी, लेखन प्रकाशन के क्षेत्र में प्रसिद्ध, पारिवारिक जीवन सामान्य, भाईयों से विशेष लाभ नहीं, विचार मौलिक एवं उच्च रहते हैं, जीवन में सफल (कुण्डली दर्पण)

जातक सुन्दर, नीरोगी, लाभवान, व्यवसायी, धनिक, संतोषी, अल्प संतान, राजपूज्य, विद्वान, बहुस्त्रीयुक्त, सद्व्ययी, परा कूर्मी (पांचांग दिवाकर)
स्त्री की कुण्डली हो तो स्त्री जितेन्द्रिय, कीर्तिमती, सम्पन्न, सत्यी, शिल्पकला कुशल, धर्मत्मा, सुखी, पति प्रिया, कला को जानने वाली, ऐश्वर्यशाली (स्त्री जातक विज्ञानी)

१२) यदि द्वादश भाव में हो तो जातक जीवन काल अथ एक मरण के लिए भी आँखों से ओझल नहीं होने देते, निरन्तर निस्वार्थ परिताप करते हैं, वाहन योग प्रबल, शनैः जीवन की सभी आवश्यकताएँ पूरी हो जाती हैं। आय के एक से अधिक स्तोत्र, व्यय भी अधिक रहता है, आर्थिक जीवन साधारण, ईमानदार, सद्गुणों से अलंकृत ऐसे जातक सफल होते हैं। (कुण्डली दर्पण)

जातक आलसी, मितभाषी, सुखी, मितव्ययी, योगाभ्यासी,

द्वारु

परपकारी, उदार, शस्त्रज्ञ, सम्पादक, सदाचारी, लोभी, यात्री, दुष्ट चित्तमान होता है। (पाँचाग दिवाकर)

स्त्री की कुण्डली हो तो स्त्री रुग्ण, लाभ-रहित, दुष्ट, परधनी, कुटिल, बुद्धिहीन, धनहीन, मानहीन, लज्जाहीन, इधर-उधर घूमने वाली। (स्त्रीजातक विज्ञान)

शुक्र

१) यदि प्रथम भाव में हो तो जातक सुन्दर, परिवार से स्नेह करने वाला, स्त्रियों पर अनुसक्त, सुन्दर स्त्रियों से संपर्क में रहने का इच्छुक, कोमल, गेहूँ का रंग होता है। [कुण्डली दर्पण]

जातक दीर्घायु, सुन्दर, ऐश्वर्यावान्, सुखी, मधुरभाषी, प्रवासी, विद्वान्, भोगी, विलासी, कामी, राजप्रिय। [पाँचांग दिवाकर]

स्त्री की कुण्डली में स्त्री सुन्दर, गोरी, सुशील, ज्येष्ठ, कार्यक्षम, स्वस्थ, भाग्यवती, धनी, मधुर बोलने वाली, धन-पुत्रादि युक्त, कला कुशल [स्त्री जातक विज्ञान]

२) यदि द्वितीय भाव में हो तो जातक का विस्तृत परिवार, जातक दूसरों से काम निकालवाने में चतुर, धन का अभाव नहीं रहता। व्यक्ति डॉक्टर, सफल पत्रकार अथवा व्यवसायी होता है। दृढ़ व्यक्तित्व तथा शत्रुओं को अपने वश में रखता है। [कुण्डली दर्पण]

जातक धनवान्, मिष्ठान्नभोजी, यशस्वी, लोकप्रिय, जौहरी, सुखी, समर्थ, कुटुम्ब युक्त, कवि, दीर्घजीवी, साहसी, भाग्यवान् होता है। [पाँचांग दिवाकर]

स्त्री की कुण्डली हो तो स्त्री सत्कर्मी, भाग्यवान्, मृदुभाषी, प्रख्यात, आभरण सम्पन्न, सुन्दर, विद्वती, कार्य-कुशल, सुखी [स्त्री जातक विज्ञान]

३) यदि तृतीय भाव में हो तो जातक भाग्यहीन, यद्यपि उसके साथ धन्य रहता है परंतु वह उसे भोग नहीं पाता। स्मरणशक्ति प्रबल, साहसी, संगीत, काव्य, चित्रकलादि में प्रवीण। यदि शुक्र कारक हो तो सफल

शुक्र

लेखक या चित्रकार। आर्थिक चिंता से परेशान, परिरुमी, जीवन के मध्यकाल में कई बार यात्राएं भी करनी पड़ती हैं। पारिवारिक जीवन साधारण रहता है तथा सन्तान की ओर से भी विशेष लाभ नहीं रहता। जातक सुखी, धनी, कृपण, आलसी, चित्रकार, पराक्रमी, विद्वान, भाग्यवान, पर्यटनशील (पाँचाग दिवाकर)

स्त्री की कुण्डली में स्त्री दरिद्र, दुष्ट, बन्धु परित्यक्त, दुर्बला, कृपणी, धनहीन, कुटिल, कामी, साधुजनों का अनिष्ट करने वाली (स्त्री जातक विज्ञानी)

४) यदि चतुर्थ भाव में हो तो शुभकारी, जातक का जीवन सुखी एवं आनन्दमय, सुन्दर एवं गुणवान पत्नी। जातक मातृभक्त अथवा माता से कई बार स्वभाव मिलता नहीं। मन का गहरा तथा इसके मन की चाह पा लेना आसान नहीं होता। जीवन में राजनीति हावी। सित्तों की कमी नहीं रहती। स्त्रियों एवं प्रेमिकाओं का भी गहरा इस्तफ़ादा। जातक बलवान, परोपकारी, आस्तिक, सुखी, व्यवहारदर्श, सिंहासी, भाग्यवान, पुत्रवान्, दीर्घायु। (पाँचाग दिवाकर)

स्त्री की कुण्डली में स्त्री सुखी, सौभाग्ययुक्त, जितेन्द्रिय, धर्म-कर्म में दक्ष, कुलदीपक, सुशील, सुन्दरी, यानी, भक्तिनी, पतिव्रता (स्त्री जातक विज्ञानी)

५) यदि पंचम भाव में हो तो जातक कल्पनाशील युवक, काव्य प्रतिभा, काव्य, संगीत, नृत्य के माध्यम से प्रत्योपार्जन, कई सित्त, सन्तान सुख जेष्ठ, पाँच से अधिक सन्तान, पुत्रियों की संख्या अधिक, वृद्धावस्था में पूर्ण सन्तान सुख, भोगी, हँसमुख, रंगीला होता है।

शुक्र

८५

जीवन सानन्द बीतता है। राज्य की ओर से पूर्ण सम्मान, धन का धनी, जीवन के प्रत्येक निश्चय को पूरा करता है। शिशु काल में कई व्यापान, यौवन काल में पूर्ण संघर्ष करते हुए समय को अपने अनुकूल बनाता है।

जातक सुखी, भोगी, सद्गुणी, न्यायवान, आस्तिक, दानी, उदार,

विद्वान, प्रतिभाशाली, वक्ता, कवि, पुत्रवान, लाभयुक्त, व्यवसायी, शत्रुनाशक (पांचांग दिनकर)

स्त्री की कुण्डली हो तो स्त्री विलासिनी, सुन्दरी, हास्यमुख, धर्मवती, सुखी,

कुल में श्रेष्ठ, धनी, अधिक संतान, पतिव्रता (स्त्री जातक विज्ञानी)

जन्म काल में शुक्र के योग के अनुसार जातक का स्वभाव निर्धारित होता है।

यदि शुक्र का योग शुभ हो तो जातक का स्वभाव शुभ होता है।

यदि शुक्र का योग अशुभ हो तो जातक का स्वभाव अशुभ होता है।

यदि शुक्र का योग मध्यम हो तो जातक का स्वभाव मध्यम होता है।

७) यदि छठे भाव में हो तो जातक शत्रु रहित होता है, मित्रों से लाभ पहुँचता

है, प्रतिष्ठित कुल में जन्म लेकर विद्वान, विलासी, चरित्र संश्लेष्य कहा जा

सकता है। स्वस्थ एवं सुन्दर स्त्रियों के प्रति आसक्त, स्त्रियों से संबंधित

कार्यों में लाभ उठाता है। यदि मीन राशि का शुक्र हो तो व्यक्ति धनी,

विद्वान, सम्मान लाभ करता है। (कुण्डली दर्पण)

जातक स्त्री सुखहीन, बहुमित्रवान, दुराचारी, मुररोगी, वैभवहीन, दुखी,

स्त्रिप्रिय, शत्रुनाशक, मितव्ययी (पांचांग दिनकर)

स्त्री की कुण्डली हो तो क्रोधी, ईर्ष्यालु, तीव्र स्वभाव, कलह-कारिणी, पति-पुत्र से

परित्यक्त, अनेक शत्रु, कफ-वात रोग, पति प्रेम से वंचित, शत्रुहन्ता (स्त्री जातक विज्ञानी)

जातक का स्वभाव निर्धारित होता है।

यदि शुक्र का योग शुभ हो तो जातक का स्वभाव शुभ होता है।

यदि शुक्र का योग अशुभ हो तो जातक का स्वभाव अशुभ होता है।

यदि शुक्र का योग मध्यम हो तो जातक का स्वभाव मध्यम होता है।

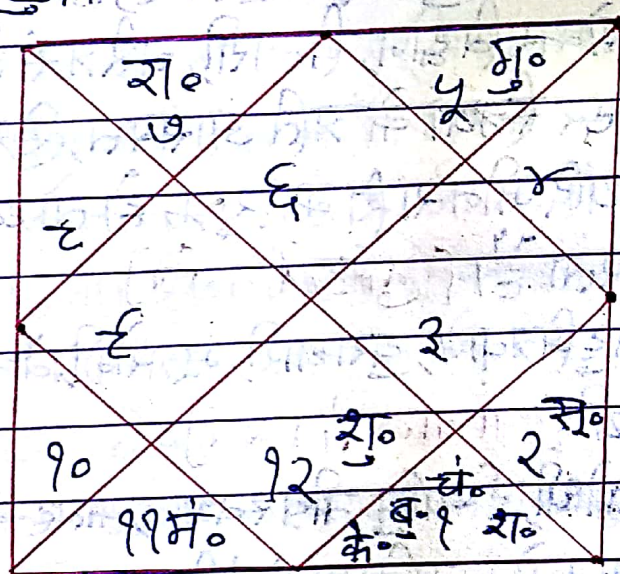
७) यदि सप्तम भाव में हो तो जातक भावुक, कल्पनाशील, सरल हृदय,

सुन्दर गौरवर्ण एवं गुणवान स्त्री, जातक प्रसन्नचित्त, गुणी पुत्रों को जन्म देने में समर्थ होता है। (कुण्डली दर्पण)

आगे एक ऐसे व्यक्ति की कुण्डली है जो बहुत गरीब

शुक्र

था। शिवा के क्षेत्र में शून्य था। कठिनता से निर्वाह करता था पर भाग्यवश इसका विवाह लखपति पिता की सुन्दरतम सुशील कन्या से हुआ तथा कई संतानें भी हुई। जातक विवाहोपरांत भी कठिनता से निर्वाह कर रहा है। लग्नेश बुध, आयेश चन्द्र तथा पंचमेश शनि तीनों अष्टम भाव में हैं। अतः यह स्पष्ट है कि जातक का न तो व्यक्तित्व है, न उच्च कुलीन परिवार, न आय के मजबूत स्रोत हैं। परंतु भूमि राशि का शुक्र उच्च होकर केन्द्रस्थ है, जिसने दाम्पत्य जीवन को उच्च बनाया, साथ ही शुक्र भाग्यस्थान का भी स्वामी है एवं धनभक्त का भी स्वामी है तथा सप्तम भाव में है तो ससुराल से धन प्राप्त हुआ, सुन्दर पत्नि प्राप्त हुई, गहारा दहेज भी प्राप्त हुआ। मुक्त में उच्च स्तर भी मिला। जातक का विवाह शुक्र की दशा में बुध की अंतर्दशा में सम्पन्न हुआ।



कुण्डली दर्पण

जातक स्त्री से सुखी, उदार, लोकप्रिय, धनिक, लोकप्रिय, चित्तिस, विवाह के बाद भाग्योदय, साधुप्रेमी, कामी, अल्पव्यामिचारी, चंचल, विलासी, मानप्रिय, स्त्री की कुण्डली हो तो सर्वमान्य, पतिप्रिया, शास्त्ररती, धनवती, प्रभावी, कला-कुशल, सुंदर, उत्तमपति, रतिप्रिय, आभूषणयुक्ता [स्त्री जातक विज्ञानी]

यदि अष्टम भाव में हो तो मनुष्य धार्मिक प्रवृत्ति का, राजा की सेवा में तत्पर, नौकरी में सफल, अधिकारियों का प्रिय, सहायक मित्रों एवं संबंधियों का वृद्धावस्था सानन्द तथा शिक्कार में रुचिल होता है। (कुण्डली दर्पण)

जातक विदेशवासी, निर्दय, रोगी, क्रोधी, ज्योतिषी, मनस्वी, दुखी, गुप्तरोगी, पर्यटनशील, परस्त्रीरत (पाँचाग दिवाकर)

स्त्री की कुण्डली में स्त्री दरिद्र, दुखी, उद्धत स्वभाव, सुंदर नेत्र, गर्विली, धर्मवती, सुशील, दीर्घायु, धन की चिन्तक, परिजनों से निर्यदिता (स्त्री जातक विज्ञानी)

यदि नवम भाव में हो तो देश-आराम से जीवन व्यतीत करता है। शरवें वर्ष से भाग्योदय, बाल्यावस्था सुखद, मध्यकाल में कठोर परिश्रमी, यात्राओं का शौकीन, धार्मिक मामलों में कट्टर पारिवारिक जीवन सफल, उच्च गुणों से सम्पन्न, मध्यकाल में प्रसिद्धि प्राप्त करता है। (कुण्डली दर्पण)

जातक आस्तिक, गुणी, गृहसुखी, प्रेम दयालु, तीर्थयात्री, राजप्रिय (पाँचाग दिवाकर)
स्त्री की कुण्डली में स्त्री धार्मिक, धनवती, कला से धनोपार्जन, तीर्थयात्री, सुन्दरी, सुशीला, सौभाग्यवती (स्त्री जातक विज्ञानी)

१०) यदि दशम भाव में हो तो जातक की व्यापार में हानि, नौकरी में उन्नति के अवसर अधिक, धार्मिक क्षेत्र में सहिष्णु, काव्य, संगीत, नाटकादि में गहरी रुचि, मध्यकाल संघर्षशील पर वृद्धावस्था आनन्दमय, प्रसिद्ध, सादा जीवन, उच्च विचार होते हैं। (कुण्डली दर्पण)

शुक्र

जातक विलासी, ऐश्वर्यवान, न्यायवान, ज्योतिषी, विजयी, लोभी, धार्मिक,
मानप्रिय, भाग्यवान, गुणवान, दयालु [पाँचाग दिवाकर]

स्त्री की कुण्डली में स्त्री धनी, बुद्धिमन्, निरोगी, सत्यी, यशस्वी, ज्येष्ठ, सम्मान्य,
पतिप्रिया, संतानकी प्रेम करने वाली, साध्वी, ऐश्वर्यशाली [स्त्री जातक विज्ञानी]

११) एकादश भाव में हो तो जातक मनमौजी, क्लाय के अनेक स्तोत्र
फिर भी व्यथ बढ़ा चढ़ा रहता है, शिक्षण काल में कई व्याधान अते
हैं नौकरी में सफल नहीं क्योंकि अधिकारियों के साथ खींचातानी
रहती है। सजावट पर खर्च करने वाला, तडक-भडक तथा शान से
रहने वाला, प्रेम के क्षेत्र में अग्रणी। जीवन में सफल होते हैं। [कुण्डली
दर्शन]

जातक विलासी, वाहनसुखी, स्थिरत्वामीवान, लोकप्रिय, परीपकारी,
जौहरी, धनवान, गुणवान, कामी, पुत्रवान [पाँचाग दिवाकर]

स्त्री की कुण्डली में स्त्री लाभवती, निर्दोष, शास्त्रों की जानकार, आश्रय पुनः
सत्कामी, सदैव लाभ प्राप्त करने, दस्य-प्रिय, नृत्यगीतदि में रुचि, सुंदर [स्त्री जातक
विज्ञानी]

१२) यदि द्वादश भाव में हो तो जातक सौभाग्यशाली, बाल्यकाल साधारण
जातक का विवाह जल्दी हो जाता है। ससुराल साधारण जेणी का, ससुर
की अपेक्षा साले से अधिक लाभ। संतान सुख ज्येष्ठ लडकों की संख्या
अधिक। बच्चों के द्वारा जातक का नाम विख्यात होता है। क्लाय के कई
स्तोत्र पर व्यथ भी बढ़ा चढ़ा रहता है। परिवार से विशेष लाभ नहीं,
जातक 'सेफ मेड मैन' होता है। बाहरी स्थानों व व्यक्तियों से
जातक का मदरा संबंध होता है। जीवन में मित्रों की संख्या बहुत

शुक्र

८६

अधिका आमोद-प्रमोद, नृंगार आदि पर विशेष व्यथ, धार्मिक क्षेत्रों में
अम्रजी, तीर्थयात्रा का विशेष योग, विद्वान्, कवि, कला प्रिय, प्रतिभाशाली,
विख्यात होते हैं। [कुण्डली दर्पण]

जातक ज्यायशील, आलसी, पतित, धातुविमारी, स्थूल परस्त्रीरत,
बहुभोजी, धनवान्, मितव्ययी, शत्रुनाशक [साँचाग दिवाकर]
स्त्री की कुण्डली हो तो स्त्री कपटी, दुर्बद्धि, रोगिणी, कटुभाषी, दुर्बल, दुष्ट,
अधिक व्यथी। बाल्यावस्था में बीमारा [स्त्री जातक विज्ञानी]

शनि

शनि

1) प्रथम भाव में हो तो जातक का श्याम वर्ण, स्थूल शरीर, छोटी-छोटी पर पैंनी आँखें, लम्बा तगड़ा शरीर, संकरा तथा अंदर खिंचा हुआ सीना, चालाक, कुटील स्वभाव होता है। [कुण्डली दर्पण]

जातक धनाढ्य, सुखी यदि मकर या तुला का हो अन्य राशियों का हो तो दरिद्री [पाँचाग दिवाकर]

स्त्री की कुण्डली हो तो स्त्री कुम्भ, कृष्णवर्ण, क्रोधी, बंधुसुखरहित, दरिद्र, नीच, रोगी। यदि शनि उच्च या स्वप्नेत्री हो तो स्वस्थ, धनवती [स्त्री जातक विज्ञान]

2) द्वितीय भाव में हो तो शुभ नहीं। शनि अकारक हो तो जातक दुखी, परेशान, धनहीन होता है। धन के लिए कठोर संघर्ष करना पड़ता है। यदि शनि कारक हो तो बाल्यावस्था दुखद पर यौवनावस्था और वृद्धावस्था सफल होती है। [कुण्डली दर्पण]

जातक मुखरोमी, साधु द्वेषी, मृदुभाषी। कुम्भ या तुला का हो तो धनी, कुटुम्ब तथा भ्रातृसियोमी, लाभवान [पाँचाग दिवाकर]

स्त्री की कुण्डली में स्त्री दरिद्र, अपयशी, रुग्ण, घातकी, सुखहीन, लोगों के विष में बोलने वाली, प्रारम्भिक अवस्था में दुखी, निर्धन। बाद में उद्योग से कुछ धन सुख [स्त्री जातक विज्ञान]

3) तृतीय भाव में हो तो जातक के छोटे भाई होते नहीं। अगर हों तो भी जातक को उनसे विशेष लाभ नहीं होता। जातक साहसी, वीर, क्रोधी, क्रूर, भयंकर से भयंकर काम करने में भी नहीं हिचकिचाता।

शनि

६९

बड़े भाइयों की तरफ से परेशान, संघर्षों में जीता है, कठोर परिश्रम, शत्रुओं से खिलवाड़ करने में आनन्दित, नियमों का पाबंद। मित्र भी अपने जैसे चुनता है। स्थानीय स्वाशन का मुखिया होता है। (कुण्डली दर्पण)

जातक नीरोगी, योगी, विद्वान्, शीघ्र कार्यकर्ता, मल्ल, सभाचतुर, विवेकी, शत्रुहन्ता, भाग्यवान् व चंचल (पाँचाग विवाकर)

स्त्री की कुण्डली में स्त्री ज्ञेय, धन-धान्य सम्पन्न, शस्त्रधरों की आज्ञा, साधु संतों से प्रशंसित, दत्त, बुद्धिमान, स्व-धन से तालन पालन, सहोदर दीना (स्त्री जातक विज्ञान)

४) चतुर्थ भाव में होती व्यक्ति बाल्याकाल में अस्वस्थ, भाईयों का जीवन में कोई महत्त्व नहीं। माँ को वृणक्त समझ कर जीवन से बाहर कर देता है। जीवन में सदा अप्रसन्न तथा मानसिक रूप से अस्वस्थ रहता है। जीवन में सदा चिन्तित, मानसिक परेशानी के साथ-ही दिन भावना का आधिक्य रहता है। (कुण्डली दर्पण)

जातक बलहीन, अपयशी, कुश, शीघ्रकोपी, कपटी, भाग्यवान् वातपित्तयुक्त, उदासीन (पाँचाग विवाकर)

स्त्री की कुण्डली में स्त्री चंचल, दुष्ट, मतिमन्द, नीचे की समिति, दरिद्र, दुखी, मलिन, आलसी, कलहकारी, वात-पित्त रोगी (स्त्री जातक विज्ञान)

५) पंचम भाव में होती जातक का दिमाग उलजलूल विचारों से भरपूर, व्यर्थ की बातों में अधिक ध्यान देता है। आय की अपेक्षा व्यय की अधिकता रहती है। यदि शनि उच्च का हो तो पैरों में बीमारि लौ देता है। जीवन में निरन्तर उत्थान पतन देखने पड़ते हैं। मित्रों से वाद-विवाद

शनि

होता रहता है। ये योजनाएँ बनाने में सफल होते हैं। [कुण्डली दर्पण] ६३

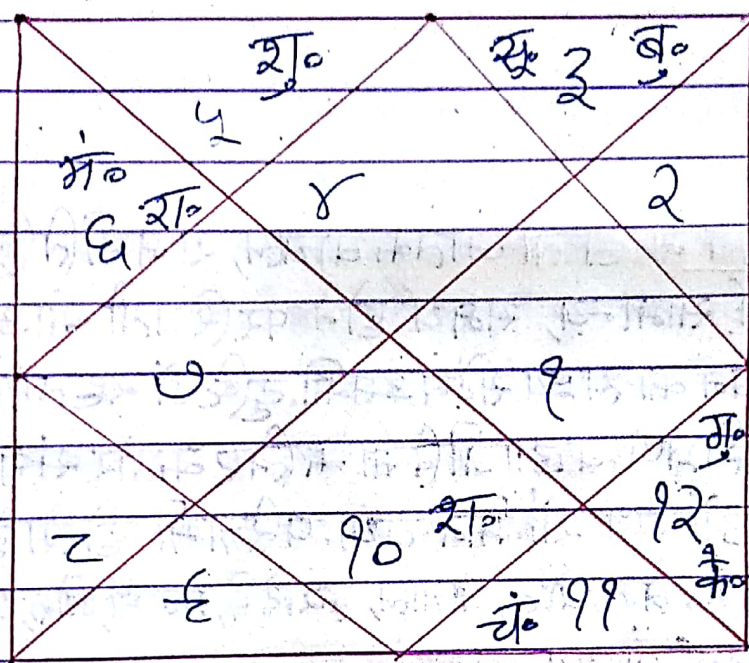
जातक वातरोगी, भ्रमणशील, विद्वान्, उदासीन, संतानयुक्त, आलसी चंचल
स्त्री की कुण्डली में स्त्री निर्दय, गर्वीली, पुत्रहीन, वेश्या जैसी, सखी,
प्रतिष्ठित, अन्तोषी स्वभाव, दुर्बुद्धि, धनहीन, रोगीणी (स्त्री जातक विज्ञानी)

६) यदि षष्ठ भाव में हो तो जातक वीर, साहसी, लडाकू, भोजन का
शौकीन, साहसी होता है। इसके अधीन कर्मचारी इससे लाभान्वित
नहीं रहते, मित्रों के ओर से इसे छोखा खाना पड़ता है। यदि मंगल
शनि हों तो पेट के आपरेशन के दौरान मृत्यु हो जाती है। राहु तथा
शनि का संयोग (स्त्री की कुण्डली में) हिस्टीरीया रोग उत्पन्न कर
देता है। यदि शनि उच्च का हो तो सम्मान में वृद्धि तथा कुल विस्तार
में सहायक होता है। [कुण्डली दर्पण]

जातक शत्रुहन्ता, भोगी, कवि, कण्ठ-रुवासरोगी, जातिविरोधी, व्रणी, बलवान्,
स्त्री की कुण्डली में स्त्री मंदमति परंतु गुणी, पुत्रवती, धनी, पुत्रोक्तिप्रिय,
रोग-शत्रुहीन, पुष्ट, धनवती, गुणवती, गुरुजनों की सेविका, प्रतिष्ठित, संतोषी (स्त्री जातक
विज्ञान)

७) सप्तम भाव में हो तो जातक स्त्री सुख से वंचित। शनि निर्बल
हो या अन्य स्थानों पर बैठे शुभ ग्रहों की दृष्टि से युक्त हो
स्वल्प पत्नी सुखा जातक कठोर हृदय, उन्नति के कार्यों में तत्पर

शनि होता है परंतु सुख एकांगी ही कहा जा सकता है। इस कुण्डली में सप्तमभाव में शनि स्वगृही है, अष्टमेश होकर मारक भी हो गया है। इस प्रकार पूर्णबलवान मारक ग्रह होकर सप्तमभाव में बैठने से गृहस्थ जीवन पूर्णतः नष्ट कर दिया है। जाया कारकशुक्र भी दूसरे भाव में बैठकर मारक ही बना, अतः जाया कारक ग्रह निर्बल रहा। इसके साथ ही सप्तम भाव पर किसी शुभ ग्रह की दृष्टि भी नहीं है। [कुण्डली दर्पण]



जातक क्रोधी, निर्धन, भ्रमणशील, नीचकर्मरत, आलसी, स्त्री भक्त, विज्ञासी, कामी, स्त्री की कुण्डली में स्त्री रोगी, कपटी, द्वेषी, मध्यपान प्रिय, पति सुखसे हिन, निर्धन, शोक-संतप, निन्दितकर्मी [स्त्री जातक विज्ञान]

यदि अष्टम स्थान में हो तो जातक लम्बी उम्र प्राप्त करता है। घर से दूर रहकर आजीविका प्राप्ति में कष्टरत रहता है। जातक को परिवार से विशेष स्नेह नहीं मिलता। बाल्यावस्था कष्टदायक। जीवनकाल संघर्षशील। यदि शनि मीन हो तो चोरी का इत्तना मलगत।

शनि

६४

है या झूठा मुकदमा चलता है। गलतफहमियों के कारण इसे बुरा समझ लिया जाता है। [कुण्डली दर्पण]

जातक कपटी, वाचाल, कुष्टरोगी, डरपोत, धूर्त, गुप्तरोगी, विद्वान्स्थूल, अकार
स्त्री की कुण्डली में स्त्री अधर्मी, पापी, धोखे बाज, कृश, दुष्ट, क्रोधी, नेत्ररोग
असंतुष्ट, पतिव संतान सुख रहित। [स्त्री जातक विज्ञान]

६) यदि नवम भाव में हो तो जातक वाचाल, राजनीतिनिपुण, जीवन
के प्रारम्भिक वर्ष सामान्य, समर्थ होने पर स्थिती को अनुकूल
बना लेता है। जीवन का लक्ष्य सदैव उसकी दृष्टि में रहता है, धैर्यपूर्वक
कार्य करता है, शिक्षण व आजीविका के लिए कठोर संघर्ष करना
पड़ता है। यात्राओं का शौकीन तथा परित्रमी होता है। [कुण्डली दर्पण]

जातक वातरोगी, भ्रमणशील, वाचाल, कृशदेही, प्रवासी, मीरु, धर्मात्मा, मादसी,
भ्रातृहीन, शत्रुनाशक [पाँचाग दिवाकर]

स्त्री की कुण्डली में स्त्री दुष्ट, नीच लोगों की संगति, अधिभ्रष्ट करने वाली,
ज्ञान व नम्रता रहित, निरादर करने वाली, धनहीन, गर्विता, कपटी, आचारहीन अपने
जैसा पति [स्त्री जातक विज्ञान]

७) यदि दशम भाव में हो तो जातक धनवान, नौकरी में प्रगति करने
वाला, आजीविका के लिए परित्रमी, संगीत आदि में रुचि, मौज-मस्ती
करने वाला, भोगी, रहन सहन का प्रदर्शन अधिक रहता है। आनन्दमय
खर्चे भी आते रहते हैं। माता पिता से विचारों में मतभेद, फलस्वरूप
पारिवारिक कलह, कठोर परित्रमी, खूब यात्राएं, प्रौढ़ावस्था में
जातक नेता, न्यायी, विद्वान्, ज्योतिषी, राजयोगी, अधिकारी, चतुर, महत्तम कांक्षी,
निरुद्योगी, परित्रमी, भाग्यवान्, उदरविहार, राजमान्य, धनवान् [पाँचाग दिवाकर]

शनि
स्त्री की कुण्डली हो तो स्त्री कुम्भी, दुष्ट-संगति, व्यसनी, दरिद्र, सुखी, सम्पन्न,
रोग-शत्रु रहित, गृहकार्य में कुशल, ऐश्वर्यशाली [स्त्री जातक विज्ञान]

११) यदि एकादश भाव में हो तो जातक कुशल प्रशासक, उच्च पदस्थ
अधिकारी, व्यक्तित्व अत्यंत भव्य, समाज में सम्मानित, आय के कई
स्रोत, स्थायी आमदन, व्यापारिक क्षेत्र में सफल, परिवार में सम्मानित,
इधर वर्ष के बाद से पूर्ण भाग्योदय। [कुण्डली दर्पण]

जातक दीर्घायु, क्रोधी, चंचल, शिल्पी, सुखी, योगाभ्यासी, नीतिज्ञ, परिक्रम
व्यवसायी, सिद्धान्त, पुत्रहीन, न्यायज्ञ, रोगहीन, बलवान [पांचांग दिवाकर]

स्त्री की कुण्डली में स्त्री सुन्दर, निर्भय, कुम्भी, धनवान, लाभयुक्त, पुत्रवती,
सदाचारिणी, सौभाग्यवती, पतिव्रता, धनी, सुखी [स्त्री जातक विज्ञान]

१२) यदि द्वादश भाव में हो तो जातक अत्यंत धनवान, प्रख्यात,
बचपन साधारण, समाज तथा मित्रों में लोकप्रिय, यात्राओं का शौकीन,
शिक्षा की दृष्टि से साधारण, नौकरी में प्रगति धीरे-धीरे, स्वतंत्र
व्यवसाय में जातक सफल, जीवन में उतार चढ़ाव अत्यधिक मित्र
तथा प्रशंसक होते हैं। [कुण्डली दर्पण]

जातक अपत्ययी, उम्हरी, व्यर्थचर्ची, व्यसनी, दुष्ट, कुरु भाषी,
अविश्वासी, मातुलकष्ट, आलसी [पांचांग दिवाकर]

स्त्री की कुण्डली हो तो रक्तवातकफ दोषी, व्यसनी, अविचारिणी,
तिरस्कृत, निर्दय, आलसी, नीच संगति, रोगी, कलह-कारिणी, धनहीन, फिद्दल
अर्ची करने वाली होती है। [स्त्री जातक विज्ञान]

राह

१) प्रथम भाव में हो तो जातक का श्याम वर्ण, स्थूल शरीर, छोटी-२ पर धेनी आँखें, लम्बा तगड़ा शरीर, सँकरा तथा अन्दर खींचा हुआ सीना, चालम एवं कुटील स्वभावा [कुण्डली दर्पण]
जातक दुष्ट, मस्तक रोगी, स्वाधी, राजद्वेषी, नीचकर्म, भूमिहीन, अल्पसंतान, स्त्री की कुण्डली में स्त्री के लालनेत्र, चंचल, नीच, गुरुजनो का अनादर करने वाली, पापी, रोगी [स्त्री जातक विज्ञान]

२) द्वितीय भाव में हो तो जातक रोगी और चिड़चिड़ा, पारिवारिक जीवन में कई व्याधान, आर्थिक दृष्टि से डोंवाडोल, बाल्यावस्था में द्रव्याभाव से पीड़ित, ज्यो-२ उम्र बढ़ती है अर्थ संचय होता रहता है। [कुण्डली दर्पण]
जातक परदेशगामी, अल्पसंतान, अल्प सुदृढ स्व, कटुभाषी, अल्पकर्म संग्रहीत, स्त्री की कुण्डली में स्त्री धनहीन, कामी, ज्यादा बीलने वाली, इधर-उधर घूमने वाली, प्यारे घर में रहने वाली, योरनी [स्त्री जातक विज्ञान]

३) यदि तृतीय भाव में हो तो जातक अत्यंत प्रभावशाली, पराक्रमी, ताकतवर, जान पहचान विस्तृत क्षेत्र में होती है तथा अपने प्रभाव से लोगों को अपने पक्ष में कर लेता है। सुन्दर दृढ शरीर, माँसल मुँहाएँ, उन्नत वनस्थल, सामर्थ्य युक्त व्यक्ति होता है। प्रारम्भ में

राहु

संकट पर शीघ्र ही मन लायक पद प्राप्त हो जाता है। उत्तरोत्तर उन्नति करता रहता है। जातक पुलिस या मिलिटरी में सफल छोटे भाईयों से लाभ नहीं होता, दृष्टि, मौलिक सिद्धांतों से युक्त होता है। जातक योगाभ्यासी, भ्रमणशील, दृढ़, अहिंसाशून्य, प्रवासी, बलवान, विद्वान, व्यवसायी। (पाँचाग दिवाकर)

स्त्री की कुण्डली में स्त्री छोटे भाई रहित, वाद विवाद में विजयी, उत्तम सन्तान, ज्येष्ठ पति, धनवती, कीर्तिमति, सुखों से सम्पन्न। (स्त्री जातक विज्ञान)

४) यदि चतुर्थ भाव में हो तो जातक व्यवहार कुशल नहीं होता। बोलने में असमर्थ तथा इसी कारण कई कार्य बिगाड़ लेता है।

घोखेबाज, समय पड़ने पर बड़े से बड़े झूठ बोल लेता है। राजनीति क्षेत्र में सफल, पुत्रों की अपेक्षा कन्या सन्तान अधिक होती है।

जातक असन्तोषी, दुखी, मातृम्लेश, क्रूर, कष्टी, उदर विकार, मिथ्याचारी, अल्पभाषी। (पाँचाग दिवाकर)

स्त्री की कुण्डली में स्त्री पितृकुल से हीन, सुख, सुख हीन, अधम पति, वान, नीचों की संगति करने, दुष्ट, दुर्गन्धवीर। (स्त्री जातक विज्ञान)

५) पंचम भाव में हो तो नुकसानदायक मित्रों का अभाव, शत्रुओं से प्रतिपादित, संतान दुःख, गृह कलह से चिंतिता जातक क्रोधी, हृदय का रोगी होता है। (कुण्डली दर्पण)

जातक उदर रोगी, अतिमन्द, धनहीन, कुलनाशक, भाव्यवान, क्रूर, शत्रुप्रिय। (पाँचाग दिवाकर)
स्त्री की कुण्डली में राहु चन्द्र से दृष्ट, युग्म न होता है। संतान हीन, कुलीन, कुष्ठ। (स्त्री जातक विज्ञान)

६) षष्ठ भाव में हो तो जातक की कठिनाइयों को सुगम कर देता है। शत्रुओं में सम्मानित, शत्रु संहारक, बलवान होती है। जातक का धन लाभ तथा आयु भी ज्येष्ठ। पूर्ण सुख सुविधा प्राप्त करता है। शत्रु षड्यंत्र करते हैं। अस्थिर मस्तिष्क, मानसिक रूप से परेशाना यदि राहु उच्च राशि का हो तो निश्चय ही परस्त्रीगमन होता है। जातक गुर्जरन्द्रिय के रोग से पीड़ित होता है। ये दो प्रकार का जीवन जीते हैं। [कुण्डली दर्पण]

जातक को विधर्मियों द्वारा लाभ नीरोगी, शत्रुद्वारा, कमशयक, अहिष्णु, विवाह, पराक्रमी, बड़े-२ कार्यकर्मी बाला (पाँचाग दिवाकर) स्त्री की कुण्डली हो तो स्त्री शत्रु व शत्रु रहित, धनवती, उत्तम बुद्धि, समस्त कार्यों में कुशल। [स्त्री जातक विज्ञान]

७) सप्तम भाव में हो तो जातक की पत्नी रोगिणी होती है तथा धन हानि कराती रहती है। स्त्री दुर्बुद्धि, संकीर्णी हो सकती है। यदि कोई सौम्य ग्रह सप्तम भाव को न देखे तो स्त्री विलासी, आभूषणप्रिय होती है। जातक भाग्यहीन होता है। बचपन में कठोर परिश्रम व सदगुणों को साथ लेकर चलने से भी निश्चय बचाएँ आती रहती हैं। जातक स्वस्थ, सुन्दर, सादसी, ईश्वरभीरु होता है। [कुण्डली दर्पण]
जातक स्त्रीनाशक, ध्यापार में दान, भ्रमणशील, वातरोगी, दुष्कर्मी, चतुर, लोभी, दुराचारी। [पाँचाग दिवाकर]

राहु

100

स्त्री की कुण्डली में स्त्री विधवा या अधम पति वाली, क्रोधी, कुरूप, चरित्र-
हीन, मध्यम भाव्य (स्त्री जातक विज्ञान)

इतिहासिक रूप से स्त्री जातक विज्ञान कि एक विज्ञान है कि जिससे हम
जान सकते हैं कि स्त्री का जीवन कैसा रहेगा। इस विज्ञान में
हम जान सकते हैं कि स्त्री का जीवन कैसा रहेगा। इस विज्ञान में
हम जान सकते हैं कि स्त्री का जीवन कैसा रहेगा। इस विज्ञान में

च) अधम भाव में होती जातक दीर्घायु, कवि, लेखक, पत्रकार, प्रकाशक, फिल्म
डिस्ट्रीब्यूटर। धर्म कर्म को समझते हूरे उसकी जोर आं शिक अनुकूल
बचपन में परेशान, जलघात या वृत्तपात दोनों ही संभव। गृहस्थ जीवन
सुखदा भाग्योदयर 27 वें वर्ष से। उम्र 70 से ज्यादा (कुण्डली 4, 7, 11)

जातक पुष्टदेही, गुप्तरोगी, क्रोधी, व्यर्थ भाषी, मूर्ख, उदररोगी, कामी (पाँव का
स्त्री की कुण्डली में स्त्री दुर्बल, रोगी, पाँपी, धनवती, चौटकरने वाली धनवती
(स्त्री जातक विज्ञान)

यदि स्त्री का जातक विज्ञान कि एक विज्ञान है कि जिससे हम
जान सकते हैं कि स्त्री का जीवन कैसा रहेगा। इस विज्ञान में
हम जान सकते हैं कि स्त्री का जीवन कैसा रहेगा। इस विज्ञान में
हम जान सकते हैं कि स्त्री का जीवन कैसा रहेगा। इस विज्ञान में

द) नवम भाव में हो तो भाग्यवर्धन, अपने अधिकार प्राप्ति के लिए सचेत,

अधिकारियों के आदेश से कठोरता से पालन करता है, गृहस्थ जीवन सफल
 जातक प्रवासी, वातरेगी, व्यर्थ परिश्रमी, तीर्थनिशील, भाग्यहीन धर्माली
 स्त्री की कुण्डली में स्त्री कुलाचार से विपरीत, शत्रु व राग से पीड़ित,
 भ्रमिन, भाइयों का उपचार करने वाली। [स्त्री जातक विज्ञानी]

१०) दशम भाव में हो तो जातकराजनीतिज्ञानोंकरी में सफल, अफसर
 इनसे प्रसन्न, जीवन का उत्तिम काल स्वर्भवता। [कुण्डली दर्पण]
 जातक अलसी, बायाल, असीयस्त्रिकार्यकर्ता, मितव्ययी, संतानवर्लेष,
 चन्द्र युक्त होने पर राजयोग। [पांचांग दिवाकर]
 स्त्री की कुण्डली में स्त्री चंचल, दुष्ट, दृढी, सुखरहित, वासना युक्त,
 पराये धन को ठगने वाली। [स्त्री जातक विज्ञानी]

११) एकादश भाव में हो तो जातक प्रतिभा सम्पन्न, राजनीतिपटु, जीवन के

राहु

व्यथ तथा अधूरा कार्य को कभी नहीं छोड़ता। परिवार तथा नातिके उन्नति में सहायक नहीं, सभी आवश्यकताएं पूरी, शान-शौकत से जीवन बिताने की इच्छुक, व्यथ के मामले में सावधान [कुण्डली दर्पण]

जातक मन्दमति, लौमहिन, परितोषी, उत्पसंतान, अरिष्टनाशक, व्यथसाय, कदाचित् लाभदायक व कार्य सफल करने वाली [पाँचांग दिक्कर]

स्त्री की कुण्डली में स्त्री सुन्दर, सदाचारिणी, सत्यवादिनी, धन-वस्त्रसम्पन्न, सबकार्यों में सम्पन्न, सुख भोगने वाली [स्त्री जातक विज्ञान]

१२) द्वादश भाव में हो तो जातक प्रबलरूपेण शत्रुसंहारक, मित्रवर्धक, स्वयं जीवन में उन्नति करते हैं, बाल्यावस्था साधारण, पिता से सुख नहीं, पत्नी सुख प्रौढ़ावस्था में कामा आथ के अनेक स्तोत्र, व्यथ अधिक, आर्थिक स्थिति साधारण, मित्र व प्रशंसकों का अभाव नहीं। सूझ-बूझ रखने वाले, न्यायशील, चतुर, कार्य-प्रवीण, ईश्वर में श्रद्धा [कुण्डली दर्पण]

जातक विवेकहीन, मूर्ख, परितोषी, स्वेक, व्यथी, वितशील, कामी [पाँचांग दिक्कर]
स्त्री की कुण्डली में स्त्री धनहीन, धर्महीन, मतिमन्द, दूसरों की बात पर चलने वाली, पति सुख रहित, फिजूलखर्ची होती है। [स्त्री जातक विज्ञान]

केतु

१) प्रथम भाव में हो तो सुखापन, चेहरे पर रसिमा, साहसी, स्वस्थ, भव्य आकृति, धोखे बोज, स्वार्थी, सिद्धांतों पर दृढ़। [कुण्डली दर्पण]

जातक चंचल, भीरु, दुरायरी, भूखा। वृश्चिक का हो तो राहु सुखकारक, धनी, परिजमी। [पाँचांग दिवाकर]

स्त्री की कुण्डली में स्त्री रोगी, पति को कष्ट देने वाली। केतु शुभ गृह से दृष्ट या युक्त हो तो पति-पुत्रादि सुख सम्पन्न। [स्त्री जातक विज्ञान]

२) द्वितीय भाव में हो तो जातक कटुभाषी, समय पड़ने पर धोखा भी देता है। जातक दृढ़निश्चयी, पैतृक धन कम, भुजबल से ही धन कमाकर संचय करता है। जीवन के प्रारम्भिक वर्ष की अपेक्षा आगे चलकर धनी। सूर्य एकादश भाव में उच्च का हो तो लखपति। [कुण्डली दर्पण]

जातक राजमीर, विरोधी, मुखरोगी। [पाँचांग दिवाकर]

स्त्री की कुण्डली में स्त्री बंधुविरोधी, धनहीन, केतु शुभ गृह युक्त या दृष्ट हो तो धनी, कुटुम्ब सुख युक्त। [स्त्री जातक विज्ञान]

३) तृतीय भाव में हो तो जातक शारीरिक दृष्टि से सुदृढ़, सित्यन्वीन व्यूह रचने वाला, प्रत्येक कार्य योजनाबद्ध तरीके से करने वाला, जाता शाक्त नहीं बैठता, प्रत्येक से झगड़ा मोल लेता है। शत्रुदन्ता। आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न, पैतृक धन कम, समाज में प्रतिष्ठिता पारिवारिक जीवन विशेष सुखी नहीं कहा जा सकता। [कुण्डली दर्पण]

जातक चंचल, वातरोगी, व्यर्थवादी, भूतप्रेतमन्त्र [पाँचाग दिनकर]

स्त्री की कुण्डली में स्त्री धनी, सुखी संतान, शत्रुदन्ता, छोटे भाई रहित [स्त्री जातक विज्ञान]

४) चतुर्थ भाव में हो तो जातक मानसिक रूप से परेशान, हीनभावना से ग्रस्त, माता पिता के साथ सम्बन्ध उचित, जातक पूजा मातृभक्त। परिवार में अशान्ति। जीवन में धन का अभाव होने पर भी रूपाति लाभ करने में समर्थ। जीवन के अंतिम वर्ष असफल व कष्टदायक [कुण्डली दर्पण]

जातक चंचल, वाचाल, कार्यहीन, निरुत्साही निरुपयोगी [पाँचाग दिनकर]

स्त्री की कुण्डली हो तो स्त्री मातृ सुख विहीन, युवावस्था में कष्ट, पिता का उप रित धन नष्ट। [स्त्री जातक विज्ञान]

५) पंचम भाव में हो तो जातक दरिद्र, संतान सुख नगण्य, जीविका के लिए कठोर संघर्ष। पेट सम्बन्धी बीमारियाँ तथा आपैशाना वात रोग से पीड़ित। सहोदरों व बंधवों से परेशान। भाई घोखा दे सकते हैं। शिष्टा का अभाव उम्र भर सटकता है। भावनाओं में बुरी भूत होकर गलत कार्य कर बैठता है जिससे परेशान। मुक्कदमेबाजी, सट्टा, अनर्गल कार्यों में फिजूल खर्च। पूर्वाह्न की अपेक्षा उत्तराह्न ज्यादा सफल। (कुण्डली दर्पण)

जातक कुबुद्धि, कुचाली, वातरोगी (पाँचाग दिवाकर)

स्त्री की कुण्डली में स्त्री थोड़े पुत्रवाली, गृह कार्य कुशल, मलिन बुद्धि, झगडालू, भाई को कष्ट देने वाली होती है। (स्त्री जातक विज्ञान)

केतु

106

ध) बह् भाव में हो तो जातक हठी, लफ्फात्मक पहुँचने वाला, गुँद पर स्पष्ट शब्दों में खरी कटना स्वभाव, चरित्र संदिग्ध। नलिहाल से विशेष लाभ नहीं। जातक शत्रुदन्ता, सुख भोगने वाला, स्वस्थ, सुंदर, प्रसिद्ध।
जातक वात विकारी, झगडालू, भूत-प्रेतजनित रोग, मितव्ययी, अमिष्ट, मीनांक, सुखी (पाँचाम दिवाकर) स्त्री की कुण्डली में स्त्री शत्रु-रोग रहित, मलिन हृदय, धनवान्, भूमि-पूज आदि से सम्पन्न। (स्त्री जातक विज्ञानी)

अ) सप्तम भाव में हो तो जातक का निर्धन ससुराल, स्त्री की ओर से विंता, यदि वृष लग्न हो तो जातक को ससुराल से सहायता। जातक सेल्समेंन, जीवन में कई यात्राएँ, आजीविका के लिए कठोर परिश्रमी। जातक को जलाघात या वृत्तपात की आशंका, पैरों में कमजोरी। जातक परिश्रमी परन्तु आय की अपेक्षा व्यय अधिक। जातक हिम्मत, साहसी, प्रतिभावान् होने के कारण स्थिति को अपने अनुकूल बना लेता है। (कुण्डली दर्पण)
जातक भक्तिमन्द, भूख, शत्रुभीरु, सुखहीन। (पाँचाम दिवाकर)
स्त्री की कुण्डली में स्त्री पति को पीडा देने वाली, धननाशी। सर्वव्यग्र, शत्रु-भयभीत। (स्त्री जातक विज्ञानी)

च) अष्टम भाव में होने जातक को युवावस्था में बवासीर या जीवन में सवारी से गिरकर चोट। आर्थिक दृष्टि से सामान्य। कई बार लारवी या आकस्मिक धन भी प्राप्त हो जाता है। [कुण्डली दर्पण]

जातक दुर्बुद्धि, तेजहीन, दुष्टजनसेवी, स्त्रीद्वेषी, चालाक। [पाँचाग दिवाकर]
स्त्री की कुण्डली में स्त्री धनवाहन युक्त, परंतु पति को नष्ट। स्त्री के गुप्तांग में भी रोग। [स्त्री जातक विज्ञान]

द) नवम भाव में होने जातक निश्चय ही राजनीतिज्ञ तथा सफल जीवन के मध्य में प्रख्यात। जातक विपरीत परिस्थितियों में ही उभरता है। जीवन में उत्थान-पथन फिर भी जातक लक्ष्यच्युत नहीं होता। अनेक यात्राएं, शत्रुहन्ता। [कुण्डली दर्पण]

जातक सुखामिलावी, व्यर्थ परिश्रमी, अपयशी। [पाँचाग दिवाकर]
स्त्री की कुण्डली में स्त्री उत्तम पुत्र वाली, शत्रु व रोग रहित, सत्त्वमी, नीच लोगों से धन लाभ। [स्त्री जातक विज्ञान]

१०) दशम भाव में हो तो जातक संघर्षी, संशयी, नौकरी में प्रगति नहीं, न ही मातृ सुख प्राप्त। व्यापार में सफल, बाल्याकाल में कष्ट, उत्तरार्द्ध में ख्याति। जातक विद्वान, विचारक, नीतिवान। [कुण्डली दर्पण]
जातक पितृद्वेषी, दुर्भागि, मूर्ख, व्यर्थ परिश्रम, अकथ्य, उन्मिषा। [पाँचम]
स्त्री की कुण्डली में स्त्री दुःखी, पिता सुख से वंचित। केतु कन्या का हो [द्वितीय]
तो धन-धान्य सुख सम्पन्न। [स्त्री जातक विज्ञान]

११) एकादश भाव में हो तो जातक अच्छी स्थिति में, नौकरी में विशेष प्रगति नहीं, फिर भी प्रायः के अनेक स्तोत्र। ३१वें वर्ष से आर्थिक स्थिति शुभ, जीवन में अनेक उतार-चढ़ाव, कभी-२ घोर आभी आना पड़ता है। जातक चतुर, समथ को पहचानने वाला। [कुण्डली दर्पण]
जातक बुद्धिहीन, निम का दुर्लभता, वातरोगी, अविष्टकारक। [पाँचम]
स्त्री की कुण्डली में स्त्री सबकार्यों में लाभ प्राप्त करने वाली, प्रियेवाही [द्वितीय]
शास्त्र, निपुण, सुन्दर वेष वाली, सोभाग्यवती। [स्त्री जातक विज्ञान]

१२) ह्यादरा भाव में हो तो जातक पूर्णतः संघर्षशील, जीवन में निरंतर उत्थान-पथन, जातक दुष्टता से कठिनाइयों का सामना करता है। प्राथ स्वतंत्र व्यवसाय या लेखन से। ऐसा जातक सफल, प्राथमिक स्थिति सुदृढ़, जातक ईश्वरभीरु, समस्त आवश्यकताएं पूरी हो जाती हैं।
जातक चंचल, धूर्त, ठग, अविश्वासशील, तंत्र विद्या से डगने वाली।
स्त्री की कुण्डली में स्त्री पति को कष्ट देने वाली, शत्रु हन्ता, व्यर्थ खर्च करने वाली, पाँव तथाने त्र रोगी। (स्त्री जातक विज्ञानी)

द्वितीय भाव

द्वितीय भाव

११०

गणन किन्तु दिशा से प्राप्त होगी

इसे जानने से पहले नीचे ग्रह और राशि की दिशा स्पष्ट की जा

रही है:-

सूर्य

चन्द्र

मङ्गल

बुध

गुरु

शुक्र

शनि

राहु

केतु

पूर्व दिशा

वायव्य दिशा

दक्षिण दिशा

उत्तर दिशा

ईशान दिशा

अग्नि कोण

पश्चिम दिशा

नैऋत्य कोण

नैऋत्य दिशा

मेष

वृष

मिथुन

कर्क

सिंह

कन्या

तुला

वृश्चिक

धनु

मकर

कुम्भ

मीन

पूर्व

दक्षिण

पश्चिम

उत्तर

पूर्व

दक्षिण

पश्चिम

उत्तर

पूर्व

दक्षिण

पश्चिम

उत्तर

धनेश जिस राशि में बैठा हो, उस राशि की दिशा में विशेष अर्थ लाभ। यदि उस राशि में कोई ग्रह बैठा हो तो उसी ग्रह की दिशा में

द्वितीय भाव
की दशा में सम्बन्धित दिशा से आर्थ लाभ [कुण्डली दर्पण] १११

२) जिस समय भाग्योदय होगा
जीवन का एक सर्वोच्च समय होता है। वह समय कब आएगा
देखने की विधि नीचे है:-

प्रत्येक ग्रह के मूलांश नीचे हैं:-

सूर्य-७

शुक्र-५

चन्द्र-३

शनि-१

मंगल-१०

राहु-०

बुध-६

केतु-०

गुरु-८

इस विधि का प्रयोग निम्न है।

(१) द्वितीय भाव में राशि का अंक

(२) लग्न में राशि अंक

(३) चतुर्थ में राशि अंक

(४) नवम, एकादश भाव के राशि अंकों को जोड़कर (यदि कोई ग्रह इन भावों में हो तो उसके मूलांश भी जोड़ें, १२ से भाग दें जो बचे उसे धनेश स्थित राशि से गिनें, जो राशि आवे उस राशि के स्वामी की दशा में पूर्ण भाग्योदय [कुण्डली दर्पण]

३) कुछ विशेष योग

१) अकस्मात् धन प्राप्ति योग, यदि शनि द्वितीयेश होकर ४, ८, १२वें भाव में हो तो तथा बुध सप्तम भाव में स्वगृही हो तो अकस्मात् धन प्राप्ति योग। बुध की महादशा, शनि की अन्तरदशा आने पर पूरा लाभ

२) अकस्मात् धन नाश योग, यदि चन्द्र स्वगृही, द्वितीयेश, अष्टम भाव में शनि तो परस्पर महादशा-अन्तरदशा में धन नाश।

द्वितीय भाव

३) पैतृक धन नाश योग यदि धनभाव का स्वामी बुध गुरु के साथ हो तथा गुरु अष्टम भाव में हो तो जातक पिता का धन नाश करता है।

४) धन-नाश योग, यदि द्वितीयेश सूर्य लग्न में शनि के साथ हो तो जातक कुक्कुमेबाजी में धन नाश करता है।

५) अचल सम्पत्ति नाश योग, यदि धनेश बुध के घर का होकर उसके साथ दूसरे भाव में हो, मंगल चौथे भाव में हो तो अचल सम्पत्ति नाश।

६) धन संग्राहक योग, यदि धन भाव का स्वामी मंगल एकादश भाव में पड़कर दूसरे घर को देख रहा हो तो जातक धन संग्रह योग।

७) धन-असंग्राहक योग, धन भाव का स्वामी गुरु स्वमृही होकर धन राशि में हो, शुक्र द्वादश भाव में हो तो धन असंग्राहक योग।

८) धन वृद्धि योग, द्वितीयेश गुरु उच्च होकर नवम भाव में हो तो धन वृद्धि योग। जातक स्वयं भी धन संग्रह करता है, पैतृक सम्पत्ति प्राप्ता।

९) कोषवृद्धि योग, धनेश सूर्य हो, लग्न में उच्च का गुरु हो तो जातक लक्ष्मि।

१०) लक्ष्मी योग, लग्नेश बलवान हो, नवम भाव का स्वामी स्वमृही हो तो अटूट सम्पत्ति योग।

११) धन योग, लग्न से पाँचवी राशि शुक्र की हो, शुक्र राशि पाँचवे या ग्याह्रवें भाव में हो तो अटूट सम्पत्ति योग।

१२) जी योग, लग्न से पाँचवी राशि मिथुन या कन्या हो, एकादश भाव में चन्द्र मंगल हो तो जी योग। जातक विशैष धनवान।

द्वितीय भाव

११३

१३) कमला योग ⇒ लग्न से पाँचवी राशि भकर या कुम्भ हो, बुध व मंगल ११वें भाव में हो तो जातक धनी

१४) वित्त योग ⇒ लग्न से पाँचवी राशि सिंह हो, सूर्य उसमें स्थित हो, चन्द्र-गुरु ११वें भाव में हो तो वित्त योग अर्थात् जातक लखपति।

१५) सखेंद धन योग ⇒ लग्न से पाँचवी राशि धनु या मीन, ११वें भाव में चन्द्र-मंगल हों तो जातक लखपति

तृतीय भाव

तृतीय भाव

१) भ्रातृ संबंधी योग

१) ३, ६, ११, ७ ये चारों भाव भ्रातृकारक हैं। अतः इन स्वामियों की दशा में जातक को भ्रातृ लाभ।

२) तीसरे स्थान का स्वामी, स्थित ग्रह, देखने वाले ग्रहों में जो बलवान हो उसकी दशा में भ्रातृ लाभ।

३) बलहीन मंगल तृतीय भाव में हो तो जातक का दीर्घायु भाई।

४) च तृतीय भाव पति निर्बल, पाप ग्रह, प्रकारक हो तो भाइयों का नाश।

५) तृतीयेश व मंगल अष्टम भाव में हो तो जातक के सामने भाई की मृत्यु।

६) ~~मंगल~~ मंगल की स्थिति से भाइयों का विचार करें।

७) राहु या केतु तीसरे भाव में हो तो जातक के बड़े भाई की मृत्यु।

८) बलवान द्वितीयेश अष्टम हो, पापयुक्त भ्रातृकारक ग्रह तृतीय व चतुर्थ भाव के कारक से भी युक्त हो तो सौतेली माँ से उत्पन्न भाई।

९) तृतीय भाव पापयुक्त हो तो जातक का भाई अल्पायु।

१०) सूर्य पाप ग्रह युक्त तृतीय भाव में हो तो बड़े भाई की मौत।

११) मंगल पाप ग्रह युक्त होकर तृतीय भाव में हो तो जातक के सभी भाई मृत।

१२) तृतीय भाव से त्रिकोण या केन्द्र में पाप ग्रह हो तो भाई का नाश, शुभ ग्रह हो तो भ्रातृ वृद्धि

१३) चतुर्थेश व तृतीयेश दोनों चौथे भाव में हो तो जातक को पूर्ण भ्रातृ सुख [कुण्डली दर्पण]

२) मातृ संबंधी विचार

१४) चन्द्र ध, च, १२वें भाव में तीसरे भाव के स्वामी के साथ हो तो जातक की माता की मृत्यु बाल्याकाल में। [कुण्डली दर्पण]

३) भ्रातृ संबंधी योग

१५) तीसरे शनि भाई का नाश, सिंतु केतु वृद्धि करने वाला होता है।

१६) तृतीयेश पाप युक्त सप्तम भाव में हो तो जातक का लघु भ्राता नहीं।

१७) लग्न, द्वितीय, तृतीय भाव में जितने ग्रह या सित्तों की दृष्टि उतने भाई, बहिन।

१८) द्वितीय, तृतीय भाव में कुल जितने ग्रह होते हैं उतने भाई।

१९) शुभ ग्रह तृतीय भाव में सुख, पाप ग्रह दुःख देने वाला (भ्रातृ सुख-दुःख)

२०) तृतीयेश व भौम स्त्री ग्रह की राशि में हों तो जातक के बहन होती हैं, यही दोनों ग्रह भाई-बहिन को सुख देते हैं।

२१) तृतीय भाव में चन्द्र, शुक हो तो जातक की बहन होती है।

२२) भ्रातृकारक, सहज का स्वामी, तृतीय भाव से सम्बन्धित ग्रह अपनी दशा में शुभ फल देते हैं।

तृतीय भाव

११६

२३) नवम भाव से भाई की स्त्री की फल (तृतीय भाव से सप्तम)

२४) लग्नेश, भौम, तृतीयेश से भाई के सुख दुख का विचार।

२५) लग्नेश व तृतीयेश यदि एकत्र हों तो भाईयों में प्रेम, यदि अपने भावों में लग्न व तृतीय भाव हों तो भाईयों में विरोध।

२६) कारक, सहजेश, सहजदर्शी, सहजस्थ ग्रहों को योग करने पर जितने नवांश हों जातक के उतने भाई। [कुण्डली दर्पण]

४) भ्रातृ अरिष्ट योग

१) यदि लग्नेश, सहजेश निर्बल तथा परस्पर शत्रु ग्रह हों अथवा तृतीय भाव का कारक दुष्ट स्थान में निर्बल हो तो भाईयों में परस्पर कलह।

२) तीसरे भाव में शुक्र हो, उसे गुरु देखता हो जातक भाईयों का पालन।

३) तृतीयस्त बुध को सूर्य देखता हो तो भाई अशक्त।

४) भ्रातृ भावस्त, भावेश, कारक यदि नीच, शत्रु राशि में हों तो उनकी दशा अंतर्दशा में भाईयों का अरिष्ट। [कुण्डली दर्पण]

५) पराक्रम योग

१) तृतीयेश उच्च होकर अष्टम में हो तथा पाप ग्रह के साथ हो तो जन्म युद्धेन्द्रमादी।

२) तृतीयेश बलहीन तथा तृतीयेश शुभ ग्रह से युक्त, दुष्ट तो जन्म मिलतीरी में होता है।

तृतीय भाव

११७

३) तृतीयेश सूर्य के साथ हो तो वीर। चन्द्र के साथ हो तो धैर्यवान, मुनी। भौम के साथ हो तो दुष्ट, जड, क्रोधी। बुध के साथ हो तो सत्त्विक बुद्धि। गुरु के साथ हो तो धीर, गुणयुक्त, शिक्षित। शुक्र के साथ हो तो कामी व भोगी। शनि के साथ हो तो मूर्ख, राहु के साथ हो तो ~~हरे~~ तो ~~इरपकी~~ इरपकी, नेतु के साथ हो तो हृदय रोगी।

१) लग्न में गुरु, तृतीयेश से युक्त हो तो पशु का स्वरूप में छोटा।

२) जलचर लग्न में गुरु, तीसरे भाव के स्वामी के साथ हो तो जातक की मौत जल में डूबकर।

३) मंगल युक्त ग्रह बली हो तो जातक पराक्रमी।

४) मंगल, तृतीयेश, तृतीयस्थ तीनों ग्रह बलवान हो तो जातक सेनाधिकारी।
[कुण्डली दर्पण]

६) कुछ विशेष योग

१) बन्धू पूज्य योग, चौथे भाव या चतुर्थेश को गुरु देखे तो जातक भाईयों व कुटुम्ब में आदरणीय।

२) रवि योग, दशम भाव में सूर्य हो, दशमेश शनि युक्त तीसरे भाव में हो तो रवि योग। जातक नौकरी में उच्च पदासीन, वैज्ञानिक। जीवने के १५वें साल के बाद प्रसिद्ध।

३) चन्द्र योग, समस्त ग्रह यदि २, ५, ७, ८, ११ वें भाव में हो तो जातक भूमिपति, नौकरी में आजा चलती है, आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न।

४) भ्रातृ मूल धन प्राप्ति योग, लग्नेश व द्वितीयेश तीसरे भाव में हो तो जातक को भाईयों से पूर्ण सहायता।

तृतीय भाव

प्र) भ्रातृवर्धन योग \Rightarrow तृतीयेश या मंगल या तीसरा भाव कारक ग्रहों से युक्त, दृष्ट हो तो भाइयों का पूर्ण सुख।

ध) सहोदरनाश योग \Rightarrow तृतीयेश व मंगल आठवें भाव में हों तो जातक को भाइयों से लाभ नहीं तथा आँखों के सामने समस्त भाई मृत।

ज) इकभगिनी योग \Rightarrow बुध, मंगल, तृतीयेश तीनों तृतीयस्त हों तो जातक की एक बहना।

च) द्वादश सहोदर योग \Rightarrow तृतीयेश केन्द्र में हो, मंगल व गुरु त्रिकोण में बैठकर इनमें से कोई तृतीयेश को देखता हो तो जातक के बारह भाइ-बहनें।

छ) सप्त संख्य सहोदर योग \Rightarrow द्वादशेश व भौम साथ में हों, चन्द्र-गुरु तृतीय भाव में शुक्र द्वारा दृष्ट हों तो भाइयों से लाभ।

१०) पराक्रम योग तृतीयेश कारक ग्रह के साथ हो तथा सूर्य उच्च या स्वराशीगत हो तो पराक्रम योग। जातक सैनिक, युद्ध में पूर्ण विजय।

११) युद्ध प्रवीण योग, मंगल, कुण्डली व नवांश दोनों में स्व या उच्च राशि गत हो तो जातक युद्ध में प्रवीण।

१२) संहारक योग, तीसरे भाव में मंगल, राहु या शनि बलवान होकर बैठे हों तो चाहे कुण्डली में अन्य अनिष्ट कारक योग नए हो जाते हैं।
(कुण्डली दर्शनी)

१) वाहन योग

वाहन कारवा - शुक्र

वाहन भाव - चतुर्थ भाव

१) चतुर्थेश बली हो तो वाहन सुख अच्छा।

२) चौथा भाव अच्छे अंशों से युक्त हो तो भी वाहन सुख अच्छा।

३) चतुर्थेश वाहन भाव बुध के साथ हो तो साधारण वाहन योग।

४) चन्द्र लग्नेश होकर चतुर्थेश के साथ बैठा हो तो जातक को वाहन-सुख प्राप्ति।

५) दूसरे या चौथे भाव में शुभ राशि का चन्द्र हो तो साधारण वाहन-सुखा।

६) चतुर्थेश चन्द्र के साथ लग्न में हो तो वाहन सुख मिलता है।

७) चतुर्थेश शुक्र के साथ लग्न में हो तो उच्च कोटि की वाहन प्राप्ति।

८) बलवान शुक्र और चन्द्र त्रिकोण या केन्द्र में हो तो उच्च वाहन योग।

९) चन्द्र यदि गुरु से दृष्ट हो तो उच्च वाहन प्राप्ति।

१०) शुक्र, चन्द्र और चतुर्थेश लग्नेश के साथ हो तो उच्च वाहन योग।

११) गुरु चतुर्थेश, चन्द्र और शुक्र एकत्र होकर केन्द्र या त्रिकोण में हो तो उच्च वाहन प्राप्ति योग।

चतुर्थ भाव

१२) चतुर्थेश गुरु के साथ या गुरु से दृष्ट हो तो उच्च वाहन योग।

१३) चतुर्थेश शुभ ग्रह के साथ दशम भाव में हो तो उच्च वाहन योग।

१४) चतुर्थेश केन्द्र में हो और उसके केन्द्र का स्वामी लग्न में हो तो जातक को उच्च वाहन प्राप्त।

१५) दशम भाव का स्वामी एकादश भाव में हो और द्वितीया दसवें भाव में हो तो उच्च वाहन योग।

१६) चतुर्थेश, नवमेश, लग्न में हों या सप्तम भाव में हों तो उच्च वाहन योग।

१७) चतुर्थेश चन्द्र और शुक्र के साथ एकादश भाव में हों तो उच्च वाहन योग।

१८) लग्नेश और सप्तमेश चौथे भाव में हों तो जातक को उच्च वाहन योग।

१९) चतुर्थेश केन्द्र में हो और पापग्रह भुक्त हो तो उच्च वाहन सुख।

२०) चतुर्थेश, दशमेश केन्द्र में हों तो वाहन सुख।

२१) बलवान शुक्र चौथे भाव में बैठा हो तो उच्च वाहन योग।

[कुण्डली दर्पण]

२) विशेष योग

१) राज्य लक्षण योग → चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्र चारों ग्रह चौथे भाव या केन्द्र में हों तो जातक हंसमुख, उच्च व्यक्तित्व, धीर, सर्वगुण, सौभाग्यशाली होता है।

२) काहल योग → चतुर्थेश और नवमेश केन्द्र स्थानों में हों तो तथा समाने-

समने बैठे हों तो तथा लग्नेश बलवान हो सेना में उच्च पद।

३) हंस योग, गुरु स्वराशिगत होकर चतुर्थ भाव में बैठे हो तो जातक का चुम्बकीय व्यक्तित्व, धनवान, उत्तम सवारी से विभूषित।

४) मालव्य योग, यदि शुक्र स्वराशिगत होकर चतुर्थस्थ हो तो जातक उच्च विभाग, केन्द्रीय सरकार में उच्च पद पर आसीन, सौभाग्यशाली।

५) शश योग, यदि शनि स्वराशि का होकर चतुर्थ भाव में हो तो जातक राजनीति में पटु, चरित्रिक दृष्टि से थियेला।

६) रुचक योग, मंगल स्वराशि का होकर चतुर्थ भाव या केन्द्र में हो तो जातक ऊँचा, लम्बा, दृढ़, व्यापारी, सेना में उच्च पद।

७) भद्र योग, बुध यदि स्वराशिस्थ चतुर्थ भाव या केन्द्र में हो तो जातक बलवान, स्वस्थ, वृद्धावस्था में पूर्ण सुख।

८) पुष्कल योग, लग्नेश तथा चतुर्थेश बलवान होकर चतुर्थ भाव या केन्द्र में हो तो जातक बलवान, प्रसिद्ध, मधुरभाषी।

९) वाहन योग, शुक्र बलवान होकर चतुर्थेश के साथ चतुर्थस्थ हो तो जातक जीवन भर उच्च वाहन सुख भोगता है।

१०) मातृ सौख्य योग, चन्द्र चतुर्थेश के साथ चतुर्थस्थ हो तो पूर्ण मातृ सुख।

११) ग्रह योग, लग्नेश शुक्र चतुर्थ भाव में शुभ ग्रह दृष्टि युक्त हो तो उत्तम भवन योग।

चतुर्थ भाव

१२) लक्ष्मी योग, मंगल चौथे, शुक्र १२वें, एकादश भाव में उच्चका हो तो जातक सिद्धान्त, पराक्रमी, सौम्य, सुखी, भाग्यशाली। [कुण्डली दर्पण]

३) उच्च वाहन प्राप्ति समय

पहले ग्रहों की मूल कलाएं देखें

सूर्य

२०

चन्द्र

१६

मंगल

६

बुध

८

गुरु

१०

शुक्र

११

शनि

१

राहु-केतु

०

अब निम्न तथ्यों पर ध्यान दें

१) चतुर्थेश की कलाएं

२) शुक्र की कलाएं

३) चतुर्थस्थ ग्रह की कलाएं

४) चतुर्थ भाव को देखने वाले ग्रहों की कलाएं

इन सब का योग कर १२ से भाग दें। जो शेष बचे उसे चन्द्रराशि से आगे हिन। जो राशि आवे उस राशि के ग्रह की दशा में, शुक्र की अन्तर्दशा पर उच्च वाहन योग [कुण्डली दर्पण]

पंचम भाव के बारे में पाठकों को चाहिए कि वे संतान के विषय में बीज-कुण्डली (पति की कुण्डली) तथा मेत्र-कुण्डली (पत्नी की कुण्डली) दोनों का अध्ययन करें। यदि बीज एवं मेत्र कुण्डली दोनों श्रेष्ठ हो तो संतान श्रेष्ठ। यदि बीज कुण्डली मजबूत हो तो लड़के अधिक यदि मेत्र कुण्डली मजबूत हो तो लड़कियाँ अधिक। यदि दोनों कुण्डलियों में पंचम भाव निर्बल हो तो संतान कम, अल्पायु।

स्त्री की कुण्डली में पंचमेश का अध्ययन करने के साथ मंगलचन्द्र का भी अध्ययन करें।

पुरुष की कुण्डली में सूर्य व शुक्र (बीथी) का पंचमेश के साथ अध्ययन करें।

१) संतान संख्या

(१) पंचम भाव पर जितने ग्रहों की दृष्टि हो, उससे उस भाव के गत नवांश संख्या को गुणा कर २०० से भाग दें। लब्धि तुल्य संतान

(२) पंचम भाव की राशि छोड़कर अंशों की कला बनाएँ, फिर जिन-२ ग्रहों की शुभ दृष्टि हो, उनसे क्रमशः गुणा कर ६० का भाग दें जो लब्धि प्राप्त हो, उसे फिर २०० से विभाजित करें। जो लब्धि प्राप्त हो उतने ही पुत्र होंगे।

पाप ग्रहों की दृष्टि से पैदा हुए पुत्रों का नाश समझें।

(कुण्डली दर्पण)

२) पुत्र योग

१) सप्तमेश पंचम भावस्त हो तो जातक स्त्री या पुत्र रहित।

२) लग्नेश पंचम भाव में हो, पंचमेश लग्न में हो तो जातक का दत्तक पुत्र।

३) शुभ राशिस्थ पंचमेश केन्द्र त्रिकोण में हो, शुभ ग्रहों से दृष्ट हो तो बाल्यावस्था में पुत्र।

पंचम भाव

४) पुत्रेश और धनेश बल रहित हो, पुत्र (पंचम) भाव पाप ग्रह से दृष्ट हो तो जातक निस्संतान।

५) पंचम भाव या पंचमेश शुभ ग्रह दृष्ट हो, युक्त हो तो निस्संदेह पुत्र।

६) पूर्णबली गुरु पंचम भाव में हो तो पुत्र बुद्धिमान।

७) चन्द्र दशम, शुक्र सप्तम भाव में हो तो, पाप ग्रह चौथे भाव में संतान नष्ट करते हैं।

८) लग्नेश द या चवं भाव में हो, पंचम भाव पाप ग्रह युक्त हो या शत्रु ग्रह देखते हों तो पुत्र हानि।

९) गुरु लग्नेश, सप्तमेश और पंचमेश सभी निर्बल हों तो जातक की दुर्बल संतति।

१०) पंचम भाव में बुध या राशि की राशि हो तो जातक के दत्तक पुत्र।

११) पंचमेश मंगल संग हो, छठे भाव का स्वामी उसे देखता हो तो पुत्र शत्रुओं से मृत।

१२) लग्न में मंगल हो, अष्टम या चतुर्थ भाव पर सूर्य की दृष्टि हो तो निःसंतान। (कुण्डली दर्पण)

३) बुद्धि योग

१३) पंचमेश द, च, १२ वें स्थान में हो तो जातक (स्वर्गहीन होने का) भय बुद्धि होता है।

पंचम भाग

१२५

१४) यदि पंचमेश बुध और गुरु से युक्त होकर केन्द्र या त्रिमेण में हो तो जातक तीव्र बुद्धि, समझदार, संघटन को समझने वाला होता है।

१५) गुरु अपने ही नवांश में हो या शुभ पक्षयांश में हो तो जातक समझदार, तदनुसूल कार्य करने वाला होता है। [कृपण्यी यपण]

ही रोग व मानव शरीर

छठे भाव में जो राशि होती है, उससे सम्बन्धित अंग ही प्रभावित।
यदि छठे भाव की राशि शुभ, शुभ ग्रह से युक्त हो तो वह अंग ठीका
परन्तु यदि वह राशि पाप ग्रह युक्त हो तो वह अंग कमजोर, निर्बल।
इसी प्रकार अकारक षष्ठे २ जिन २ राशियों पर जायेगा, उन
राशियों से सम्बन्धित अंग पीड़ित होंगे।

नीचे प्रत्येक राशि से संबंधित अंग दिए जा रहे हैं।

मेष - सिर, चेहरा, मस्तिष्क

वृष - गले का भीतरी भाग, कंठ

मिथुन - कंधे, हाथ, फेफड़े, रक्त, मांस, भुजाएँ, सीना, छाती, पेट

कर्क - सीना, छाती, पेट, हँसली, छाती की हड्डियाँ

सिंह - पीठ, कमर, हृदय, रीढ़ की हड्डी

कन्या - लीवर, तिल्ली, गुदा, पीठ

तुला - चमड़ी

वृश्चिक - लिंग, भग, गुदा द्वार, जंघाएँ

धनु - कमर, नाड़ियाँ

मकर - घुटने, हड्डियों के जोड़, घुटने की टोपी

कुम्भ - पाँव, टखने, पाचन संस्थान

मीन - एडी, पाँव का निम्न भाग

नीचे प्रत्येक ग्रह से संबंधित अंग हैं :-

सूर्य - हृदय, रक्त, मस्तिष्क, स्त्रियों की बाईं, पुरुषों की दाईं आँख

चन्द्र - पुरुषों की बाईं, स्त्रियों की दाईं आँख, रक्त, आँतें, लसीका

मंगल - नाक, ललाट, पाचन व रन्नायु संस्थान

बुध - नाड़ियाँ, फेफड़े, जीभ, भुजाएँ, मुख, केश

शुक्र - दाहिना कान, लीवर

शुक्र - हृदय, रीढ़, रंग, बायाँ कान, गिल्टियाँ

शनि - हड्डियाँ, दाँत, घुटने, कफ

जब षष्ठेश पापी या अकारक ग्रह हो और गोचर में भी पाप राशि पर स्थित हो तो तो उस राशि से सम्बन्धित अंग को चोट। यह सम्भावना निम्न अवसरों पर हो सकती है:-

- १) षष्ठेश की दशा में
- २) षष्ठेश की अन्तर्दशा में
- ३) सम्बन्धित राशि की दशा या अन्तर्दशा में

यदि निम्न ग्रह अकारक होकर षष्ठेश या षष्ठस्थ हो जायें तो उनकी दशा-अन्तर्दशा में निम्न रोग हो सकते हैं

सूर्य - बुखार, कमजोरी, दिल का दौरा, पेट सम्बन्धी बीमारी, चर्मरोग, घाव, जलना, दौरे पड़ना, हिस्टीरिया

चन्द्र - अग्निद्रा, कफ सम्बन्धी, पाचन क्रिया का बिगड़ना, अजीर्ण, ठंडा बुखार, गठिया, मानसिक असंतुलन, पेट की बीमारियों, जलाघात, जानवरों का हमला

मंगल - गले की बीमारी, कण्ठरोगी, खून सिकार, गठिया, बुखार, आगजनी, जहर, नेत्र रोग, दौरे पड़ना, बेरी-२ रोग, सिर दर्द, रक्त सम्बन्धित रोग

बुध - दिमागी फितूर, नाक-कान रोग, वात कठिनाई, पित्त-भेद, कसड़ी के रोग, कोड़, जहर, गिरना, ऊँचाई से गिरना

गुरु - पेट में गैस, बुखार, कान से मवाद, वायुयान दुर्घटना

शुक्र - कोढ़, वात, पित्त, कफ, वीर्य सिकार, नेत्र-पीडा, मूत्र पीडा, गुदा रोग, गमशिय, कमजोरी, पेचू का दर्द

शनि - पेट रोग, पैर-रोग, गैस, पेट से गिरना, पत्थर से चोट आना।

राहु - दिल का दौरा, दिल की कमजोरी, जहर, आत्महत्या, पाचन सम्बन्धी बीमारी

षष्ठ भाव

केतु → घाव पड़ना, घाव का सड़ जाना, जलना, राहु से संबंधित
बीमारी

जब-२ भी षष्ठेश या अकारक ग्रह बलवान होंगे या षष्ठेश का इन ग्रहों में से किसी भी ग्रह के साथ संबंध होगा, तब-२ इन ग्रहों से सम्बंधित बीमारियाँ मनुष्य को पीड़ित करेंगी।

नीचे शरीरों व उनसे सम्बंधित रोग हैं:-

मेष, वृश्चिक = नेत्र रोग, बुखार, घाव, चमड़ी काट या जल जाना

वृष, तुला = स्वादहीनता, शर्करा की कमी, गुप्तरोग, ठंडा बुखार

मिथुन, कन्या = दाद, नाक व चमड़ी सम्बन्धी रोग

कर्क = शर्करा का अधिक्य, मुँह में छाले, जीम रोग, दिल का दौरा

सिंह = नेत्र रोग, पेट रोग

धनु और मीन = कर्ण पीड़ा, स्मरण शक्ति लुप्तता, चेतनाहीन, मस्तक में विकृति, पेट में गैस, जोड़ खुबना, हाथ पैर दूरना या फसीना निकलना।

मकर और कुम्भ = पेशाब रोग, गर्मी बढ़ जाना, घाव या पीव पड़ना, नाक में घाव, जोड़ों में दर्द।

प्रत्येक ग्रह की एक ऋतु होती है जिसमें वह निर्बल होते हुए भी बलवान हो जाता है

सूर्य - ग्रीष्म

चन्द्र - वर्षा

मंगल - ग्रीष्म

बुध - शरद

शुक्र - हेमन्त

शुक्र - वसन्त

शनि - शिशिर

(कुण्डली दर्पण)

१) षष्ठेश और बुध राहु के साथ होकर लग्नेश से संयोग रखते होंगे जातक नष्टका

२) कुछ शरीर संबंधी योग

२) मंगल, लग्नेश के साथ छठे भाव में हो तो घाव से लिंग में रोमा।

३) गुरु व केतु छठे भाव में शुभा।

४) षष्ठेश बली होकर शुभग्रह हो तो जातक शत्रुहन्ता।

५) षष्ठेश और षष्ठस्थ ग्रह शुभ ग्रह हो और केन्द्र में हो तो साधारण रोगनाश।

६) षष्ठेश से युक्त अष्टमेश में पाप ग्रह हो तो जातक को बवासीर।

७) षष्ठेश से युक्त सूर्य दृष्ट भावों में हो तो जातक मंजा।

८) लग्नादि जिस राशि में राहु हो, शुरु उससे देखता हो तो वह राशि शरीर के जिस भाग से संबंधित हो उस भाग में ब्रण।

९) षष्ठेश बलहीन होकर पाप ग्रह युक्त हो तो शत्रुओं से युद्ध करते जातक की मृत्यु।

१०) षष्ठेश द्वादश भाव में हो तो नेत्र रोग।

११) षष्ठेश दुष्ट स्थान में हो, लग्नेश बली हो तो जातक शत्रुहन्ता।

१२) षष्ठेश गोपुरांशादि में हो तथा सूर्य से दृष्ट हो, साथ ही लग्नेश पूर्ण बली हो तो जातक सक्षमी, निरोगी, वीर, शत्रुहन्ता (कुण्डली दर्पण)

सप्तम भाव

१३०

सप्तम भाव

१) विवाह काल

१) लम्बेश और सप्तमेश की स्पष्ट राश्यादि के योग तुल्य में जब गुरु आता है तो विवाह काल।

२) शुक्र और चन्द्र में जो बली हो तथा जिसकी दशा पहले आती हो उसकी दशा में, गुरु की अन्तर्दशा में विवाह।

३) दशमेश की महादशा और अष्टमेश के अन्तर में विवाह।

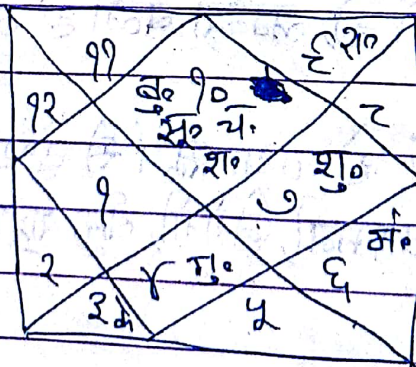
४) सप्तमेश की महादशा, सप्तमस्थ ग्रह की अन्तर्दशा में विवाह।

५) शुक्रयुक्त सप्तमेश की दशा में मुक्ति विवाह।

६) सप्तमेश व शुक्र के ग्रह में जब चन्द्र व गुरु हों तथा उससे केन्द्र में जब गोचर का गुरु आ जाये, तो निस्संदेह विवाह। कुण्डली दर्पण

२) ससुराल की दिशा

शुक्र से सप्तम भाव के स्वामी की जो दिशा होती है, उसी में ससुराल होता है। (जन्म के जन्म स्थान से)



प्रस्तुत कुण्डली में शुक्र तुला राशि में है, सप्तम भाव मेष राशि है जिसका स्वामी मंगल है। मंगल की दिशा दक्षिण है, अतः जन्म के जन्म

सप्तम भाव

स्थान से दक्षिण में उसका ससुराल। नीचे प्रत्येक ग्रह की विशाई गई है

सूर्य

शुक्र

चन्द्र

शनि

मंगल

राहु

बुध

केतु

गुरु

[कुण्डली दर्पण]

कुछ विशेष योग

(१) सप्तम भाव में शुक्र, चन्द्र, बुध, गुरु ये सब या इनमें से जो ग्रह हो जातक की स्त्री का वैसा स्वभाव

(२) सप्तम भाव में मंगल हो, उस पर शनि की दृष्टि हो तो जातक दो संयोग

(३) यदि सप्तमेश छठे भाव में हो तो जातक की पत्नी चिरकाल तक रोगिणी

(४) मंगल व सप्तमेश दोनों सप्तम भाव में हों तो जातक की स्त्री रोगिणी।

(५) सप्तम भाव में बुध, शुक्र हो तो जातक को संतान का अभाव

(६) सप्तमेश अष्टम भाव में हो तो जातक की पत्नी की मृत्यु।

(७) लग्नेश और षष्ठेश पाप ग्रह युक्त हो तो जातक कामी।

(८) यदि पापग्रह षष्ठेश, धनेश, लग्नेश से युक्त होकर सप्तम भाव

सप्तम भाव
में हो तो जातक पर स्त्रीगामी।

शुक्र, बुध, सप्तम भाव में हो तो जातक का सम्बन्ध एक से अधिक स्त्रियों से होता है।

जो लग्न, सप्तम, द्वादश भाव में पाप ग्रह हों तो तथा निर्बल चन्द्र पंचम भाव में हो तो जातक की स्त्री बाँझ।

शुक्र व सूर्य सप्तम भाव या लग्न में हो तो जातक की पत्नी कन्या

सप्तम भाव में पाप ग्रह हो तो जातक की स्त्री दुस्चारिणी।

सप्तम भाव में मकर का गुरु हो तो अल्प स्त्री सुख

सप्तमेश उच्च राशि का होकर केन्द्र या त्रिकोण में हो या कर्मेष्ट
उसे देखता हो तो जातक की एकाधिक स्त्रियाँ।

सप्तमेश केन्द्र में हो, शुभग्रह से दृष्ट हो तो जातक की पत्नी सुशील,
पतिभक्त [कुण्डली दर्पण]

जन्म लग्न

मेघ

प्रथम जेणी मार्केडा

द्वितीय जेणी

मंगल

बुध

गुरु

मंगल

गुरु

चन्द्र

शनि

सूर्य

बुध

गुरु

गुरु

मंगल

शुक्र

मंगल

शुक्र

गुरु

बुध

शनि

चन्द्र

सूर्य

गुरु

बुध

बुध

मंगल

२) आयु साधन

पिण्डायु \Rightarrow आयु जानने का माध्यम

पिण्डायु हो प्रत्येक ग्रह के निश्चित ध्रुवांक (सातों ग्रहों तथा लग्न आठों की पिण्डायु निकालने)

जिस ग्रह की आयु निकालनी हो उसके स्पष्ट बनाकर उसका उच्च घरा दें। जो यदि दशरशि से कम हो तो उसे फिर १२ से घरा लें अन्यथा वैसे ही रहने दें। बाद में कलारे बनाकर ग्रह के ध्रुवांक से गुणा कर २१६०० से भाग देने पर लब्धि वर्षादि होगी।

नीचे प्रत्येक ग्रह के ध्रुवांक व उच्चारि हैं:

सूर्य उच्चरशि ०।१०

ध्रुवांक १-६

चन्द्र १।३

२५

मंगल ६।२८

१५

बुध ५।१५

१२

गुरु ३।५

१५



आष्टम भाव

5138

शुक्र ११/२७

२१

रानि ६/२०

२०

उदाहरणार्थ → एकजातक के ग्रह स्पष्ट थे हैं :-

| सूर्य | चन्द्र | मंगल | बुध | गुरु | शुक्र | रानि | गति |
|-------|--------|------|-----|------|-------|------|-------|
| ० | ७ | ५ | ० | ६ | १ | १० | राशि |
| ७ | ५ | १० | ६ | २८ | १३ | ८ | अंश |
| २६ | ३८ | ५८ | ५५ | ५२ | ४८ | ३० | कला |
| १० | ० | ११ | ५७ | २६ | ३१ | २ | विकला |
| मा० | मा० | व० | मा० | व० | मा० | मा० | गति |

सूर्य की पिण्डायु →

०१/२६/१७ - ०१/००/०० ~~दि. से कम है~~

= ११/२७/२६/१७ [६ से अधिक है अतः ध्रुवने की जरूरत है]

$$११ \times ३० = ३३० + २७ = ३५७ \times ६० = २१४२० * २६$$

$$= २१४४६ कलाएं$$

$$= २१४४६ \times १८ \text{ [ध्रुवांश से गुणा]}$$

$$= ४०७१०४$$

२१६०० से भाग देने पर

$$= १८ साल १० मास ११ दिन ३० घंटी$$

इस प्रकार अन्य ग्रहों की ~~विंशायु~~ भी पिण्डायु भी आजायेगी

लब्धायु → लब्धायु के लिए पहले लग्न स्पष्ट करें जैसे लग्न स्पष्ट है

२/१३/२१/५३

अब १ राशि = १ वर्ष

नवांश खण्ड = १ वर्ष = ३ अंश २० कला

१ अंश = १ मास

कला = १ दिन ४८ घंटी

१ कला = १ दिन

विकला = १ घंटी ४८ पल

इस प्रकार लग्नायु = ४ वर्ष २ दिन २२ घटी २४ पल

पिण्डायु के नियम

- १) शुक्र और शनि को छोड़कर अन्य कोई ग्रह अस्त हो तो आयु का आधा करें।
 - २) जो ग्रह शत्रुमेत्री, मार्गी हो तो आयु $\frac{१}{३}$ [उस ग्रह की]
 - ३) पाप ग्रह यदि लग्न से द्वादश में हो तो आयु ०
 - ४) ग्यारहवें पाप ग्रह हो तो आयु का आधा।
 - ५) दशमें पाप ग्रह हो तो आयु का $\frac{२}{३}$
 - ६) नवम भाव में पाप ग्रह हो तो आयु का $\frac{३}{४}$
 - ७) अष्टम भाव में पाप ग्रह हो तो आयु का $\frac{४}{५}$
 - ८) सप्तम भाव में पाप ग्रह हो तो आयु का $\frac{५}{६}$
 - ९) द्वादश भाव में शुभ ग्रह हो तो आयु का $\frac{१}{२}$
 - १०) ग्यारहवें शुभ ग्रह हो तो आयु का $\frac{३}{४}$
 - ११) दशमें शुभ ग्रह हो तो आयु का $\frac{५}{६}$
 - १२) नवमें शुभ ग्रह हो तो आयु का $\frac{७}{८}$
 - १३) आठवें शुभ ग्रह हो तो आयु का $\frac{९}{१०}$
 - १४) सातवें शुभ ग्रह हो तो आयु का $\frac{११}{१२}$
- जो आठों की आयु आये उसे जोड़ लें। कुण्डली दर्पण

१) नवम भाव सम्बन्धित कुछ योग

१) नवमेश और गुरु शुभ वर्ग में हों, भाग्य भाव शुभ ग्रह से युक्त हो तो जातक भाग्यवान

२) पापग्रह भी यदि उच्च राशि का होकर नवम भाव में हो तो जातक भाग्यशाली

३) नवमेश नवम भाव में हो तो जातक भाग्यशाली

४) चन्द्र बुध, चन्द्र गुरु नवम भाव में ज्ञेय करके ग्रह।

५) नवमेश जिस राशि में हो उस राशि का स्वामी भी भाग्यवर्धक

६) लग्नेश लग्न को देखता हो, भाग्येश केन्द्र या त्रिकोण में हो तो जातक उच्च पद पर ख्याति प्राप्त करता है।

७) तृतीय, पंचम या लग्नस्थित बलवान ग्रह भाग्य भाव को देखें तो जातक भाग्यवान।

८) धनेश द्वादशस्त, दशमेश से युक्त या दृष्ट हो तो जातक भाग्यशाली

९) लाभेश नवम भाव में दशमेश से युक्त या दृष्ट हो तो जातक उच्च पद पर आसीन।

१०) लाभेश नवम भाव में, धनेश लाभस्थान में, नवमेश धन भाव में और दशमेश से युक्त या दृष्ट हो जातक जीवन में आनन्दित।

११) भाग्यस्थ गुरु परशुक्र की दृष्टि हो तो जातक विविध वाहन सम्पन्न

१२) नवम स्थान पर उच्च का गुरु या शुक्र हो और उस पर शुभ ग्रहों की दृष्टि हो तो जातक इन्हीं दशा-अन्तर्दशा में निश्चय ही प्रधान न्यायधीश, गान्धी या शासन कार्य में उच्च पदाधिकारी होता है।

१३) नवमस्थ गुरु पर सूर्य-बुध की दृष्टि होने से जातक को सम्पन्न विद्वान तथा लेखक होता है। चन्द्र-मंगल की दृष्टि से सेनाधिकारी।

१४) नवम भाव में चन्द्र-बुध हैं जातक को पंडित बना देते हैं।

१५) नवम भाव में उच्च का या स्वर्गदी शनि हो तो जातक खूब विदेश यात्राएं करता है। [कुण्डली दर्पण]

२) भाग्योदय काल]

१) सप्तमेश या शुक्र ३, ६, ७, १०, ११ वें स्थान में हो तो जातक का भाग्योदय विवाहोपरान्त होता है।

२) भाग्येश यदि सूर्य हो तो भाग्योदय २२ वें वर्ष में, चन्द्र हो तो २४, मंगल हो तो २८, बुध हो तो ३२, गुरु हो तो १६, शुक्र हो तो २५, शनि हो तो ३६, राहु-केतु हों तो ४२ वें वर्ष से भाग्योदय। [कुण्डली दर्पण]

१) जातक की आय स्थिति (निर्देशिका)

अमुक्त जातक का राज्येश (दशम भाव का स्वामी) किस स्थिति में है तथा कैसा फल दे रहा है, इसके लिए इस विधि का प्रयोग करें

जन्म लग्न राशि को मेष से मिला फिर जो उर्वक आवे, उसे दशम भावस्थ राशि से गुणा करें। इस गुणनफल को दशमेश के दश वर्षों से गुणा कर १२ से भाग दें। जो शेष बचे उसे निम्न तालिका में देखें शेष बचे

स्थिति

फल

१

स्वस्थ

साधारण

२

भ्रमण

साधारण

३

भोजन

साधारण

४

निद्रा

अत्यंत साधारण

५

पूजा

साधारण

६

दैनिक चर्या

मिश्रित

७

क्रोधित

निकृष्ट

८

आराम

निकृष्ट

९

प्रसन्न

उत्तम

१०

खेल

साधारण

११

वार्तालाप

मिश्रित

१२

दुखी

निकृष्ट

माना किसी जातक का लग्न कर्क है तो उसके दशम भावस्थ राशि मेष हुई इस प्रकार $8 \times 1 = 8 \times 12 = 96 \div 12 = 8$ शेष अतः निद्रा अर्थात् फल उत्तम साधारण (कुण्डली दर्पण)

२) कुछ योग

१) दशम भाव से आगे दशम भाव का स्वामी भी साधारण जेपी का राज्येश

२) दशमेश सुरु से युक्त केन्द्र में बैठा हो, दायश में बुध हो तो जातक महान पुण्यात्मा

दशम भाव

३) लग्नेश और दशमेश एक साथ हों तो जातक को नौकरी में प्रगति। १३६

४) बुध अपनी उच्च राशि में राहु केतु रहित होकर दशमेश के साथ नवम भाव में हो तो जातक धार्मिक।

५) राज्य स्थान से दशम भाव में पापग्रह या क्रूर ग्रह हो तो जातक साधारण।

६) नवम, दशम, सप्तम, पंचम और लग्न ये पाँच भाव शुभ ग्रहों से युक्त या दृष्ट हो तो जातक विश्व में विख्यात।

७) लग्नान पाँच या चार ग्रह केन्द्र (१, ४, ७, १०) अथवा त्रिकोण (५, ८) में हों तो जातक वृद्धावस्था में सन्यासी।

८) शुक्र और चन्द्र बलहीन लग्नेश को देखते हों तो जातक साधारण स्थिति में।

९) नवम भाव में चन्द्र हो और उसे कोई भी ग्रह न देखता हो तो जातक निश्चय ही सन्यासी।

१०) दशमेश केन्द्र या त्रिकोण में हो तो जातक गजेटेड आफिसर होता है।

११) लग्नेश राशि को देखता हो और अन्य ग्रह लग्नेश को न देखते हो तो भी प्रबल सन्यासी योग।

१२) लग्न के दशम भाव में सूर्य हो तो पिता से धन मिले, चन्द्र हो तो माता से, मंगल हो तो शत्रु से, बुध हो तो मित्र से, गुरु हो तो भाई से, शुक्र हो तो स्नेहाल से, शनि हो तो सेवक से, राहु केतु हो तो छल से धन मिले।
(कृष्ण वीर्य)

३) व्यापार

१३) दशमेश सूर्य के नवमांश में हो तो जातक युवा, ऊन, घास, दान्य, सोना, मोती आदि के व्यापार से लाभ।

१४) चन्द्र के नवमांश में हो तो मोती, कृषि, मिट्टी के बिलौने, पेंसी स्टोर, रेडीमेड स्टोर से लाभ।

१५) मंगल - ताँबा, पीतल के बर्तन व कोयले की दुकान से लाभ।

१६) बुध - लकड़ी का कारखाना, फर्नीचर, ज्योतिष, वैद्यक आदि से

१७) गुरु - अध्यापन, स्टेशनरी आदि के व्यापार से लाभ।

१८) शुक्र - चौपायों की खरीदोफरोख्त से, रुड़-घावन, किराना व्यापार से लाभ।

१९) शनि - लोहे का व्यापार, तेल, ऊन आदि से लाभ।

२०) लग्न से द्वितीय या एकादश में प्रबल ग्रह हो तो व्यापार से लाभ।

२१) दशमेश गुरु यदि त्रिकोण में हो तो जातक इच्छा पद प्राप्त कर धनवान। [कुण्डली दर्पण]

१) आथेश विचार

लग्न राशि के अंकों, द्वितीय भाव स्थित राशि के अंकों, एकादश भाव स्थित राशि अंकों से गुणा कर ७ से भाग दें। जो बचे उसे नक्षत्र भाग से आगे गिनें, जो राशि आवे उसके स्वामी की दशा, एकादश शेष की अन्तर्दशा में विशेष लाभ। [० शेष बचे तो उसका तात्पर्य १ समझें] [कुण्डली दर्पण]

२) कुछ योग

१) एकादश भाव में शुभ ग्रह हों तो शुभ कार्य से धन प्राप्ति, अशुभ ग्रह हों तो पाप कर्मों से धन लाभ।

२) लाभ स्थान में दो या दो से अधिक बलवान ग्रह हों तो जातक गुणवान, मीत्रवान, विभूषण, वस्त्र, स्त्री सम्पन्न होता है।

३) धनेश और लाभेश यदि लग्नेश हों तो सद्गुणों से धन-प्राप्ति।

४) सूर्य लाभेश हो तो राज्य वगैरे से, चन्द्र हो तो स्वामी से, मंगल हो तो भाईयों से, या कृषि से, बुध हो तो विद्या व व्यापार से, गुरु हो तो व्यक्त व्यवहार से, या शीघ्रा से, शुक हो तो ससुराल-स्त्री से, शनि हो तो छल-कपट, राजनीति व लगी से।

५) लाभ स्थान का स्वामी लग्न से केन्द्र या त्रिकोण में स्थित हो तो जातक धनवान। [कुण्डली दर्पण]

१) द्वादश भाव संबंधित विशेष बातें

१) द्वादश भाव में चर राशि हो तथा दृष्ट ग्रह रानी से युक्त या दृष्ट हो तो जातक भ्रमणशील

२) द्वादश भाव में निर्बल ग्रह हो और द्वादशेश बली हो तो धन की हानि

३) षष्ठेश अथवा अष्टेश बलवान पाप ग्रह होकर १२वें भाव में हो तो जातक दिवालिया

४) व्यय भाव शुभ ग्रहों से युक्त अथवा दृष्ट हो तो जातक पुण्यात्मा एवं धनवान

५) यदि द्वादशस्थ ग्रह उच्च या स्वराशि का हो तो जातक परोपकारी

६) द्वादश भाव में कन्द, शुक्र, बुरु हो तो जातक धनवान

७) द्वादशेश उच्च राशि का, स्वराशि या मित्र राशि हो तो जातक सुखी

८) शुक्र, रानी, केतु, केचन्द्र द्वादश भाव में हों तो जातक मध्यमवस्था में प्रबल दुखी

९) लग्न में गुरु हो, सप्तम भाव में शुक्र, कन्या में चन्द्र हो तो जातक की मृत्यु की बाद सद्गति

१०) द्वादश भाव में पाप ग्रह हो तो जातक विख्यात व आदर्शणीय

द्वादश भाव

१४३

११) द्वादश भाव में हो तो जातक परेशान।

१२) द्वादश भाव में शुक्र उच्च या स्व राशि का होकर स्थित हो तो जातक विरव्यात, कला प्रिय, धर्मत्मी, सुखी, ऐश्वर्यवान, लक्षपति होता है।

[कुण्डली दर्पण]

विंशोत्तरी दशा

विंशोत्तरी दशा

१४४

जन्मनक्षत्र दशाबोधिका

सू० चं० मं० रा० गु० रा० बु० के० शु०

जन्मनक्षत्र दशाबोधिका

| सू० | चं० | मं० | रा० | गु० | रा० | बु० | के० | शु० |
|-------|-----|-----|-------|--------|--------|-------|-------|--------|
| ६ | १० | ७ | १८ | १६ | १६ | १७ | ७ | २० |
| कृ० | रो० | मृ० | आ० | पुन | पुष्य | आ० | मं० | पूर्वा |
| उ० फ० | हं० | चि० | स्वा० | वि० | उ० गु० | ज्ये० | मृ० | पूर्वा |
| उ० ण० | मं० | ध० | रा० | पूर्वा | उ० मं० | रेव० | अश्व० | मृ० |

भोग्य दशा निकालने की विधि जन्म समय जो नक्षत्र हो उसका भयात (जन्म समय तक जितना नक्षत्र व्यतीत हो गया हो) और भोग्य (कुल नक्षत्र) बनाओ। फिर उसके पलादि बनाकर भयात के पलों को जन्म दशा के वर्षों से गुणा दो और भोग्य के पलों से भाग दो, लब्ध व्यतीत दशा के वर्ष आएंगे। शेष को १२ से गुणा कर भोग्य से भाग दो लब्ध मास निकलेंगे। यह भुक्त दशा होगी [लघु पत्रावली]

अन्तर्दशा निकालने की विधि जैसे सूर्य की दशा में सूर्य की अन्तर्दशा निकालनी है तो $६ \times ६ = ३६$ इसमें इकाई के अंक को तीन से गुणा करें $३ \times ३ = ९$ अर्थात् ३ मास ९ दिन [लघु पत्रावली]

१) पाप ग्रह यदि १, ५, ८ वें भाव में हों तो शुभ, शुभ ग्रह भी यदि ३, ६, ११ वें स्थान में हों तो अशुभ

२) सौम्य ग्रह पूर्ण चन्द्र, बुध, शुक, शुक्र यदि केन्द्र के स्वामी हों तो शुभफल नहीं देता। क्रूर ग्रह केन्द्र के स्वामी हों तो सामान्य

विंशोत्तरी दशा

१४५

३) केन्द्र, त्रिकोण, त्रिक [केन्द्र-१, ४, ७, १० त्रिकोण-५, ८, ९ त्रिक-३, ६, ११]
भाव के स्वामी क्रमशः प्रबल अथवा भाव का स्वामी १ से प्रबल, ७ वें भाव का ४ से, १० भाव का स्वामी ७ भाव से प्रबल

४) द्वितीयेश और द्वादशेश शुभ और अशुभ ग्रह के सम्बन्ध होने से, मित्र स्थान में होने से मित्र द्वारा शत्रु स्थान में होने से शत्रु द्वारा शुभ-अशुभ फल देते हैं।

५) जैसा ग्रह होता है उसकी दशा में वैसा ही फल प्राप्त होता है।

६) अष्टम स्थान का स्वामी यदि जन्म स्थान या द्वादश स्थान का स्वामी हो तो अशुभ, यदि लग्नेश हो तो शुभ।

७) केन्द्रापति दोष गुरु व शुक के विषय में प्रबल। [लघु पाराशरी]

मारकेश विचार

द्वितीय और अष्टम मारकों में अष्टम का मारकबली है, द्वितीयेश की अन्तर्दशा में मनुष्य की मौत, द्वितीय स्थान में जो पाप ग्रह होते हैं (षष्ठेश, तृतीयेश और द्वादशेश) उनकी अन्तर्दशा में मृत्यु। यदि इन मारकेशों की दशा या अन्तर्दशा में मृत्यु न हो तो द्वादशेश के जन्म लग्न से द्वादश स्थान के स्वामी की, या उसके साथी पाप ग्रहों की दशा या अन्तर्दशा में मृत्यु। स्वल्प [३ से कम] मध्यम [३ से ७० वर्ष तक], दीर्घ [७० से १०० वर्ष], उत्तमायु [१०० वर्ष से अधिक] लग्नेश सूर्य हो तो जातक अल्पायु, शुक-रवि-चन्द्र हो तो जातक मध्यायु, बुध-गुरु-मंगल हो तो दीर्घायु अल्पायु वाला जातक विपत्तार में भरता है, मध्यायु वाला प्रयत्नितार में, उत्तमायु वाला मारक नक्षत्र में मृत्यु पाता है द्वादशेश, द्वादशस्थ पाप ग्रह और द्वादशेश के साथी

विंशोत्तरी दशा

अन्य कोई न हो, तो द्वापरशेक के साथी शुभ ग्रहों की दशा में मृत्यु या अष्टमेष ग्रह की दशा में भी मृत्यु।

पहिले सब प्रकार के मारकेशों में कोई भी न हो तो केवल पाप ग्रहों की दशा में ही मृत्यु। इस समय इन्द्रावरुण स्थान के स्वामियों की दशा में मृत्यु होती है। चन्द्र और सूर्य को छोड़कर जो ग्रह मारक स्थान में होता है वह मारक है।

द्व, च, १२ वें स्थान के स्वामी, राहु-केतु में जो ग्रह एकदश स्थान के नवमाश का स्वामी हो, वह मारकेश है। यदि शुभ ग्रह हो तो शरीर बल, पाप ग्रह हो तो मौत।

इ, द, १२ स्थान का पाप ग्रह शनि मारक स्थान के स्वामियों के सम्बन्ध से और सब मारकों को हट कर स्वयं मारक होता है। [लघु पाराशरी]

दशाफलप्रदायाय

मनष्यों को सूर्य आदि समस्त ग्रह अपनी-२ दशा और अन्तर्दशा में अपने-२ स्वरूप के अनुसार शुभ-अशुभ फल प्रदान करते हैं।

जो ग्रह आपस में सम्बन्धी हैं या जो अपने समान हैं उन्हीं की अन्तर्दशा में शुभ अशुभ फल देते हैं।

जो शुभ होने से शुभ दशेश (दशा का स्वामी) के समान है, या अशुभ होने से अशुभ दशेश के समान है, उन्हीं की दशा में शुभ अशुभ फल देते हैं। जो ग्रह दशेश से सम्बन्ध नहीं रखते, या इसके समान हैं, किंतु दशेश के विरुद्ध फल दाता हैं उनकी अन्तर्दशा में फलानुसार दशेश शुभ फल देनेवाला है। परन्तु और ग्रह अशुभ फल दें तो उन ग्रहों की अन्तर्दशा में, दशेश भी शुभ फल देता है। [विह स्वयं शुभ फल नहीं देता]

केन्द्राधिपति अपनी दशा में सम्बन्ध होने पर त्रिकोणेश की अन्तर्दशा में शुभ फल देता है, और त्रिकोणेश भी अपनी दशा

विंशोत्तरी दशा

१४७

केन्द्र के साथ यदि उसका सम्बन्ध हो, तो अपनी अन्तर्दशा में शुभ फल देता है। यदि दोनों का परस्पर संबंध न हो दोनों ही अशुभ।

यदि द्वितीया और सप्तमेश की अन्तर्दशा राजयोग का प्रारम्भ होती है तो जातक के सुख सीमित रहते हैं।

राजयोग करने वाले ग्रहों की महादशा में उनके साथी शुभ ग्रहों की अन्तर्दशा हो, या राजयोग करने वाले ग्रहों की अन्तर्दशा हो, दोनों में समान शुभफल होता है। इसी भाँति पाप ग्रह की महादशा में, उसके साथी पाप ग्रह की अन्तर्दशा में दोनों में अशुभ फल समान।

राजयोग कर्ता शुभ ग्रह की महादशा में उसके साथी राजयोग करने वाले अन्य शुभ ग्रह अपनी-२ अन्तर्दशा में कभी राजयोग करने वाले ग्रह की महादशा में जब राजयोग कर्ता ग्रह की अन्तर्दशा आती है तब वह अपना पूरा फल देती है।

किसी राजयोग कारक ग्रह के साथ सम्बन्ध न रहने से राजयोग कष्ट करने वाले राहु-केतु यदि केन्द्र-त्रिकोण में हों तो राजयोग कारक ग्रह की अन्तर्दशा आने पर ही राजयोग का फल देते हैं। उसमें भी शुभ ग्रह की अन्तर्दशा में शुभ फल अशुभ फल देते हैं।

यदि महादशा का स्वामी पाप ग्रह हो तो उससे सम्बन्ध न रखने वाले पाप ग्रहों की अन्तर्दशा अशुभ फल देती है। उसके संबंधी शुभ ग्रहों की अन्तर्दशा सीमित फल देती है, उसके साथ संबंध न रखने वाले और राजयोग कारक पाप ग्रहों की अन्तर्दशा महाकष्ट कारक है।

मारक ग्रह के साथ यदि शुभ ग्रह का सम्बन्ध हो तो भी (शुभ ग्रह की दशा में) मारक मनुष्य के प्राण नहीं ले पाता, और सम्बन्ध न रहने वाले तब भी पाप ग्रह की दशा में मारक ग्रह मनुष्य के प्राण लेता ही है। इससे मारकेश

विंशोत्तरी दशा

की दशा में शुभ और पाप ग्रह की अन्तर्दशा ही मारक और रक्षक है और उसके साथ सम्बन्ध कुछ नहीं कर सकता।

शनि और शुक्र दोनों एक ही महादशा में दूसरे की अन्तर्दशा आने पर अवश्य ही परिवर्तित शुभ और अशुभ फल देते हैं। तात्पर्य यह कि यदि शुक्र की महादशा में शनि की अन्तर्दशा आ जाए तो शुक्र की दशा का फल नहीं। किंतु बदले में शनि की दशा का फल अशुभ ही होता है। इसी प्रकार शनि की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा आवे तो शनि की दशा का अशुभ फल नहीं होता किंतु शुभ होता है।

यदि दशमेश और लग्नेश दोनों आपस में एक दूसरे के स्थान में हों तो राजयोग कारक।

यदि नवमेश दशमेश के स्थान में हो या दशमेश नवमेश के स्थान में हो तो राजयोग कारक। [तबु पाराशरी]

शुभ ग्रह अपनी दशा-अन्तर्दशा में शुभ तथा अशुभ ग्रह अशुभ ग्रह अशुभ फल प्रदान करते हैं।

जो ग्रह उच्च राशिस्त, मित्र राशि, स्वराशि वात हो, वह अपनी दशा-अन्तर्दशा में उच्च पद प्राप्ति, धन लाभ आदि शुभ फल प्रदान करते हैं।

जो ग्रह नीच राशि, शत्रु राशि, वृत्ती, उन्मत्त हो वह अपनी दशा-अन्तर्दशा में धन हानि, कलह बलेश, धन हानि आदि अनिष्ट फल प्राप्ति प्रदान करते हैं।

महादशा का स्वामी और अन्तर्दशा का स्वामी यदि परस्पर मित्र हों तो शुभ, शत्रु हों तो अशुभ।

३, ६, ९, १२ मान के स्वामी की दशा/अन्तर्दशा प्रायाः अशुभ। केन्द्र त्रिकोणस्थ ग्रहों या केन्द्र-त्रिकोणेश ग्रहों की दशा/अन्तर्दशा शुभ होती है। [पांचांग दिवाकर]

प्रश्न लग्न विचार [षट् पञ्चाशिका] १४६

प्रश्न लग्न विचार

१) प्रश्न देखने का साधारण नियम

⇒ लग्न से च्युति (अर्थात् स्थान में रहना या नहीं रहना, गमनागमन, वृद्धि योग, जेल से दूर होने इत्यादि को) चतुर्थ स्थान से वृद्धि गृह सुख, मित्र स्थान, नौकरी, प्रवासी का आना इत्यादि को सप्तम स्थान से निवृत्ति (यात्रा निवृत्ति, शत्रु निवृत्ति, रोग निवृत्ति, नष्ट वस्तु प्राप्ति निवृत्ति) का विचार करना चाहिए। [षट् पञ्चाशिका]

प्रवासी का गमन यदि चतुर्थ और सप्तम के मध्य में स्थित ग्रह हों तो प्रवासी को मध्यमार्ग स्थित कहना चाहिए अथवा उक्त स्थान में स्थान स्वामी को जितने दिन आये हूँ हो गये हो उतने दिन प्रवासी को भी समझना चाहिए और आने में जितने दिन में ग्रह अपने स्थान को प्राप्त करेगा उतने दिन प्रवासी को भी समझना चाहिए और आने में जितने दिन में ग्रह अपने स्थान को प्राप्त करेगा उतने दिन प्रवासी को भी आने में भी देर होगी।

२) लग्नादि द्वादश भावों का शुभाशुभ कथन

⇒ जो भाव अपने स्वामी से युक्त हों या शुभ ग्रहों से युक्त हों या दृष्ट हों तो भावों का लाभ, विपरीत में हानि।

३) प्रश्न लग्न स्थिति से लाभालाभ विचार

⇒ यदि लग्न में शुभ ग्रह हों या शुभ ग्रहों का षड्वर्ग लग्न में हो या शीर्षोदय राशि लग्न में हो तो शीघ्र कार्य सिद्ध होता है। इसके विपरीत रहने पर कार्य का नाश। शुभ ग्रह पाप ग्रह दोनों से सम्बद्ध हो तो कार्य कष्ट से सिद्ध होता है।

षड्वर्ग - गृह, होरा, द्रेष्काण, नवांश, द्वादशांश, त्रिंशांश
शीर्षोदय - सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, कुम्भ, मीन
पृष्णोदय - शेष, मीन

प्रश्न लग्न विचार

४) नष्ट वस्तु लाभ लाभ विचार

⇒ यदि पूर्ण चन्द्र (अथर्विकचन्द्र) प्रश्न लग्न में हो और गुरु अथवा शक्र से दृष्ट हो तो नष्ट वस्तु शीघ्र लाभ। बलवान शुभ ग्रह एकदश भाव में हो तो शीघ्र लाभ।

५) मूल प्रश्न विचार

⇒ यदि ग्रह अपने नवमांश में स्थित होकर लग्न में या नवमें, पाँचवें स्थित स्वमांश को देखता है तो धातु की चिंता। अन्य ग्रह के नवमांश में रहकर स्वमांश स्थित लग्न या नवम पञ्चम को देखता हो तो जीव चिन्ता, अन्य ग्रह नवमांश स्थित लग्न या नवम पञ्चम को यदि देखता हो तो मूल चिन्ता।

~~विचार~~ ~~अथर्विकचन्द्र~~

६) प्रकारान्त से मूल प्रश्न विचार

⇒ विषम राशियों के नवमांश में धातु चिन्ता, (शुक्र, च) नवमांश में मूल चिन्ता और (इंद्र, ई) नवमांश में जीव चिन्ता। सम राशियों में इसके उल्टा।

| नवमांश संख्या | १।४।७। | २।५।८। | ३।६।९। |
|---------------|--------|--------|--------|
| विषम राशि | धातु | मूल | जीव |
| सम राशि | जीव | मूल | धातु |

७) सर्ववस्तु विचार (गमनागमन, लाभलाभ, जीविमरण आदि)

⇒ यदि स्थिर राशि प्रश्न लग्न में हो तो स्थान लाभ के प्रश्नोत्तर में स्थान लाभ, गमनागमन नहीं, रोगी की मृत्यु नहीं, नष्ट वस्तु प्राप्ति, रोग शान्ति नहीं, पराजय नहीं, प्रवासी स्थिर चर राशि में उल्टा द्विस्वभाव के प्रथम भाग में थोड़ा स्थिर, अंतिम भाग में थोड़ा चर। लग्न व चन्द्र शुभ हो तो शुभ, अशुभ हो तो अशुभ।

प्रश्न लग्न विचार

१५१

८) शत्रु विचार

→ शत्रु के गमनागमन विषय में यदि पाँचवें या छठे स्थान में पाप ग्रह हों तो शत्रु रास्ते से वापिस, चौथे पाप ग्रह हो तो आया हुआ शत्रु पराजित होकर लौट जाता है।

९) शत्रु निवृत्ति विचार

→ यदि चतुर्थ भाव में मीन, वृश्चिक, कुम्भ, कर्क इनमें से कोई शशि हो तो शत्रु की पराजय। यदि चतुर्थ भाव में मेष, सिंह, धनु का उतराई हो तो शत्रु आकर भाग जाता है।

१०) शत्रु विशेष विचार

→ प्रश्नकाल में चर राशि लग्न में हो और शुभ ग्रहों सम्बद्ध हो तो यायी (पहले चलाई कक्के वाली) की बिजया यदि पाप युक्त चर लग्न हो तो यायी के लिए अशुभ। स्थिर लग्न में बलवान पाप ग्रह यायी के लिए शुभ, शुभ ग्रह अशुभ।

११) शत्रु विचार

→ यदि प्रश्न लग्न में चर राशि हो तथा स्थिर राशि में चन्द्र हो तो शत्रु शीघ्र आएगा। यदि स्थिर लग्न हो तथा चन्द्र चर राशि में हो तो विपरीत। यदि प्रश्नकाल में स्थिर लग्न हो, द्विस्वभाव राशि में चन्द्र हो तो शत्रु अवश्य लौट जाता है। यदि द्विस्वभाव राशि लग्न में हो, चन्द्र चर राशिगत हो तो शत्रु आवे रास्ते से लौट जाएगा। यदि चर राशि प्रश्न लग्न में हो तथा द्विस्वभाव राशि में चन्द्र हो तो शत्रुओं का आक्रमण।

१२) यायी विचार

→ यदि प्रश्न लग्न चर राशिगत हो तथा सू०, श०, बु०, शु० इनमें से किसी भी ग्रह से युक्त हो तो यायी राजा का गमन

प्रश्नलग्न विचार

शीघ्र होता है और यदि यहां ग्रह नहीं होकर युक्त हो तो गमन नहीं होता।

१३) शत्रु निवृत्ति ज्ञान विचार

⇒ यदि प्रश्नकाल में स्थिर राशि लग्न में हो, गुरुशुक्र से दृष्ट हो तो प्रश्न करने वाले स्वराज्य के शत्रु का गमन या आगमन कुछ नहीं होता। यदि उपरोक्त स्थिति के अतिरिक्त ३, ५, ६ स्थान में पाप ग्रह हो तो शत्रु से युद्ध। यदि उपरोक्त योग में पाप ग्रह चौथे हो तो शत्रु लौट जाता है।

१४) शत्रु आगमन विचार

⇒ यदि प्रश्न कुण्डली के चतुर्थ स्थान में सू, या चं, बैरा हो तो शत्रु की सेना नहीं आती, यदि चौथे बु, शु, शु, बैरा हो तो शत्रु की सेना शीघ्र आती है।

१५) शत्रु निवृत्ति विचार

⇒ यदि प्रश्न लग्न में मेष, धनु, सिंह, वृषभ भी लग्न हो या इनमें से कोई भी राशि चतुर्थ भाग में हो तो शत्रु लौट जाता है।

१६) शत्रु आगमन विचार

⇒ यदि प्रश्नकाल में स्थिर लग्न शनि या गुरु से युक्त हो तो आया हुआ शत्रु मार्ग में ही रुक जाता है। यदि चर लग्न हो और सूर्य तथा गुरु से युक्त हो तो शत्रु जबरन आता है।

१७) इत्र संबंधे अन्य विचार

⇒ सर्वोत्तम बली ग्रह लग्न से यात्रा के समय जिस राशि में स्थित हो उतने सर्वोत्तम भास में यात्री राजा लौट आएगा। यदि स्थिर राशि में ग्रह स्थित हो तो दिगुणित वारे, द्विस्वभाव में

प्रश्न लग्न विचार

इसे तो विगुणित करें। [प्रवासी के लिए भी ऐसा ही समझें] १५३

१८) यात्री आगमन विचार

⇒ साप्तांश जब बनी हो तो यात्री राजा या परदेशी का आगमन

१९) शत्रु के नहीं आने का विचार

⇒ प्रश्न लग्न से, या प्रश्न नक्षत्र से जितने संख्याक चन्द्र लग्न या चन्द्र नक्षत्र हो, उतने ही दिनों में यात्री या प्रवासी का आगमन।

परन्तु अगर इन के मध्य में कोई ग्रह हो तो प्रवासी का आगमन नहीं होगा।

२०) शत्रु निवृत्ति ज्ञान विचार

⇒ यदि प्रश्न लग्न या प्रश्न लग्न से साँचे अथवा दसवें शुभ ग्रह हों तो नगराधिप (स्थायी) की विजय। यदि प्रश्न लग्न से नवम स्थान में शनि या मंगल हों तो नगराधिप नगर से हारकर भाग जाता है। यदि प्रश्न लग्न से नवम स्थान में बुध, गुरु, शुक्र हों तो नगराधिप की विजय होती है।

२१) यातु निवृत्ति ज्ञान विचार

⇒ प्रश्न लग्न के तृतीय से अष्टम स्थान तक ६ राशि की पौर (स्थायी) संज्ञा है। एवं नवम से द्वितीय तक ६ राशि की यात्री संज्ञा है। यदि यात्री स्थान में बली अधिक शुभ ग्रह हों तो यात्री के लिए हितकर और यदि स्थायी स्थान में बली शुभ ग्रह अधिक हों तो स्थायी के लिए हितकर। इसके विपरीत (अर्थात् पाप ग्रह के रहने से) यात्री स्थायी दोनों का विपरीत। यदि दसवें, ग्यारहवें, बारहवें

प्रश्नलग्न विचार

स्थान में पाप ग्रह हो तो यात्री के पुरवासियों का अनिष्ट और राजा को शुभ पाला। पौर, या प्रतिवादी, स्थायी तथा मुष्कलेह उसे कहते हैं जिस पर मुकदमा दायर या चढ़ाई की जाए। और यात्री बादी तथा मुष्कलेह उसे कहते हैं जो मुकदमा दायर करे या चढ़ाई करे।

२२) शत्रु-युद्ध विचार

⇒ यदि पुरुष सङ्ग राशि तुला, मिथुन, कन्या, कुम्भ, धनु का पूर्वाह्न लग्न में हो और शुभ ग्रह से युक्त हो, अथवा पुरुष राशि एकादश या द्वादश भाग में हो, और शुभ ग्रह से युक्त हो तो यात्री और स्थायी दोनों में संधि (मेल) हो जाता है। यदि इन स्थानों में द्विस्वभाव राशि पाप ग्रह युक्त हो तो लड़ाई।

२३) यात्री-स्थायी युद्ध विचार

⇒ यदि द्विपद सङ्ग राशि में शुभ ग्रह हो, अथवा केन्द्र में शुभ ग्रह हो, और शुभ ग्रह से दृष्ट हो तो यात्री और स्थायी में संधि। यदि पाप ग्रह केन्द्र अथवा मनुष्य सङ्ग राशि में हो तथा पाप ग्रह से दृष्ट हो तो विरोध।

२४) शत्रु सेना आगमन का विचार

⇒ प्रश्नलग्न से २, ३ स्थान में गुरु या शुक्र हो अथवा दोनों हो तो यात्री या प्रवासी शीघ्र लौट आएगा।

२५) शुभाशुभ विचार

⇒ प्रश्नकालिक लग्न से यदि शुभ ग्रह केन्द्र या त्रिकोण में हो और पाप ग्रह केन्द्र व अष्टम भाग के सिवाय अन्य भागों

प्रश्नलग्न विचार
मे हो तो प्रश्नकर्ता की अभीष्ट कार्य सिद्धि अवश्य हो जाती है।
इसके विपरीत यदि केन्द्र त्रिकोण में पाप ग्रह हों और केन्द्र त्रिकोण
व डाष्टम भाव के सिवाय अन्य किसी भाव में शुभ ग्रह हों तो
विपरीत।

२६) लाभालाभ विचार

⇒ प्रश्नकालिकलग्न से ३, ५, ७ स्थान में शुभ ग्रह शुभ फल
देते हैं। परन्तु यदि पाप ग्रह हों तो अशुभा तुला, कन्या, मिथुन,
कुम्भ यह पुरुष (द्विपद) संज्ञक राशि प्रश्नलग्न में हो तथा
शुभ ग्रह युक्त या दृष्ट हों तो शुभ।

२७) लाभालाभ योग-विचार

⇒ यदि प्रश्नकालिकलग्न से शुभ ग्रह सातवें या दसवें
स्थान में हों तो पृच्छ के लिए स्थान लाभकारक योग। और
प्रश्नलग्न से, दूसरे तथा पाँचवें स्थान में शुभ ग्रह हों तो पृच्छ
के लिए मान तथा द्रव्य लाभकारक योग है। यदि पाप ग्रह गीर्वे,
१२वें स्थान में हों तो अशुभा। यदि मीन चन्द्र व पाप ग्रह लग्न
में हों तो अशुभ, दसवें हों तो शुभ।

२८) अन्य शुभाशुभ विचार

⇒ प्रश्नकालिकलग्न से २, ७, १०, ११, ६, ३ स्थान में से कोई
भी स्थान चन्द्र और गुरु युक्त या दृष्ट युक्त हो तो लाभालाभ
प्रश्न में स्त्री लाभ। यदि प्रश्नलग्न में या प्रश्नलग्न से ३, ६, ५, ८
स्थान में पाप ग्रह हों तो कार्य व द्रव्य नाश करनेवाले, शुभ ग्रह
हों तो शुभ फल प्रदान करते हैं।

२९) रोग प्रश्न: विचार

⇒ यदि प्रश्नकालिकलग्न में या ७, ८, ५ स्थान में किसी भी
से

प्रश्नलग्न विचार

स्थान में शुभग्रहों की दृष्टि से युक्त होकर शुभग्रह हो और ३, ६, १०, १२ स्थान में चन्द्र हो तो रोगी विषय के प्रश्न में रोगी का रीति कल्याण और विपरीत होने से अशुभा।

३०) प्रवासी घिन्ता विचार

⇒ यदि प्रश्न का लीक लग्न से सहाई सभी ग्रह प्र. र. और इरे इन स्थानों में हों तो बहुत दूर प्रवासी भी शीघ्र लौट आएगा और उपरोक्त (२, ३, ५) भावों में शुभ ग्रह हों तो गण्ट वस्तु का शीघ्र लाभ और प्रवासी शीघ्र आता है। यदि केवल बुध शि. हो तो भी आरम्भ फलादेश।

३१) प्रवासी सम्बन्धी विचार

⇒ यदि प्रश्न का लीक लग्न से दया खलौ कोई भी ग्रह हो और केन्द्र में गुरु, त्रिकोण में बुध या शुक्र हों तो प्रवासी शीघ्र लौट आएगा।

३२) प्रवासी आगमन विचार

⇒ यदि प्रश्न लग्न से द. स्थान में चन्द्र हो और केन्द्र पाप ग्रह रहित हो तो प्रवासी मुरा पूर्व लौट आएगा यदि केन्द्र में शुभ ग्रह हों तो अत्यंत शुभा।

३३) प्रवासी आगमन विचार

⇒ यदि प्रश्न लग्न से प्रवासी संबंधी सभी प्रश्नोत्तर के लिए यदि लग्न दृष्टोदय [मेष, वृष, कर्क, धनु, मकर, मीन] राशि में हो और पाप ग्रह दृष्ट हो अथवा पाप ग्रह १, ३, ४, ६, ७, १० इन भावों में शुभ ग्रह दृष्टि रहित हों तो प्रवासी को घोर कष्ट या मृत्यु

३४) प्रवासी के आगमन के समय का विचार

⇒ प्रवासी के आगमन संबंधी प्रश्न में, प्रश्नलग्नसे आगे जितने संख्याक राशि में जो कोई भी ग्रह हो, उस संख्या से १२ को गुणाकर गुणनफल संख्या तुल्य दिनों में प्रवासी वापस आए। अथवा जितने दिनों में वह ग्रह वस्त्रा प्राप्त करेगा उतने दिनों में प्रवासी की वापसी।

३५) चौराजान विचार

⇒ नष्ट वस्तु संबंधी प्रश्नोत्तर में यदि प्रश्नकाल में स्थिर लग्न हो या स्थिर राशि के नवमांश लग्न में हो या वर्गोत्तम नवमांश लग्न में हो (वर्गोत्तम- चर के प्रथम, स्थिर के पंचम, द्विस्वभाव के नवम नवमांश) तो खोई वस्तु उसी स्थान में है और किसी निजी व्यक्ति ने ही चुड़ाई है।

३६) नष्ट वस्तु स्थित स्थान विचार

⇒ यदि प्रश्नलग्न में प्रथम द्रेष्काण हो तो नष्ट वस्तु घर के द्वारदेश की ही समीप है, और द्वितीय द्रेष्काण हो तो गृह के मध्य भाग में नष्ट वस्तु स्थित है, और यदि तृतीय द्रेष्काण हो तो घर के पीछे या घर के बाहर कहीं नष्ट वस्तु गयी है।

३७) लाभालाभ विचार

⇒ यदि प्रश्नलग्न में पूर्ण चंद्र हो अथवा शुभग्रह की दृष्टि से युक्त होकर शीर्षोदय राशि के लग्न में कोई शुभग्रह हो तो खोई वस्तु शीघ्र लाभ। यदि बलवान शुभग्रह ११वें भाग में प्रश्न काल के समय हो तो भी नष्ट वस्तु शीघ्र लाभ होती है।

प्रश्न लग्न विचार

३८) नष्ट वस्तु दिशा विचार

⇒ नष्ट वस्तु की दिशा और दूरी ज्ञान के विचार में, जो बलवान ग्रह केन्द्र में स्थित हो उसके अनुसार दिशा जानना (ग्रह दिशा ज्ञान-पुनराशा) यदि बलवान ग्रह केन्द्र में न हो तो लग्न से दिशा का ज्ञान। मेष, सिंह, धनु से पूर्व, वर्षा, कन्या, मकर से दक्षिण। मिथुन, तुला, कुम्भ से पश्चिम। कर्क, वृश्चिक, मीन से उत्तर दिशा। लग्न स्थित नवांश के द्वारा योजन प्रमाण।

३९) कन्या पुत्र जन्म विचार

⇒ यदि लग्न से शनि विषम स्थान में हो तो पुत्र जन्म के प्रश्नोत्तर में पुत्र-जन्म, यदि शनि सम स्थान में हो तो कन्या जन्म। विवाह सम्बन्धी प्रश्नोत्तर में शनि विषम स्थान में हो तो नर को स्त्री लाभ, शनि सम स्थान में हो तो स्त्री लाभ नहीं।

४०) विवाह योग विचार

⇒ विवाह प्रश्न में यदि लग्न से चन्द्र २, ५, ११ या ८ स्थान में शुक्र, सूर्य, बुध से दृष्ट होकर स्थित हो तो विवाह होगा, अथवा शुभग्रह केन्द्र या त्रिकोण में हो तो भी विवाह अवश्य होगा।

४१) वर्षा विचार

⇒ वर्षा त्रय में वर्षा सम्बन्धी प्रश्नोत्तर में यदि चन्द्र और सूर्य से सप्तम भाव में शुक्र या शनि हो, अथवा प्रश्नलग्न से २, ३, ४, ८ स्थान में शुक्र, शनि हो तो अच्छी वर्षा।

४२) प्रश्नलग्न से वर्षा विचार

⇒ वर्षा त्रय में वर्षा सम्बन्धी प्रश्नोत्तर में यदि शुक्लपक्ष हो और शुभग्रह जलचर (मीन, कर्क, मकर, कुम्भ) राशि में स्थित हो

प्रश्न लग्न विचार

१५६

या प्रश्न लग्न से २, ६, केन्द्र स्थान में हो अथवा चन्द्र जलचर राशि में हो तो वर्षा अच्छी।
या लग्न से

४३) गर्भ कन्या-पुत्र जन्म विचार

⇒ पुत्र और कन्या जन्म संबंधी प्रश्नोत्तर में यदि पुरुष राशि (मेष, मिथुन, सिंह, तुला, धनु, कुम्भ) बलवान होकर लग्न में हो और पुरुष राशि सम्बन्धी षड्वर्ग भी पड़े और पुरुष ग्रह (सूर्य, मंगल, गुरु) की दृष्टि से युक्त हो तो पुत्र जन्म। विपरीत में कन्या जन्म यदि बुध लग्न में हो तो अभी प्रसूत नहीं हुई है ऐसा कहना।

४४) प्रश्नकर्ता की इच्छित स्त्री की अवस्था विचार

⇒ प्रश्नकर्ता को कैसी स्त्री इच्छित है, इस प्रश्नोत्तर के विचार में यदि प्रश्न लग्न में बालचन्द्र या बुध बैठा हो या लग्न पर दृष्टि हो तो पृच्छक कुमारिका स्त्री की इच्छा करता है। यदि प्रश्न लग्न में युवा चन्द्र हो तो युवती, वृद्ध चन्द्र हो तो वृद्धा की चाह। यदि लग्न में सूर्य या गुरु हो तो प्रसूता स्त्री की चाह, मंगल या शुक्र हो तो कर्मशायुवती की चाह करता है।

इस तरह स्त्री पुरुष दोनों के इच्छित प्रश्नोत्तर में अवस्था का निर्णय भी लिया जा सकता है, तथा चौर प्रश्न में चौर की अवस्था आदि भी जानी जा सकती है।

४५) प्रश्नकर्ता के इच्छित प्रश्नकार्य सम्बन्धी विचार

⇒ इच्छानुसार चिंतित प्रश्न में यदि प्रश्न लग्न में कोई बलवान ग्रह हो तो अपने समान किसी मनुष्य की चिंता होती है। इस स्थान में भाई की। पाँचवें स्थान में संतान की, ४ स्थान में माता या बहिन की, ६ स्थान में शत्रु की, सातवें में स्त्री की, दूबें में तो धर्म की, १०वें हो तो गुरु या पिता की, प्रश्न लग्न में जो नवमांश हो उसका नवमांशपति बलवान होकर लग्न में हो तो अपने विषय की चिंता, यदि नवमांशपति

का मित्र बलवान होकर स्थित हो तो मित्र को, यदि नवमांश पति का शत्रु बलवान होकर स्थित हो तो शत्रु-चित्त।

४६) परदेसी के आने का विचार

⇒ यदि चर राशि या चर लग्न, पू से आगे वषादि नवांश से प्रश्न का लग्न हो तो प्रवास चिंता और प्रवास का होगा। यदि लग्न से उर्वे भाव स्थित भौमादि ग्रह प्रश्नकाल में उस स्थान को त्याग करके आगे जाने वाले हो, और फिर वक्र गति हो उस स्थान में न आएँ तो प्रवास चिंता और प्रवासी लौट आयेगा। यदि वक्री होकर लौट आएँ तो प्रवासी घर लौटने वाले।

४७) प्रश्नकर्ता कैसी स्त्री से प्रेम करता है

⇒ प्रश्नकर्ता कैसी स्त्री से प्रेम करता है इस प्रश्नोत्तर में यदि लग्न से उर्वे स्थान में सू, मं, शु, हो किसी दूसरी स्त्री से प्रश्नकर्ता का संयोग। गुरु ही तो अपनी स्त्री से संयोग। बुध या चन्द्र हो तो वेश्या (रण्डी) के साथ संयोग। शनि हो तो अन्त्यज (नीचा) वर्ण की स्त्री के साथ संयोग।

स्त्री की अवस्था का प्रमाण चन्द्र के बाल्य, युवा, वृद्ध के अनुसार करें।

४८) रोमी परदेस में उसका विचार

⇒ प्रवासी के कष्टादि अवस्था के प्रश्नोत्तर में यदि शनि पाप ग्रह युक्त होकर या दृष्ट होकर प्रश्न लग्न से नवमे स्थान में हो, शुभ ग्रह की दृष्टि विहीन हो तो परदेसी कष्ट में। यदि उपर्युक्त योग के साथ आठवें भाव में हो तो परदेसी की मृत्यु।

४९) प्रश्नकर्ता के पिता प्रवासी तो विचार

⇒ यदि प्रश्नकर्ता के पिता प्रवासी हो तो ऊपर लग्न से अष्टम

प्रश्नलग्न विचार

१६१

स्थान में सूर्य, शुभग्रह से युक्त होकर तो पिता अन्य देश में चला गया
नहीं। यदि शुभग्रह योग न हो तो उसी स्थान में रहेंगे।

१७) नष्ट वस्तु का स्वरूप और चोर की दिशा व स्थिति और स्वर्णपत्तन
विचार
⇒

स्त्री संबंधी फलदेश

स्त्रियों संबंधित फलदेश

मावों की त्रिकोणादि संज्ञाएँ

१) त्रिकोण - ५, ६

२) केन्द्र - १, ४, ७, १०

३) पणफर - २, ५, ८, ११

४) डीपो स्लिम - ३, ६, ९, १०

५) मारका - २, ७

स्त्री संबंधी फलादेश

नवमांश

एक राशि के नौवें भाग को नवमांश कहते हैं। एक नवमांश ३ अंश २० केला का होता है। नवमांश इस क्रम से चलते हैं:-

मेष का पहला नवमांश - मेष

मेष का दूसरा नवमांश - वृष

मेष का नवां नवमांश - धनु

वृष का पहला नवमांश - मकर इत्यादि [स्त्री जातक विज्ञान]

वर्गोत्तम नवमांश - चर राशि का पहला, स्थिर का ^{पाँचवा} ~~द्वितीय~~ स्वभाव का ~~द्वितीय~~ नवमांश वर्गोत्तम नवमांश है। [स्त्री जातक विज्ञान]

त्रिशांश - विषम राशियों में पहले ५ अंश मंगल के, अगले ५ राशि के, अगले ८ अंश गुरु के, अगले ७ अंश ~~बुध~~ बुध के तथा अगले ५ अंश शुक्र के त्रिशांश होते हैं। अर्थात् अगर कोई ग्रह अंश ४ में है तो वह मंगल के त्रिशांश में है।

सम राशियों में पहले ५ अंश शुक्र के, अगले ७ अंश बुध के, अगले ८ अंश गुरु के, अगले ५ अंश शनि के, अगले ५ अंश मंगल के त्रिशांश हैं। [स्त्री जातक विज्ञान]

ग्रहों की अवस्थाएं

१) शिशु अवस्था - ३ से ८ अंश तक

२) युवा अवस्था - १० से २२ अंश तक

३) वृद्ध अवस्था - २३ से २८ अंश तक

४) मृत अवस्था - २९ से ३० अंश तक [स्त्री जातक विज्ञान]

१) शुभ ग्रह - पूर्ण चन्द्र, शुभ ग्रह युक्त बुध, गुरु, शुक्र

२) अशुभ ग्रह - मीन चन्द्र, पाप ग्रह युक्त बुध, र्सस, शनि, राहु, केतु

३) क्रूर ग्रह - सूर्य, मंगल, शनि क्रम से कम क्रूर

४) पाप ग्रह - शनि, मंगल, सूर्य क्रम से कम पापी

[स्त्री ज्ञातक विज्ञान]

स्त्री फालादेश में राशिफल

मेष ⇒ राशि हो तो वह स्त्री सुन्दर, पति प्रिया, गुरुजन-सेविका

वृष ⇒ राशि में हो वह स्त्री सुशीला, पुत्रवती, विचारशील, विद्या सम्पन्न
पति प्रिया, धनवती, तन्त्रशास्त्र में विश्वास

मिथुन ⇒ राशि में हो तो वह गुणवती, रूपवती, सुन्दरनेत्र, सुन्दर,
सुशीला, परोपकारिणी, धन धान्य सम्पन्न।

कर्क ⇒ राशि हो तो स्त्री शत्रु रहित, मानवती, आप्तजनो में
पूज्य, ब्राह्मणों व देवतों की भक्त।

सिंह ⇒ राशि में स्त्री परम सुंदरी, वस्त्राभूषण युक्त, क्रूर, माँसाहार

कन्या ⇒ राशि हो तो स्त्री शुद्ध आचरणवाली, शत्रु विजयी, समाशील,
धन एवं पशु युक्त, पतिप्रिया

तुला ⇒ राशि हो तो स्त्री व्रत सम्पन्न, सुन्दर, पुत्रवती, बन्धुवर्ग से
अनुवागी, पतिव्रता

वृश्चिक ⇒ राशि हो तो स्त्री निराभिमानी, धनवती, कार्यकुशल,
ज्येष्ठ सदस्यों की प्रिया होती है।

धनु ⇒ राशि हो तो स्त्री दानी, विनयशील, प्रेम करने वाली, व्रत
सम्पन्न, गीति प्रिया, कन्या-सन्तति

मकर ⇒ राशि में स्त्री सुन्दर, सत्याप्रिय, गम्भीर, विद्यावती, नीतियुक्त,
नियमित स्वभाव, शत्रु विजयी

कुम्भ ⇒ राशि हो तो रूपवती, सुन्दर, दानशील, सत्कर्म, संपत्तिशील,
संतानवती, अभिमानी।

स्त्री संबंधी फलादेश
मौन राशि हो तो सुन्दर, सुशील, धार्मिक, लज्जायुक्त, माननी, पुत्रवती
कला-निपुण। [स्त्री जातक विज्ञान]

त्रिशांश फल [केवल स्त्रियों के लिए]
लग्न तथा चन्द्र में जो बली हो वह यदि मेष, वृश्चिक राशि में हो
और यदि

१) मंगल के त्रिशांश में हो तो ऐसी कन्या दुश्चरित्रा विवाह से पूर्व
पर-पुरुष गायन करती है।

२) बुध के त्रिशांश में हो तो मायाविनी।

३) गुरु के त्रिशांश में हो तो पतिव्रता।

४) शुक्र के त्रिशांश में यदि हो तो दुष्ट कर्मी।

५) शनि के त्रिशांश में हो तो दासी, कुँआरी रहती है।

वृष, तुला राशि में हो तो और यदि

१) मंगल का त्रिशांश हो तो दुश्चरित्रा

२) बुध त्रिशांश में हो तो समस्त कला निपुण, संगीत वादन की ज्ञाता

३) गुरु के त्रिशांश में हो तो गुणवती, गीत-वाद्य-नृत्य-चित्रकारी
शिल्प आदि कलाओं में प्रवीण होती है।

४) शुक्र के त्रिशांश में हो तो सर्व गुण युक्त, शीलवती।

५) शनि के त्रिशांश में हो तो पुनर्भू अर्थात् पति के मरणाने
पर अथवा उसके रहते दूसरे पुरुष को बैठ जाती है।

मिथुन, कन्या राशि में हो और

१) मंगल के त्रिशांश में हो तो ऐसी स्त्री कपरी

२) बुध - गुणवती

३) गुरु - पतिव्रता

४) शुक्र -

५) शनि - नपुंसक पति या स्वयं नपुंसक जैसी आकृति।

स्त्री संबंधी फालादेश

१७५

कक राशि में यदि हो और

१) मंगल के त्रिशांश में हो तो स्त्री स्वेच्छारिणी, किसी की अधिक न मानने वाली, पर पुरुष गामिनी।

२) बुध - चित्रकारी, अन्य शिल्पों की जानकार होती है।

३) गुरु - शुभ, गुणवती

४) शुक्र -

५) शनि - पतिघातिनी, पति की हत्यारी

सिंह राशि में हो और

१) मंगल के त्रिशांश में हो तो स्वेच्छारिणी, पुरुषों जैसी आकृति।

२) बुध - दुश्चरित्रा, पुरुषों जैसा स्वभाव

३) गुरु - राजपत्नी, महाभाग्य शालिनी

४) शुक्र - पर-पुरुष गामी, अपवित्र

५) शनि - पुरुषों के समान प्रगल्भ, पर पुरुष गामिनी, कुलघा

धनु - मीन राशि में हो और

१) मंगल के त्रिशांश में हो तो अनेक गुण युक्त

२) बुध - धनवती, ज्ञानवती

३) गुरु - समस्त शुभ गुण युक्ता

४) शुक्र -

५) शनि - अल्प-कामवत्सला, अल्प रति

मकर - कुम्भ राशि हो और

१) मंगल का त्रिशांश हो तो दसी

२) बुध - दुष्ट, खोटी बुद्धि

३) गुरु - पतिव्रता

४) शुक्र - बन्ध्या

५) शनि - नीच व्यक्ति से प्रेम, सहवास [स्त्री जात्य विज्ञान]

स्त्री संबंधी फलदेश

नवमांश फल [स्त्री जातक विज्ञान]

~~सप्तम भाव में निम्नलिखित होना जिस ग्रह का~~

१) सप्तम भाव में सूर्य की राशि या नवमांश हो तो स्त्री का पति विद्वान्, लेखक, विचारक, अधिकारी, कोमल, ऊँचा शरीर, मन्द रतिकरने वाला, व्यवसायी

२) सप्तम भाव में चन्द्र की राशि या नवमांश हो तो स्त्री का पति दयालु, कोमल, शीलवान्, धनी, व्यवसायी, विद्वान्, अत्यंत कामी।

३) सप्तम भाव में मंगल की राशि या नवमांश हो तो स्त्री का पति कृषक, जीमिंदार, क्रोधी, हिंसक, व्यसनी, नीच, धनी, अनेक स्त्रियों की चाह रखने वाला होता है।

४) सप्तम भाव में बुध की राशि या नवमांश हो तो ऐसी स्त्री का पति कवि, लेखक, सम्पादक, शोधकर्ता, विद्वान्, चतुर, मायावी, न्यायाधीश, कामी, रतिज्ञ, धनी, सर्व कला कुशल होता है।

५) सप्तम भाव में गुरु की राशि या नवमांश हो तो ऐसी स्त्री का पति जितेन्द्रिय, तेजस्वी, गुणवान्, विशेषज्ञ, धर्मालु, प्राचीन परम्पराओं का पोषक, लोभी, छिडछिडा, त्यागी, सेवा परायण, मन्त्री, न्यायाधीश, पत्नी भक्त होता है।

६) सप्तम भाव में शुक्र की राशि या नवमांश हो तो ऐसी स्त्री का पति सुन्दर, भोमी, गुणवान्, सौभाग्यशाली, सबका प्रिय होता है।

७) सप्तम भाव में शनि की राशि या नवमांश हो तो ऐसी स्त्री का पति सामान्य धनी, मूर्ख, वृद्ध, आलसी, क्रोधी, व्यसनी, छिडछिडा होता है।

स्त्री संबंधी फलादेश

८) यदि सप्तम भाव में मंगल का नवमांश, शुक्र की राशि की दृष्टि युक्त हो तो ऐसी स्त्री के गुप्तांग में रोग।

९) यदि सप्तम भाव में शुभ ग्रह का नवमांश शुभ ग्रह की दृष्टि से युक्त होकर हो तो ऐसी स्त्री का गुप्तांग अति सुन्दर।

१०) यदि सप्तम भाव तथा अष्टम भाव में पाप ग्रह हों, आवें भाव की स्वामी जिस ग्रह के नवमांश में बैठा हो उस ग्रह की दशा अथवा अन्तर्दशा में वह स्त्री विधवा हो जाती है।

११) यदि शुभ ग्रह शुद्ध होकर (चार) नवमांश कुण्डली में केन्द्रस्थ हों तो ऐसी स्त्री अत्यंत धनी।

१२) यदि मंगल और शुक्र एक दूसरे के नवमांश में हों तो ऐसी स्त्री पर-पुरुष गामिनी होती है।

१३) यदि लग्न में वृष या तुला राशि ^{कुम्भ} हो, उसमें शुक्र का नवमांश हो तो ऐसी स्त्री पुरुषाकृति बनाई हुई और दूसरी स्त्री के द्वारा अपनी कामाग्नि शान्त करती है।

१४) यदि शुक्र - शनि एक दूसरे के नवमांश में हों, आपस में इनका दृष्टि-संबंध हो तो उपर्युक्त फलादेश।

१५) यदि शुक्र - मंगल एक दूसरे के नवमांश में हो तो ऐसी स्त्री पर-पुरुष गामिनी होती है।

१६) यदि चन्द्र, शनि या मंगल के नवमांश में हो तो ऐसी स्त्री पति के प्रति विश्वासघासी, दुराचारीणी होती है। (स्त्री जातक विज्ञान)

स्त्री संबंधी फलादेश

10

१) लग्नस्थ ग्रहराशि का फल

१) यदि लग्न और चन्द्र समराशि में हो ~~और~~ तो स्त्री, स्त्रियों जैसी आकृति वाली, सुन्दरी, अलंकार युक्त, शीलवती, पति प्रिया, पतिव्रता होती है।

यदि शुभ ग्रह दृष्ट हो तो ऐसी स्त्री सुन्दर, वस्त्राभूषण युक्त, शीलवती, शुभगुण सम्पन्न होती है।

यदि क्रूर ग्रह ग्रह की दृष्टि हो तो स्त्री मध्यम स्वभाव वाली

२) यदि लग्न और चन्द्रमा विषम राशि में हो तो ऐसी स्त्री पुरुषों जैसी आकृति वाली, दुराचारीणी, पूर पुरुष गामिनी होती है।

यदि शुभ ग्रह की दृष्टि हो तो ऐसी स्त्री क्रूर स्वभाव वाली होती है।

यदि क्रूर ग्रह की दृष्टि हो तो ऐसी स्त्री दुष्टा, पापिना, बुरे कार्य करने वाली, व्यभिचारीणी होती है।

३) यदि लग्न में चन्द्र और शुक्र दोनों ग्रह हों तो ऐसी स्त्री ईर्ष्यायुक्त, दूसरों को संताप देने वाली परन्तु स्वयं सुखी।

४) यदि लग्न में चन्द्र और बुध-ये दोनों ग्रह हों तो ऐसी स्त्री कला-निपुण, सुन्दरी, सबको प्रिय, सुखी, गुणवती, गायन-वादन में कुशल।

५) यदि लग्न में बुध और शुक्र-ये दोनों ग्रह हों तो ऐसी स्त्री रूपवती, सौभाग्यवती, कला-कुशल होती है।

६) यदि लग्न में स्वराशिन्य चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्र-ये ग्रह बली हों तो जातक अनेक शास्त्रों में निपुण।

स्त्री संबंधी फालादेश

136

ज) यदि लग्न में (को) चन्द्र, बुध, शुक्र (स्व) बुध, गुरु, शुक्र (भा) बुध, गुरु और चन्द्र इन तीनों ग्रहों की युति हो तो ऐसी स्त्री वस्त्राभूषण युक्त, धनवती, रूपवती, गुणवती, सर्वप्रिय, सुखी होती है।

घ) यदि लग्न में केवल शुभग्रह हों तो ऐसी स्त्री अनेक प्रकार के वस्त्राभूषण युक्त सुखी होता है।

ङ) यदि लग्न में केवल पाप ग्रह हों तो ऐसी स्त्री दुखी, दरिद्र होती है।
[स्त्री जातक विज्ञानी]

ख

२) राजयोग

ग) यदि सप्तम भाव में शुक्र, अन्य शुभ ग्रह हों तो ऐसी स्त्री ऐश्वर्याशाली

श) यदि लग्न में चन्द्र, दशम में बुध, ११वें सूर्य हो तो जातक के अनेक पुत्र-पौत्र

इ) यदि लग्न में उच्च का बुध, द्वितीय भाव में शुक्र, दशम भाव में चन्द्र, ११वें भाव में सूर्य हो तो ऐसी स्त्री समाज में राजपत्नी के समान ऐश्वर्याशाली होती है।

१) यदि लग्न में गुरु, सप्तम चन्द्र, दशम शुक्र हो तो ऐसी स्त्री नीच कुल में उत्पन्न होने पर भी रानी, ऐश्वर्याशाली के समान

२) यदि लग्न में कर्क राशि का गुरु या मीन का शुक्र हो तथा मन्था राशि में बुध हो, सप्तम भाव में मंगल उच्चस्थ हो तो स्त्री को अत्यधिक सुख प्राप्ति।

३) यदि लग्न में कन्था राशि हो और उसमें बुध, शुक्र की युति हो

स्त्री संबंधी फलादेश

तथा वृष राशि का चन्द्र हो अथवा कर्क या मीन राशि का गुरु हो तो ऐसी स्त्री अत्यंत सुखी।

ग) यदि लग्न में उच्चस्थ बुध तथा एकावश भाव में गुरु हो तो ऐसी स्त्री अत्यंत सुखी होती है।

घ) यदि चतुर्थ भाव में उच्च का चन्द्र हो तो गुरु से दृष्ट हो तो ऐसी स्त्री अत्यंत सुखी।

ङ) यदि सप्तम भाव में कर्क राशि हो तथा सूर्य एवं गुरु की दृष्टि प्राप्त हो तो ऐसी स्त्री पुत्र-पौत्रादिक सुख से सम्पन्न, ऐश्वर्यशाली होगी।

च) यदि सप्तम भाव में मिथुन, सिंह, कन्या, तुला, कुम्भ राशि का चन्द्र हो तथा केन्द्र में पाप ग्रह न हो तो ऐसी स्त्री अत्यंत सुखी।

ज) यदि ११ वें भाव में चन्द्र हो, सप्तम भाव में बुध तथा शुक्र हो, गुरु की उन पर दृष्टि हो तो स्त्री अत्यंत सुखी।

झ) यदि लग्न, ३, ५, ८ वें - इन्हें छोड़कर अन्य किसी भाव में चार शुभ ग्रह हो तो राजयोग कावक होते हैं।

ड) यदि केन्द्र में कोई राशि शुभ ग्रहों से युक्त हो तथा सप्तम भाव में मेष, मिथुन, कन्या, कुम्भ राशि में पाप ग्रह युक्त हो तो विशेष राजयोग।
[स्त्री जातक विज्ञान]

२) शुभ योग

१) यदि ज्वे, चवे स्थान में शुभग्रह को दृष्टि हो अथवा शुभग्रह युक्त हो तो स्त्री सौभाग्यशाली, पतिव्रता, पवित्र।

२) यदि सप्तम तथा अष्टम भाव में पाप ग्रह हों, परन्तु नवम भाव में शुभ ग्रह हों तो स्त्री पति-पुत्र युक्त, सुखी।

३) यदि सप्तम भाव में कर्क राशि गत चन्द्र गुरु हों तो स्त्री अत्यंत सुंदर।

४) सप्तम भाव में सम राशि हो और वह शुभ ग्रहों से दृष्ट या युक्त हो तो स्त्री पुण्यात्मा एवं राजमान्य।

५) यदि सप्तम भाव में मीन का शुक्र हो तो ऐसी स्त्री सुंदर, संगीत कला में निपुण होती है।

६) यदि सप्तम भाव में बुध तथा चन्द्रमा हो तो ऐसी स्त्री सब कलाओं को जानने वाली, गुणवती, सुखी होती है।

७) यदि सप्तम भाव में शुक्र और बुध हों तो ऐसी स्त्री अत्यंत सुंदर, सब कलाओं को जानने वाली, भाग्यवती।

८) यदि सप्तम भाव में शुक्र और चन्द्र हो तो ऐसी स्त्री सुंदर, सुखी, इच्छालु होती है।

९) यदि केवल षड्वर्ग में शुक्र केतु बैठे हों तथा चन्द्र दृष्टि युक्त हों तो ऐसी स्त्री अत्यंत सुंदर, स्थूल निम्ब, धन-पुत्रादि युक्त, सुखी, ऐश्वर्याशाली होती है।

स्त्री संबंधी फलादेश

१०) यदि कर्क लग्न का उदय हो, सप्तम भाव में सूर्य गुरुद्वि युक्त हो तो ऐसी स्त्री अप्सराओं में प्रधान, रानी के समान सुन्दर, स्वस्थ, ऐश्वर्याशालिनी, पुत्र-पौत्रादि युक्त होती है।

११) यदि शुभग्रह केन्द्र में हो तथा पाप ग्रह छठे, नवें एवं दशवें भाव में हों तो ऐसी स्त्री सुन्दर, धनवती, गुणवती, पुत्रवती, ऐश्वर्याशालिनी होती है।

१२) यदि षड्वर्ग में शुद्ध होकर तीन ग्रह केन्द्र में हों तो ऐसी स्त्री रानी होती है।

१३) यदि बुध उच्च का होकर लग्न में हो, गुरु पावे भाव में हो तो ऐसी स्त्री राज-पत्नी होती है।

१४) यदि वृष, कर्क, कन्या, वृश्चिक, मकर, मीन राशि में मंगल, बुध, गुरु व शुक्र हों तो ऐसी स्त्री बड़ी विदुषी, साध्वी, गुणवती, पुत्रवती। स्त्री ज्ञान विज्ञान

१) अशुभ योग

१) यदि सप्तम भाव में पाप ग्रह से दृष्ट शनि हो तो ऐसी स्त्री सुखस्थिति में वृद्ध हो जाती है।

२) यदि सप्तम भाव में पाप-ग्रह हो तो ऐसी स्त्री केशहीन।

३) यदि जन्म समय चन्द्र, गुरु, शुक्र बलहीन हो, शनि मध्यम बली हो सूर्य, मंगल, बुध बलवान होकर लग्न में किसी राशि में हो तो स्त्री पुरुषों के समान प्रख्यात।

४) यदि लग्न में चन्द्र-मंगल का योग हो तो ऐसी स्त्री का मासिक

स्त्री संबंधी फलादेश
धर्म अव्यवस्थित होता है।

१८३

४) यदि लग्न में चन्द्र-राहु हो तो ऐसी स्त्री को हिंसुरीरिया होता है।
(स्त्री जातक विज्ञान)

५) पति त्याग योग

१) यदि सप्तम भाव में एक पाप ग्रह बलहीन बैठे हो तथा उस पर किसी शुभग्रह की दृष्टि भी न हो तो ऐसी स्त्री को उसका पति त्याग कर देता है।

२) यदि सप्तम भाव में सू०, मं०, श० हीनकली हों और वे शुभग्रह से दृष्ट भी हो तो ऐसी स्त्री को उसका पति त्याग देता है। (स्त्री जातक विज्ञान)

६) दुराचारिणी योग

१) यदि लग्न में विषम राशि हो शनि मध्य कली हो एवं च०, शु० तथा बु० बलहीन हों एवं सू०, मं०, गु० बलवान हों तो ऐसी स्त्री बेहू पुरुष गामी होती है।

२) यदि मं० अथवा श० की राशि लग्न में हो और उसमें चन्द्र सहित शु० बैठे हो तथा वह पाप ग्रह से दृष्ट भी हो तो ऐसी स्त्री पर पुरुष गामिनी होती है।

३) यदि सप्तम भाव में कर्क अथवा सिंह राशि हो और उसमें शनि के सहित मं० बैठे हो तो ऐसी स्त्री यदि उत्तम कुल में जन्मी हो तो भी वह विधवा होकर अथवा कपट से पति को त्याग कर वेश्या तथा व्यभिचारिणी होती है। ऐसी स्त्री दुष्टा तथा धनी होती है।

४) यदि सप्तम भाव में कली पापग्रह बैठे हो तथा पापग्रह की

स्त्री संबंधी फलदेश

दृष्टि भी हो तो ऐसी स्त्री पति सुखसे वध्या बह चंचल गैत्रों वाली तथा दुराचारिणी होती है।

अ) यदि सप्तम भाव दो पाप ग्रहों से युक्त अथवा दृष्ट हो तो स्त्री नीच तथा दुराचारिणी।

क) यदि सप्तम भाव में पाप ग्रह दृष्ट शुरू हो तो ऐसी स्त्री घर छोड़कर स्वेच्छा से जारकर्म करती है।

ख) यदि सप्तम भाव में कर्म का झल हो तो उपर्युक्त योग

च) यदि सप्तम भाव में शुभ ग्रह बर्हीन हों तथा उनके साथ पाप ग्रह भी हों तो ऐसी स्त्री अपने पति को छोड़कर दूसरे पति को डांगी कर करती है।

द) यदि सप्तम भाव तीन पाप ग्रहों से युक्त, दृष्ट हो तो उपर्युक्त

१) यदि लग्न में मेष, मकर, वृश्चिक, कुम्भ तथा उसमें चन्द्र, शुक्र दोनों ही बैठे हों तथा इन पर पाप ग्रह की दृष्टि भी हो तो ऐसी स्त्री अपनी माता के साथ पक्ष-पुरुष गमन करती है।

२) यदि सप्तम भाव में चंग, मंग हो तो ऐसी स्त्री पक्ष-पुरुष गमन करती है।

३) यदि राहु सप्तम भावस्थ हो तथा सप्तमेश का राहु से द्रव्यशाल योग बनता हो तो ऐसी स्त्री डाकपट्टी, पति का परिधारा करने वाली

स्त्री संबंधी फलादेश

१३) यदि शुक्र द्वितीयेश होकर राहु से युक्त हो तो ऐसी स्त्री दुराचारीणी १२५

१४) यदि मंगल द्वितीयेश होकर शनि से युक्त हो तो ऐसी स्त्री दुराचारीणी

१५) यदि अष्टम भावस्थ मंगल हो तो ऐसी स्त्री व्याभिचारिणी।

१६) यदि अष्टम भावस्थ राहु हो तो ऐसी स्त्री धर्म विहीन, पुरुषगामिनी।

१७) लग्न या चन्द्र से २रे या १२वें स्थान में पाप ग्रह हो और बृह शुभग्रह से दृष्ट हो तो ऐसी स्त्री अपने पिता, ससुर के कुल को कलंकित करनेवाली होती है। [स्त्री जातक विज्ञान]

७

७) विवाह सम्बन्धी योग

१) यदि सप्तम भाव में शनि, लग्न तथा चतुर्थ में मंगल वृंश तक हो तो ऐसी कन्या प्रायः कुमारी।

२) यदि सप्तमेश पाप ग्रह युक्त अथवा पाप दृष्ट हो तथा सप्तम भाव में पाप ग्रह हो तो ऐसी कन्या प्रायः कुमारी।

३) यदि लग्न या चन्द्र से सप्तम भाव में शनि पापग्रह दृष्टि युक्त हो तो ऐसी कन्या अविवाहिता शुभग्रह हो तो लंबी आयु में विवाह

४) यदि शनि सप्तमेश के साथ हो तो ऐसी कन्या का विवाह बड़ी आयु में

५) यदि सूर्य-दरल का उत्थ शाल हो तो प्रेम विवाह।

६) जिस स्त्री के सप्तम भाव में शुभ-अशुभ दोनों प्रकार के ग्रह हो

स्त्री संबंधी पापग्रहों का निवारण होता है।

ज) यदि लग्नेश अथवा राप्तेश दृक् आठवें या दशम भाग में हो तथा आप्तगेश पापग्रह से पीड़ित हो तो विवाहिक जीवन सुखमय तथा पति द्वारा परित्याग की संभावना है।

झ) यदि जन्मकाल में सप्तम राशि शरीर हो तो पति द्वारा परित्याग की संभावना

ट) यदि सप्तम भाव बलहीन पापग्रह युक्त तथा दृष्ट हो तो वैवाहिक जीवन बलहून तथा परित्याग संभावना प्रबल है। [स्त्री पाप विज्ञान]

८) पति संबंधी योग

१) यदि सप्तम भाव में मीनका शर हो तो ऐसी स्त्री का पति सुंदर, कामशास्त्रज्ञ, शूरवीर तथा शास्त्रकारी होते हैं।

२) यदि सप्तम भाव में बुध, शन की युक्ति हो तो ऐसी स्त्री का पति नृपसक

३) यदि लग्न अथवा चन्द्र से सप्तम में बुध अथवा शनि हो तो स्त्री का पति नृपसक

४) यदि जन्मलग्न चर राशि हो तो पति प्रवासी।

५) यदि लग्नेश, तृतीयेश चर राशि में हो तो पति प्रवासी।

६) यदि जन्मलग्न अथवा चंद्र से सातवें भाव में कोई ग्रह न हो अथवा निर्बल ग्रह हो अथवा सप्तम भाव पर शुभग्रहों की दृष्टि

स्त्री संबंधी फलादेश
न हो तो ऐसे योगवाली स्त्री का पति निरुद्यमी, बीन्ध होता है। १२७

७ यदि लग्न अथवा चन्द्र से सप्तम में चर राशि हो तो ऐसी स्त्री का पति सदैव पर देश में रहता है। यदि स्थिर राशि हो तो विपत्ति

८ यदि पति का जन्मकालीन सूर्य पत्नी के जन्मकालीन सूर्य से १० अंश के भीतर प्रतियोग करता हो तो उनमें जीवन भर परस्पर स्वभाव-वैषम्य रहता है अथवा दोनों में से एक अल्पायु होता है।
[स्त्री जातक विज्ञान]

६ वन्द्या योग

१ यदि पंचम भाव में पापग्रह की राशि हो तथा पंचम भाव पापग्रह युक्त या दृष्ट हो तो ऐसी स्त्री वन्द्या।

२ यदि लग्न में मेष, वृश्चिक, मकर राशि हो और उन पर पापग्रह की दृष्टि हो तो ऐसी स्त्री वन्द्या [स्त्री जातक विज्ञान]

१० वैधव्य योग

१ लग्न और चन्द्र में से जो बलवान हो, उसमें सप्तम भाव में मंगल हो और उस पर पापग्रहों की दृष्टि भी हो तो ऐसी स्त्री बाल-विधवा होती है।

२ यदि अष्टम भाव में क्रूर अथवा पापग्रह हों तो वह वैधव्य कास्क होता है।

३ यदि सप्तमेश अष्टम भाव में हो, अष्टमेश सप्तम भाव में हो और एक या दोनों स्थान पापग्रह से दृष्ट हों तो ऐसी स्त्री विधवा।

५०

स्त्री संबंधी फलादेश

- ४) यदि लग्न अथवा चन्द्र से सप्तम और अष्टम भाव में इया-
४ पापग्रह हों तो ऐसी स्त्री विधवा होती है।
- ५) यदि लग्न अथवा सप्तम-दोनों भावों में पापग्रह हों तो ऐसी
स्त्री विवाह के ७-८ वर्ष बाद ही विधवा।
- ६) यदि चन्द्र से सातवें, आठवें तथा १२वें भाव में शनि तथा
मंगल-दोनों बनें हों और वे पापग्रह दृष्ट भी हों तो ऐसी स्त्री
विवाहोपरांत शीघ्र विधवा।
- ७) यदि चं० से छवें भाव में मं०, शं०, रा०, सू० इन चारों में से कोई
भी दो ग्रह हों तो ऐसी स्त्री विधवा।
- ८) यदि सप्तम भाव में पापग्रह हों तो ऐसी स्त्री विधवा।
- ९) यदि त्रीण अथवा नीच या असंगत राशि का चन्द्र ध्यात्वें
भाव में हो तो ऐसी स्त्री विधवा।
- १०) यदि सप्तम भाव में २० हो तथा सभी पापग्रह उसे देखते हों
तो ऐसी स्त्री या तो कुमारी, अगर विवाह हो जाए तो पति की शीघ्र
मृत्यु। स्त्री अपने पति की विरोधिणी।
- ११) यदि सप्तम भाव में पापदृष्ट मंगल हो तो ऐसी स्त्री विधवा।
- १२) यदि द्वितीय अथवा सप्तम भाव में पापग्रह हों तो भी वैधव्य योग।
- १३) यदि सप्तमेश अथवा अष्टमेश अष्टम भाव में पापग्रह से दृष्ट
या युत हों तो ऐसी स्त्री विधवा।

स्त्री संबंधी फलादेश

१४) यदि अष्टम भाव में राहु तथा चन्द्रमा हो और वे पापग्रह से दृष्ट हो तथा सप्तमेश क्रूर ग्रह से दृष्ट हो तो ऐसी स्त्री विधवा हो जाती है।

१५) यदि सप्तम भाव में एक सप्तमेश शुभग्रह से युक्त अथवा दृष्ट न होकर दो पापग्रहों के मध्य में स्थित हो तो ऐसी स्त्री विधवा।

१६) यदि लग्नेश अथवा अष्टमेश की द्वादश भाव में युति हो तथा अष्टम भाव पर पापग्रह की दृष्टि हो तो ऐसी स्त्री विधवा।

१७) यदि सप्तम भावस्थ राहु तथा लग्नस्थ मंगल शुभग्रह दृष्टि से हीन हो तो ऐसी स्त्री विधवा।

१८) स्त्री तथा पुरुष - दोनों के नाम के अक्षरों को दुगुना करने, मात्राओं को चार गुना करें। फिर सबमें तीन का भाग दें। यदि दो शेष रहें तो पहले स्त्री की मृत्यु होगी और एक अथवा शून्य बचे तो पति की मृत्यु। लघु में १, दीर्घ में २, प्लु में ३ मात्राएँ होती हैं।

१९) यदि लग्न में पापग्रह युक्त राहु हो तथा अष्टम भाव में मंगल हो तो ऐसी स्त्री बाल-विधवा होती है।

२०) यदि आठवें या द्वादश भाव में मेष या वृश्चिक राशि का राहु हो तो ऐसी स्त्री विधवा।

२१) यदि लग्न से उर्वे, चर्वे भाव में सू, मं, शं, शं हों तो स्त्री विधवा।

२२) यदि लग्न तथा सप्तम भाव में पापग्रह हों तथा दर्वे तथा चर्वे

स्त्री संबंधी फालादेश

भाव में चन्द्र हो तो ऐसी स्त्री विवाह के आठवें वर्ष विधवा १६०

२३) यदि लग्न में सूर्य, मंग, रा० हो तो स्त्री विधवा। ~~इस~~ इस
योग के साथ द्वितीय भावस्थ शुक भी हो तो दूसरा पति।
[स्त्री जातक विज्ञान]

११) विष कन्या योग

विष कन्या योग वाली स्त्री शोक सन्तान, हत भाग्या,
वस्त्रालंकार रहित होती है।

१) यदि लग्न में शनि, पंचम में सूर्य तथा नवम भाव में मंगल
हो तो विष कन्या योग।

२) शनिवार के दिन द्वितीया तिथि, आश्लेषा नक्षत्र, मंगलवार को
शतभिषानक्षत्र तथा सप्तमी, रविवार को द्वादशी एवं विशाखा नक्षत्र
हो तो विष कन्या योग।

३) द्वादशी, शतभिषा, रविवार, द्वितीय, आश्लेषा, मंगलवार,
सप्तमी, कृतिका, शनिवार में जन्म हो तो विष कन्या योग।

[स्त्री जातक
विज्ञान]

१२) सन्तति योग

१) यदि लग्न में वृष, सिंह, कन्या या वृश्चिक राशि हो तो ऐसी
स्त्री के कम पुत्र

२) यदि लग्न में उक्त राशियाँ हों और उनमें शुभग्रह स्थित हों
तो ऐसी स्त्री की सुंदर संतानें।

३) यदि पंचम भाव में शुभग्रहों की दृष्टि या योग हो तो स्त्री
अधिक संतानों को जन्म देती है।

स्त्री संतान की फलादेशः

१६१

४) यदि पंचम भाव में धनु या मीन राशि हो तथा गुरु पंचम भाव में स्थित हो अथवा पंचम भाव पर क्रूर ग्रहों की दृष्टि हो तो ऐसे योग वाली स्त्री के संतान नहीं होती।

५) यदि पंचम भाव में सब शुभ ग्रहों हो या उनकी दृष्टि हो तो अधिक संतान।

६) यदि चन्द्र वृष, कन्या, सिंह या वृश्चिक इन में से किसी राशि में स्थित हो तो स्त्री अल्प संतान।

७) यदि सप्तम भाव में चं० अथवा बुध हो तो अधिक कन्याएँ।

८) यदि पंचम भाव में गुरु या शुक्र हो तो पुत्र अधिका।

९) यदि सप्तम भाव पापग्रह की राशि हो अथवा सप्तम भाव पापग्रह से दृष्ट हो तो ऐसी स्त्री के या तो संतान नहीं होती या कम होती है।

१०) यदि पंचम भाव में मं० तथा सप्तम भाव में रा० हो तो संतान का अभाव।

११) यदि सप्तम भाव में सूर्य या राहु हो तो ऐसी स्त्री की संतान नहीं रहती।

१२) यदि अष्टम भाव में शुक्र अथवा गुरु हो तो ऐसी स्त्री निःसंतान।

१३) पंचम भाव में ग्रह फलः

सूर्य - एक पुत्र, चन्द्र - दो कन्या, मंगल - तीन पुत्र, बुध - चार

स्त्री संबंधी फलादेश

कन्या, गुरु-पाच पुत्र, शुक्र-सप्त कन्याएँ।

152

१४) यदि सप्तम भाव में राहु हो तो संतान अभाव या दो कन्याओं का जन्म।

१५) यदि नवम भाव में शुक्र हो तो ६ कन्याएँ।

१६) यदि वृष, वृश्चिक, सिंह या कन्या- इनमें से किसी भी राशी में चन्द्र हो तो स्त्री अल्प पुत्रवती।

१७) यदि पंचमेश के नवमांश में शनि या गुरु हो तो संतान नहीं।

१८) पंचमेश केन्द्र या त्रिकोण में हो तो अधिक संतान।

१९) यदि सप्तम भावस्त मंगल शनि वृश्चिक में हो तो कम संतान।

२०) यदि पति-पत्नी दोनों की कुण्डली में तुला राशिगत शनि या दर्शन हो तो संतान सुख नहीं।

२१) यदि अष्टम भाव में बुध, गुरु, शुक्र हों तो संतान होकर मर जाती है।

२२) यदि चन्द्र और बुध अष्टम भावस्त हों तो स्त्री का क-वन्द या [स्त्री ही संतान की जन्म दे] [स्त्री जातक विज्ञान]

१३) सन्यासिनी योग

१) जिस स्त्री की कुण्डली के सप्तम भाव में पापग्रह बैठा हो तथा नवम भाव में कोई अन्य ग्रह ग्रह हो तो वह सन्यासिनी नवम भाव में जो ग्रह बैठा हो उसकी प्रबुद्धा समझनी

स्त्री संबंधी पालादेश
गणितेयः शरीर → तपस्विनी, चन्द्र चक्रपाणिनी, वंगल प्रभव
नक्षत्रधारिणी, बुध → दण्डधारिणी, गुरु → शक्ति, शुक्र → चक्र-
धारिणी, शनि → नगना।

अथ यदि सप्तम भाव पापग्रह युक्त अथवा पापग्रह दृष्ट हो
तथा नवम भाव शुभ ग्रह युक्त या दृष्ट हो तो ऐसी स्त्री प्रवासिनी,
संन्यासिनी होती है। [स्त्री जातक विज्ञान]

१४) ब्रह्मवादिनी योग
अथ यदि स्त्री की कुण्डली में, लग्न में समराशि हो तथा मंगल-
बुध एवं शुक्र बलवान हो, वह पृथ्वी पर विख्यात, अनेक शास्त्रों
की जानकार तथा ब्रह्मविद्या में प्रवीण, ब्रह्मवादिनी होती है।

अथ यदि सम राशि में लग्न हो तथा शुक्र, बुध, चन्द्र तथा गुरु
बलवान होकर उसमें बैठे हों, तो ऐसी स्त्री वेद-वेदान्त के
विचार तथा आगम शास्त्रों के अर्थ को जानने में निपुण
ब्रह्मवादिनी होती है। [स्त्री जातक विज्ञान]

१५) तपस्विनी योग
अथ यदि सप्तम भाव में पापग्रह तथा नवम भाव में शुभग्रह
हों तो ऐसी स्त्री तपस्विनी होती है। [स्त्री जातक विज्ञान]

१६) मृत्यु संबंधी योग
अथ यदि मेष अथवा वृश्चिक राशि में चन्द्र की पापग्रहों ने कीच
हो तो ऐसी स्त्री की मृत्यु शस्त्र या अग्नि द्वारा होती है।

अथ यदि कर्क में शनि तथा मकर में चन्द्र हो तो ऐसी स्त्री की मृत्यु
जलोदर रोग से होती है।

स्त्री संबंधी पापविशेष

- 3) यदि जन्मकाल में दशम भाव में सूर्य तथा चतुर्थ भाव में मंगल हो तो ऐसी स्त्री की मृत्यु पर्वत से गिरकर।
- 4) यदि द्वितीय भाव में मंगल, सप्तम भाव में चंद्र, चतुर्थ भाव में शनि हो तो ऐसी स्त्री की मृत्यु कुएं या तालाब में गिरकर।
- 5) यदि जन्मकाल में सूर्य और चंद्र कन्याराशि में पापग्रहों से दृष्ट हो तो ऐसी स्त्री की मृत्यु बंधना से होती है।
- 6) यदि जन्मकाल में सूर्य तथा चंद्र धनु, मीन या मीथुन लग्न में हो तो ऐसी स्त्री की मृत्यु पानी में डूबकर।
- 7) यदि लग्न से आठवें स्थान में पापग्रह, द्वितीय में शुभग्रह हो तो उपर्युक्त योग।
- 8) अष्टमेश जिस ग्रह के नवमांश हो उस ग्रह की दशा-अन्तदशा में मृत्यु।
- 9) यदि लग्न में शुभग्रह हो, द्वितीय तथा द्वादश भाव में भी शुभग्रह हो तो ऐसी स्त्री की मृत्यु पति से पहले।
- 10) स्त्री की राशि से पति की राशि विषम हो तो पहले स्त्री की, सम हो तो पहले पति की मृत्यु। [स्त्रीजातक विज्ञानी]

विविध योग

- 1) स्त्री की गोचर से उपचय स्थान में बलवान चंद्र एवं मंगल स्वप्नांश अथवा स्वराशि आने पर, उस मास व उस दिन में गर्भ स्थिति संभव है।

स्त्री संबंधी पालादेश
१६५
२ यदि कन्या का जन्म तिथि की अंतिम घड़ी में हुआ हो तो वह
रुपहीन, वार की अंतिम घड़ी में हो तो वह बाल्यावस्था
में पुरुष का आश्रय लेती है। जिसका जन्म मत्त की अंतिम
घड़ी में हुआ हो तो वह विधवा। जिसका जन्म भुद्रा कवण
में हुआ हो तो पति-पत्नी दोनों को कष्ट। [स्त्री जातक विज्ञान]